दोहा ॥

गिरधरगणेश का भजन पढ़, सजन स्वतन्तर होय ॥
अर्थ धर्म और काम मोच, चारोंई मिलतो तोय ॥ १ ॥

अनुक्रमणिका

ओश्म् सच्चिदानन्द ॥

महाराज श्री गिरधरगनेशजी संत ओश्म उपासी हुए मारवाड़ शहर जोधपुर जिन्हों की अनुभववाणी १०००० दशहजार का ग्रन्थ जिस में शाखा पांच । सगुणस्कन्ध १ निरगुणस्कन्ध ४ तिस ग्रन्थ का नाम "गिरधरगणेशभवन" । जिस में ५ नग की एक पैरी च-ढ़ने की भवन में होती है ॥

सरगुणस्कन्धमें	निर्गुणनिरफंद	शिक्षासागर	सिद्धान्तयोग	निर्वाणनिसरणी
१०००लावणी	१००० लावणी ब्रह्मज्ञान	२००० कुण्ड-लिये छन्द	२००० कुण्ड-लिये छन्द	२००० कुण्डलिये छन्द
१०००हरीजस	१०००हरीजस			
जुमले २०००	जुमले २०००	जुमले २०००	जुमले२०००	जुमले २०००

जुमले वाणी १०००० दस हजार महाराज की बनावट है जिस में से वाणी ४३० पैरी ८६ निकाल के इस ग्रन्थ को छपाया है । वाणी पांच नग की एक पैरी होती है इस ग्रन्थ में किसी तरह का पक्षपात निन्दा किसी धर्म की नहीं है कारण कि ओश्म से सर्वधर्म सिद्ध हुए हैं जिस से इस ग्रन्थ में चारों वेद षट् शास्त्र अष्टादश पुराण का भा-वार्थ है । और षट्दर्शन और भेखपंथ की एकता है क्योंकि सर्व-धर्मों को अद्वैतमत में पुष्ट किया है जिस से मनुष्यों के बहुत हित-कारी और मोक्ष को देनेवाला है । गानविद्या सगुण निर्गुण पढ़ने विचारने के बहुत उतम है, महाराज श्रीगिरधरगणेशजी का शिष्य महा-जन छगनलाल महेश्वरी पुंगलिया रईस शहर जोधपुर मारवाड़ ठिकाणा छगनबिलास । सर्व सज्जनों से प्रार्थना है कि इस ग्रन्थ में से पैरी ८६ नि-कालकर नग ४३० सगुण तथा निर्गुण छपाया है सो सगुण रागणि-

यों का भजन गीत और ख्यालों की धुनि रागणी की ले के हरिजस बना के छपाये है तिस में बुद्धि की भूल होय तो कृपा कर सुधार लें क्योंकि अभी के समय में मनुष्यों की बुद्धि ख्याल और गीतों पर बहुत लगती है इसलिये हरिजस उसी धुनि पै होने से भक्ति में बुद्धि प्रवृत्त होगी तब निर्गुण पद को वांचने से वैराग्य उत्पन्न होगा। वैराग्य होने से विषयादिकों की निवृत्ति होगी तब जिज्ञासा होने से ज्ञान की प्राप्ति होजायगी तो परमानन्द को प्राप्त होजायगा यह ग्रन्थ का सिद्धान्त है, और तरजुमा

११० सगुणास्कन्ध नग एक सौ दस पैरो २२
१२० निर्गुण निसफंद पैरो २४
८० जिज्ञासागर पैरो १६
२० सिद्धान्तयोग पैरो ४
१०० निर्वाण निसरणो पैरो २०

इस ग्रन्थ में उपर लिखित विषय हैं और पीछे से अलग २ पांचों शास्त्र छपेगा जिस में एक २ शास्त्र में नग २१० पैरो ४० छपेगी।

जिस सज्जनपुरुष को इस पुस्तक के लेने की आवश्यकता होवे तो निम्नलिखित ठिकाणे से मंगा लेवें ॥

महाजन छगनलाल महेश्वरी
रईस शहर जोधपुर मारवाड़ ठिकाणा
गणेशनाथ तलाव के पहाड़ उपर कोठी
छगनविलास

ओश्म् सच्चिदानन्द

—o—

चौपाई

सतगुरु तो श्रीराम गुरु अजनेस्वर पाया ।
शिष्य लीन्हा उपदेश ओश्म् हृदय में ध्याया ॥
गिरधरगणेश शिष्य ग्रंथ बना अनुभव पद गाया ।
छगनलाल शिष्य समझ शास्त्र तुरत छपाया ॥

दोहा

गिरधरगणेश का भवन है ग्रन्थ ज्ञान कर जोय ।
शिष पैरी चढ़ पांचई तो तू सत चित आनन्द होय ॥

श्री गिरधरगणेशभवन ॥

नग ११० । सगुणखण्ड । पैरी २२

पैरो १ मङ्गलाचार नग ५ ॥

लावणी रंगत लंगरी ताल खैरुवो,
सखी धूंस

आओजी गनपतीगन्न महाराज दंगल में रखो भक्त की लाज ।,
गावता ख्याल तेरा मैं आज सुने सूरा कायर जा भाज ॥
सखो गिरधरगणेश गाई खुसी हुए मण्डलो के भाईगन तुई ।

पैरी १ लावणी लंगड़ी गणपति की नग १. ।

गवरोनंद गनपती सङ्कर की सती, तो सुत कुं बनादिया । मैल मसलके।
असल दे त्यार प्यार कर गोद लिया ॥ टेर ॥
गोरीशङ्कर एक समय रमै चौपड़ पासों का ख्याल किया ।
हार जीत का साखो गिरजानंदकूं बना दिया ॥
शंकर बाजी लिई जीत बिगाड़ो नीति गवर के हारे पिया ॥
पूछो पुत्र कूं कहत गनपती सती धन जीत लिया ॥
चक्र मारा शंकर तरशून फूल ज्यों कटा सीस उड़ गयाजिया ।
कहत गीरजा रुदन कर सती पती गन लाओ पिया ॥
शंकर लिया बन ढूंढ मिलो एक मूंड सूंड लाय लगादिया ॥ १ ॥ मैल
ममल के असल दे त्यार प्यार कर गोद लिया ॥ १ ॥
कहत गवरजा बात सुनों री नाथ जानवर बना दिया ।
मेरे पुतर को ढूंढ लाओ मूंड सूंड कर दूर पिया ॥

शंकर कहत सुणा सती यही तो गनपतो में सब से श्रेष्ठ किया ।
तीन लोक में करें पूजा दूजा बरदान दिया ॥
सूंड सुंडारा दूंद दुंदारा कामणगारा नाम लिया ।
मंगलमुखी की ध्यावना सुखी श्रेष्ठ शुभकाज किया ॥
जब किया गवरजा मोद खिलाया गोद गन्न मेरा चिरंजीया ॥ २ ॥ मैल० ॥

प्रचंड मूरत सोहनी सूरत चारभुजा हथियार लिया ।
फरसी माला ये लाला लड्डू फूल की छड़ी दूया ॥
दोय, दंत है दयावन्त, त्रीनेत्र सूंड खुल रया हिया ।
गूयर केसा ये भेसा फनीमाल सिंदूर घिया ॥
मोतियन गहना क्या छिब कहना क्रीट मुकट जड़े रतन भिया ।
जर कस जामा ये श्यामा मूसे पे असवार हुआ ।
रिद्धी सिद्धी संग में सोवे शंकर सुत की तेज घिया ॥ ३ ॥ मैल० ॥

खमा खमा गनराज सुधारो काज भगत घर जाय पिया ।
मंगलमुखी सुं होत सर्वसुखी सृष्ट संसार जिया ॥
गन का दरशन कर होय परसन ताव तेजरा उड़त सिया ।
दौलत देता हर लेता विघन विनायक दूर किया ॥
गिरधरगनेश, यों, भने गन्न का ख्याल कीयां खुल जाय हियो ।
नर षट् महिनों में पढ़ी कर प्यार यार वरदान दिया ॥
गन का परचा लिया काज सब किया मेरा खुल गया हिया ॥ ४ ॥ मै०
ल, मसल के, असल दे त्यार प्यार कर गोद लिया ॥

॥ सखी धूंस ॥

सारदा सायक है माता सभा में अनुभव पद गाता । कड़ी अचर

मंचय पाता सुनत सायर खुश होय जाता । सखी गिरधर गनेश कह-
ता ज्ञान मे सदा मगन रहता ॥ गन तूंही ॥

पैरी १ लावणी लंगडी रंगत ताल खैरवो नग २ ॥
॥ सोहं शक्ती की स्तुति ॥ २ ॥

सोहुं शक्ती सर्वरूप होय महा काली कल्याण करो हे दुर-
गा देवी भगत के कारण लछमी रूप धरो ॥ टेर ॥ भक्त बीनती करे
ध्यान तेरो धरे सदा उठ मम्माया । तू विश्वरूप है शक्त थावर ज
गम तेरी छाया ॥ ब्रह्मंड वेद पुराण पण्डत देवत दानू तेरा जस गाया ।
शिवसनकादिक पार ब्रह्मा विस्नु कोई नहीं पाया ॥ शेष सहंस मुख
थके ऋषी नारद मुनी चक्कर खाया । चंद सुरज ये हुये अवतार गये
धर धर काया ॥ सदा सर्वदा मात हुकम दिन रात शक्त तेरो हलप
नरो ॥ १ ॥ हे दुरगा देवी भगत के कारण लछमी रूप धरो ॥ १ ॥
देवत दानू इमृत ऊपर लरे मरे आपस भाया । तू शक्त मे.वनी बनाया
रूप देव अमृत पाया ॥ भस्म किया भस्मासुर शक्ति शिवजी देख भागा
आया । रूप भीलणी बनाया स्वांग शंकर को नचवाया ॥ सकटासुर
मंकासुर दानू मईका सुर मारे मम्माया । भगत भगवती करी है साय
सुक्ख सृष्टी पाया ॥ हुया जगत में थेक बनाया भेक भैरवी खुश
भरो ॥ २ ॥ हे दुरगा० ॥

सीता सांग धर लिया पिया दोय रामलछमण दल ले आया ।
दसकंधर का कटाया सीस शक्त दानव खाया ॥
कुनणापुर शिशुपाल जुरासिध रुकमैये मंगल गाया ।
वर कृष्ण रुकमणी रूप सुन्दर असुरन दल कटवाया ॥

कौरव पांडव हस्तनापुर द्रोपदी रूप धर के ध्याया ।
तू कर संग्रामा हे भैरवी भारत का भोजन पाया ॥
हुया पृथवी भार असुर दल मार भगत को काज करो ॥ ३ ॥ हे दुरगा० ॥
भगत भीर कूं मेट किया धन सेठ सुन्दरी शरण आया ।
होय महालच्छमी दिया बरदान भगत कूं मनचाया ॥
भानुक्रोट परकाश रूप अम्बा उद बुद कर दिखलाया ।
भगत भगवती पूज मानक मोती धन लुटवाया ॥
गिरधर गनेश यूं भनैं मेरी गोलक में लक्ष्मी हे भाया ।
खावैं न खरचैं उड़ावें द्रव नहीं खूटण पाया ॥
जपें भगवती जाप नहीं है नाप कवी कोई जाब करो ॥ ४ ॥ हे दुरगा देवी भगत के कारण लक्ष्मी रूप धरो ॥

सखी धूंस ॥

चलै तो हर कैलास के बासी । कृष्ण के दरसन के प्यासी ॥
नंद घर प्रगटे अवनासी । जाय शंकर होय सन्न्यासी ॥
सखी गिरधर गनेश गावे । सदा शिव गोकुल कूं ध्यावे ॥ गनतूई० ॥

पैरी १ लावणी लंगड़ी रंगत ताल खैरवो ॥ ३ नग

॥ शंकर की स्तुति ॥ ३ ॥

कृष्ण जन्म लिन्हा गोकुल में महादेव दरशन आया ।
डम डम डमरू बजावे चो नेतर सुन्दर काया ॥ टेर ॥
जटा मुकट बहै गंग पीवते भंग घोट दी ममगाया ।
आक धतूरा अरोगे अमल कमल नेतर छाया ॥

भस्म पस्म कूं लगा के लहरी लाल नेत्र कंचन काया ।
कानन मुद्रा टांक बिछुवन कूं सर्प गललपटाया ॥
हर बागम्बर धार लंगोटा मार देव दरशन चाया ।
सेलीन सिंगी पुराया संख वेद चारू गाया ॥
अलख खलक कर चले महादेव वृज भूमी गोकुल ध्यायाा ॥ १ ॥
टेर ॥ डम डम डमरू बजावे त्री नेतर सुन्दर काया ॥ १ ॥
संकर लहर कर दिवी महर आय बृज भूमी भोजन पाया ।
यों कहत सदाशिव कैमो माई लड़का किस के जाया ॥
सखी जोड़िया हाथ सुनोरी नाथ नंद घर बतलाया ।
जाय खड़ा द्वार पे जगाया अलख सुणी जसवत माया ॥
जारी सखी भर थाल हीरा और लाल द्वार जोगी आया ।
कंवर भंवर की बधाई बेंच देओ दौलत माया ॥
ले जोगी भोली देऊं पूर दालीद्र दूर मेरे द्वारे आया ॥ २ ॥ डमडम ॥-
हीरा मोती लाल और कूं डाल मेरे मन नहिं भाया ।
पारस पन्ना रतन मानक शिव भोली में दिखलाया ॥
नन्द चन्द के दरशन खातर बनकूं त्याग बस्ती आया ।
सखी कहत जसोदा मेरा बालक कोमल काची काया ॥
काला पीला सरूप तेरे नेत्रो में मैली माया ।
तूं सुण जोगेश्वर लेवो भिक्षाबालक से क्या दाया ॥
कहत महेश्वर बात सुनोरी मात मोहन मेरे मन भाया । ३ ॥ डमडम॥
ये बालक नहीं डरे जोगेश्वर अड़े सुणो जसवत माया ।
तीन लोक का निरञ्जन नाथ मात जसवत जाया ॥
तब समझ जसोदा चली बात है भली कृष्ण कूं ले आया ॥

पदम कदम में क्रीट और मुकट लुगटसून्दर काया ॥ शंकर दरशनकर होय परसन श्याम देख इचरज लाया ॥ हरीग्वालन घरकूं परगटे आप शंकर पड़ते पाया ॥ गिरधर गनेश यों कहै नन्द घर रहै शंकर वन कूं धाया ॥ ४ ॥ डमडम डमरू बजावे त्री नेतर सून्दर काया ॥ ४ ॥

सखी धूंस

हरी जी बैकुंठ के बासी। ध्यान सूं मिट जाय जम फासी ॥
चरण चापें लछमी दासी । भगत की मेटै तन त्रासी ॥
सखी गिरधर गनेश जोरी । हरी जी मदत करो मोरी ॥ गन तूंही ॥

१ लावणी लंगडी रंगत ताल खैरवो ॥ ४ नग ॥

विश्नुजी की स्तुति ॥

बैकुंठवासी हरि अवीनासी लछमी पति बिश्नू जी हरी । भगतन तारण मारण असुर काज काया जो धरी ॥ टेर ॥ श्याम अंग है रंग रोशनी सूरत श्यामी आप घड़ी । नखचख नैना बैना मधुर मधुर मुख धुनि करी ॥ देख बदन की दमक चमकती हिचकी में हीर कणी जड़ी । क्रीट मुकट में है मानक रतन जरत लाले हैं खरी ॥ गल बैजंतीहार भुजा है चार हाथ पुनकी जो अरी । भुज बन्द बांधे कांधे पाट पितम्बर फूलछड़ी ॥ झांझर झनको पगको रणको देख शरम गई इन्द्रपरी ॥१॥ भगतन तारण मारण असुर काज काया जो धरी ॥ १ ॥ देख श्याम की छटा इन्द्र ज्यों घटा चमकती चसम हरी । संख चक्र ये पकरिये पदम हाथ में गदा धरी ॥ ये विश्नू का भेष छत्र करे शेषनाग फुणछयां करी । लछमी सेवे मोवे मनमाडू की दासी खरी । लछमी चांपे पांव ढोलतो वाव वदन को मूटो भरी । सबी देवता सेवता विश्नू जी ने घड़ी घड़ी ॥ गरुड़ चढ़े महाराज सुधारे काज देव अस्तूत करी ॥ २ ॥ भगतन तारण ॥ हिरणाकुस कूं

मार तार पहलाद भक्त घर गया हरी। रावण मारे सारे काज फौज असुरन की मरी ॥ कृष्ण मारियो कंस गमायो बंस दुष्ट की तोड़ नड़ी। धर अवतारा मारा असुरन की काया जो चरी॥ हुया कुलंकी दुष्ट मारी कर मुष्ट देह निकलंक धरी। भौर भगत की जगत की करो साय विश्नू जो हरी। ऐसे हैं रिछपाल कया है हाल भगत है मोती लरी ॥ ३ ॥ भगतन॥ धिन धिन मादू देव करू मैं सेव सकल की जान पड़ो। सुनो महाराजा ये काजा करो मेरी सरकाओ अड़ो ॥ सुनिये मादू तू है आदू तेरे बिना नहीं सजे घड़ी। प्रेम नेम का फुवारा चले चसम जल आंख भरी ॥ गिरधरगनेश यों भने भगत का किया काज सुन उसी घड़ी। दीन्हा दरशन परसन हुया भगत की भीड़ टरी॥ ये गाओगे ख्याल होवोगे न्याल निगे दे कड़ी कड़ी ॥४॥ भगतन तारण मारण असुर काज काया जो धरी ॥ ४ ॥

सखी धूंस

रची ब्रह्मा सृष्टी भारी। खंड ब्रह्मण्ड भये गुलजारी॥ देव दानू भये संसारी। फंसे माया में इकतारी ॥ सखी गिरधर गनेश बोले देव है अंतस के ओले ॥ गन तूं ही ॥

१ लावणी लंगडी रंगत ताल खैरवो ५ नग ॥
॥ ब्रह्माजी की स्तुति ॥

ब्रह्मा ब्रह्म का नूर रचे जग कूर वेद बांचे देवा। ज्ञान ध्यान कूं सुणावे सकल सृष्ट करती सेवा ॥ टेर ॥ चतुरमुखी है सुखी सुरत मुख बोल रही अमृत वाणी। गोरे गात में हाथ है चार वेद अंतस छाणी। डन्ड कमन्डल दोय जोयले वेद सुमरणी कर ताणी। भस्म सोहनी मोहनी गले जनेउ निसाणी। हंस चढ़े असवार जात बे पार संग रहती राणी॥ सांवर्त्रां जो सुनत है ग्यान ध्यान अंतस छाणी। चन्दण चक्र सिर भाल

कथा है हाल समझ ब्रह्मा सेवा ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यान कूं सुणावे सकल सृष्ट करती सेवा ॥ १ ॥ ब्रह्मा जगत् का भान रचो है ज्ञान जीव जन्मे प्राणी । सुरग मिरत दोय जोय लै पयाल में सृष्टि ठाणी ॥ सात द्वीप नो खण्ड ब्रह्मण्ड में माया अविद्या कूं ताणी । छोटा मोटा जीवन कूं रचे आप भये रस्साणी ॥ अमृतसार और अन्न अहार कहीं मानस खाय पीते पाणी । चारों खानी ये आनी चली काल कीन्हा डाणी ॥ जीव करत है पाप भुगत ते ताप पुन्न पावे मेवा ॥ २ ॥ ज्ञान ध्यान कूं ॥ ब्रह्म-लोक में राज सभी का ताज गुरू ब्रह्मा जाणी । कीना दरशन परसन हुया लाभ मिटती हाणी ॥ शेष महेसा नारद सारद सिनकादिक विश्नू थाणी । ज्ञान ध्यान कूं चलावे चारों वेद पढ़ते प्राणी ॥ किरिया करम करे ज्ञान धरम हुए भ्रम बैल जुतिया घाणी । अर्ध उर्ध में भटक-ते जीव सीव नहीं पहचाणी ॥ ये ब्रह्मा का ख्याल कथा है हाल समझ ऊंडा भेवा ॥ ३ ॥ ज्ञान ध्यान कूं ॥ ऐसे सृष्टि करै मरै सब जन्त जीव देवत डाणी । श्री ब्रह्मा जी सृष्ट का मूल फूल भूतक प्राणी ॥ चार वेद का भेद समझलीया सो तो पार हुए पढ़ वाणी । ज्ञान ध्यान बिन रया सो डूब गये काले पाणी ॥ गिरधरगणेश यों भणै श्रीब्रह्माजी जुगत मुगती छाणी । पढ़ो वेद कूं समझ लो भेद भंवर निकसो प्राणी ॥ धिनधिन ब्रह्मा देव कहूं मैं सेव बताया निजभेवा ॥ ४ ॥ ज्ञान ध्यानकूं सुणावे सकल सृष्ट करती सेवा ॥ ४ ॥

पैरी २ कृष्णलीला ६ नग ॥

विरहलीला लावणी लंगड़ी ताल खैरुवा ॥

पीव गया परदेश सखीरी किणसंग खेलूं कर बतियां । बैरण र-तियां उदोजी मादोनै लिख दो पतियां ॥ टेर ॥ बिरह मचायो जोर शोर

सुनिये जादूपति या मेरी । मैं तो जन्म की चेरी । जवानी छाय रही पग में बेरी ॥ अन्न न भावे नींद न आवे नैना सुरत बस रही तेरी । मैं ने घर घर हेरी । फिरूं वृन्दाबन में देती फेरी ॥ सखियां आवें बात सुनावें कृष्णनाम बह गई गतियां ॥ १ ॥ बैरण रतियां उधोजी माधो नै लिख दो पतियां ॥ १ ॥ बिछ रही सेज मेज के ऊपर पिया विना लगती खारी । मारी भई लाचारी । त्याग दिया बाग बगीचा फुलवारी ॥ रूप का कुरूप बनाया भवर बात कूं नहीं धारी । वा बैरण ह्यारी है कुबजा पूरब जन्म की छिंदगारी ॥ कुबजा सोक लग रहीं आंख नहीं पूगे मत लिखना पतियां ॥ २ ॥ बैरण रतियां ॥ कृष्ण लाज तज दिवी आज वा कंसराय की है चेरी । उदार जो मेरी । इसी क्या लाज शरम धरती गेरी ॥ गोपी ग्वाल सव बाल पुकारे प्रीतम मत कर ना देरी । देखो दया जो मेरी । देतो मैया मुसका बृज तेरी ॥ इन्द्र घटा घन घोर बोलते मोर मेरी दरकत छतियां ॥ ३ ॥ बैरण रतियां ॥ देव सेत्र सब सखियां कर के कृष्ण बांट जोवे थारी । सब बात बिचारी। क्या तो सखि करें मरें विरह की मारी ॥ तजो देश कर भगवा भेस सखि कानन में मुद्रा धारी । सब बृज की नारी । त्याग दियो भोग जोग कीन्हों त्यारी ॥ गिरधर गणेश यों भणे कृष्ण आवे गा राधे सुण वतियां ॥ ४ ॥ बैरण रतियां उदोजी मादो ने लिख दो पतियां ॥ ४ ॥

पैरी २ । जोगलीला लावणी लंगड़ी रंगत ताल खैरुवा ॥ ७ नग ॥

राधे वैरागन भई विरह कर कानन में मुद्रा धारण । फक्त देखलो फिरे वा अलक हलक मोहन कारण ॥ टेर ॥ गोरे अंग पै भस्म रमाकर किया जोग राधे प्यारी । खान पान कूं त्याग सब अतन वतन सूं भई न्यारी ॥ सोलेहो सिंगार तजे और लाज शरम शोभा सारी । सखियन

न्यारी । बजावे बीन मोहन मिलजा आरी।। सजे साज सिंगार जोग ले हाथन से सरवण फारण ।। १ ।। फक्त देख लो फिरे वा अलक हलक मोहन कारण ।। १ ।। गल बिच खपनी पैर के अपनी कड़ा कमंडल ले सजरी । सेली सिंगी पुराया संख नाद मोहन भजरी ।। कठिन खड़ाऊं पैर पैर में खुले बाल नागर नटरी ।। तन मृगछाला सखीने ओढ़ लिया है झट पट री । डन्ड हाथ और खुले गात लिये सत लंगोटा है मार ण ।। २।। फक्त देखलो ।। ऐसा रूप सरूप राधका खिली रैण में उजियारी । मानो चन्द चकोरा वैसाही लगा नेह मोहन प्यारी ।। कुबजा कामण करकें हारा मोह लिया गिरवर धारी । सखी सहेल्यां किया बैराग रूप अति ही भारी ।। राधे रट रही कृष्ण कृष्ण लिये खान पान का पण धारण ।। ३ ।। फक्त ।। बन भवन में फिरै राधका गावे राग रागन खटरी। छाती फटरी । सखी सब खडी साथ जमना तटरी ।। गिरधर गनेश यों भयो कृष्ण मिलगये आज राधे झटरी। पट घूंघटरी । त्याग सब जोग भोग सजियो सटरी ।। घरघर मंगला चार नार सजिये सिंगार सुरमा सारण ।। ४ ।।- फक्त देखलो फिरै वा अलक हलक मोहन कारण ।। ४ ।।

२ रासलीला लावणी लंगडी रंगत ताल खैरुवा ८ नग ।।

ग्वाल बाल मिल ख्याल खेल कीन्हा जो रास जमुना तटरी । नागर नटरी। चुराई बृखसुता वंसी बटरी ।। टेर ।। सरदपूंनम की रैन बजावे बैन कृष्ण सजीये झटरी । मोर मुकुटरी । जड़ाऊ कुण्डल पीताम्बर पटरी ।। हीरालाल गल गुंज माल बहियां बाजू लूवां लटरी । कर वंसीवटरी । बनाहै त्रिभंगरूप एक नटखटरी ।। अधर भेष और खुला केस गुणी गाय रहे बुध घटघटरी ।। १ ।। नागर नटरी। चुराई

वृखसुता बंसोबटरी ॥ १ ॥ खट दस संहस सज रहीं लैस सखी आय खड़ी जमुना तटरी । पट घूंघटरी । चमकती इन्द्र घटा मांय अटपटरी ॥ शशी तेज छिप गया सहज वहां खुले चन्द्र राधे रटरी । नागर नटरी खेलते रास मण्डल जमुना घटरी । सुर असुर बस रहे गगन में चन्दा मास रजनी खटरी ॥ २ ॥ नागर ॥ सखियां सैनों मोहन बैनो चुरालिया वंसी नटरी । कर कूर कपटरी । किया छल बल तो सखी अपने घटरी ॥ कान मान यों कहे सखी मेरी दे बसुरी ॥ मत कर हटरी । क्या जोवन छटरी ॥ राधका दिखादे अंगिया का पटरी । सखो कहे मोहन से बजती मुरली जंगल कटरी ॥ ३ ॥ नागर नटरी ॥ कय रया तन सुख सुनरे मनसुख खोय दिया बंसी चटरी । बतादेऊंगा मठरी । कृष्ण जी पैयां परे सखियां ठठरी ॥ या बसुरी पस गई पसुरी मोरी दो बसुरी सखियन भटरी । वृखसुता सू भिटरी । कृष्ण कूं दी बसुरी राधे रटरी ॥ गिरधरगनेस यों कहे मगन वोह रहे कृष्ण सखियां छटरी ॥ ४ ॥ नागरनटरी चुराई वृखसुता बन्सीबटरी ॥ ४ ॥

पैरी २ चीर लीला लावणी लंगडी रंगत ताल खैरवो १ नग ॥

जमना जू की तीर हुई सखियन की भीर ।

मोहन ले गये लंहगा चीर ॥ खड़ी जल में अर्ज करी जी । हरी जी। छिपा पेड़ पानन फल में ॥ टेर ॥ ग्वालन गोरे गात किया सखियन का साथ । तुलसी चन्नण माला हाथ ॥ परब न्हारी । जमुना बहरी। दिया है दान मान हरिजसगारी ॥ जमुनाजू के घाट । हुया सखियन का ठाट । मोहन आये उलटी बाट ॥ कदम बन में ॥ १ ॥ अर्ज करीजी हरीजी छिपा पेड़ पाननफलमें॥ १॥ सखी न्हावे जमना नीर ॥ मोहन ले गये लंहगा चीर । भई दिलगीर आहा करत हैं । परत हैं । पाय नाय

सुनियो बलबीर में तो जलमें नागी सारी । मोरा देखो चोर मुरारी मैतो मरां शरम की मारी ॥ शीत तन में ॥ २ ॥ अर्ज करी जी ॥ २ ॥ तब बोले गीरधारी सुण सखियां आओ सारी । जल से न्यारी । आय करो हे बीनती दीनतोरी देंगा नटवारी । सखी जोडे दोय हाथ । खुल रहे गोरे गात । तू है त्रीलोकी का नाथ । दया ना मन में ॥ ३ ॥ अर्ज करी जी ॥ सखी अपने घर को जा री । लहंगा पैरी ओढ़ी सारी । हरख भारी । ग्वाल बाल मिल कृष्ण जी मोह लीवी बृज की नारी ॥ गिरधर गनेश यों गावे । कृष्ण आवे । सखो न्हावे । जमुना जल में ॥४॥ अर्ज करी जी । हरी जी छिपा पेड़ पानन फलमें ॥ ४ ॥

पैरी २ पणियारी लीला लावणी रंगत खड़ी ताल खैरवो ॥ १० नग ॥

राधे जू बनी पणियारन भारी । चली सब संग में बृजनारी ॥ टेर ॥ सजे सिंणगार नार झटके । के जुल्फां नागण सी लटके ॥ खुले मुख चंद्र बदन छिटके । पहर कंकण बाजू सटके ॥ दोहा । करण फूल नथ बेसर सोहै दुलरी गल बिच अटके । तिलड़ी तिमणियां पहर सखी काजल की रेख घूंघट के ॥ बनी वो सुंदर मतवारी ॥ १ ॥ चली सब संग में बृजनारी ॥ १ ॥ के लंहगा चूंदर जरकसकी । के कांचू अंगिया अतलस की ॥ छला और छाप मोतियन की । बनी वो सुन्दरसखियन की ॥

दोहा । पायेल बिछिया नेहनेवरी कड़ी साट पगकी । सुवरन कलस लियो बृजसुन्दर धरी सीस मटकी । सखिरी सब जल भरने जारी ॥ २ ॥ चली सब ॥ २ ॥ सखी ने ग्वाल बाल अटका । कय धुन सुन भगे नागर नट का ॥ बोलता मोहन सखियन का । दाण मोहि देणा ये घूंघट

का ॥ दोहा । इतना सुन के कहत गवालन कौन ग्वाल घर का । जाय पुकारूं कंसराज कूं भूलजाय लटका । कहैं सखियां समझाय सारी ॥ ३ ॥ चली ॥ कहा डर बतला रही हमकूं । मार लेऊं छिनभर कंसन कूं ॥ जाओ तुम कंसराज घर कूं । डाण मोहि लेणा है जोबन कूं ॥ दोहा ॥ गऊघाट जल भरने आओ हम कह रहे तुम कूं । लपट झपट के चोली फाड़ो जरकश साड़ी कूं । मोहन ने मोहनी वहां डारी ॥ ४ ॥ चली ॥ ४ ॥ सखी सब कहै अजी सुण कान्ह आये तब देवें डाण माखन । बीयातौं करे सखी सईकन । छोड़ घर जाणा दे मुकन ॥ गिरधरगणेश सखी डाण चुकायो छोड़ लाज संकन । कर पर मुरलीधर नन्दलाले बजा रह्यो फनकन । बणी सब मोहन की प्यारी ॥ ५ ॥ चली सब सङ्ग में बृजनारी ॥

रसिकपचीसी बारहमासी तथा ख्याल
तथा गालियां की रङ्गत

३ पैरी बारहमासी की राग झञ्झोटी
ताल खैरवो ११ नग ॥

ख्याल आगलीटेर।पनजी मूंडे बोल नैना में धारोरा छूटे रे ॥ टेर॥
१ ॥ बारहमासी राधकाजू की ॥

वेग पधारो श्यामसुन्दर गोकल का बासी रे । राधादासीरे ॥ टेर ॥

चैत मास चिंता आई व्यापी विरहन पासी रे । राधादासी रे । पीव गया परदेश सखी कर रही सब हांसी रे ॥ १ ॥ राधादासी रे । वैशाख विलखी फिरूं रे पूछती पंडित कासी रे । राधादासी रे । रोज उड़ाऊं काग कंत बिन जिवरो जासी रे ॥ २ ॥ राधा दासी रे ॥

जेठ जवानी छाई रे बदन आओ अबिनासी रे । राधा दासी रे । दारम पक रही दाख टिपक रस बिरथाही जासीरे ॥ ३ ॥ राधादासी रे ॥ ३ ॥ असाड़ महीने इन्द्र घटा चढ़ चढ़ कै आसीरे । राधा दासी रे । बिरह बिजली को जोर गगन गरजत दुख पासी रे ॥ ४ ॥ राधा दासी रे ॥ ४ ॥ सावण सूनीसेज सजन बिन क्योंकर थासीरे । राधादासीरे । मीन तड़फ रहा नीर बिना निकसैला सासीरे ॥ राधादासीरे ॥ भादूं भोग बिन जोग ठीक होइ जाऊं संन्यासीरे । राधा दासी रे । कुबजा बैरण भई रे जाय लेऊं करवत कासी रे ॥ ६ ॥ राधा दासी रे ॥ आसोज परती धूप रूप निरखो वृजबासी रे ॥ रा० दा० ॥ चुए पसीना बदन मोतियानीर निकासी रे ॥ ७ ॥ रा० दा० ॥ ७ ॥ कातिक करी रे सिनान सरद होय रही दिल खासी रे । रा० दा० । पीली पड़ गई पान प्रीया की म्हारे चल रही धांसी रे ॥ ८ ॥ रा० दा० ॥ ८ ॥ मिगसर पड़ रही सरद सजन बिन पाऊं मैं त्रासी रे ॥ रा० दा० ॥ एक अखंड धुन भजूं कृष्ण सूरत दिखलासी रे ॥ ९ ॥ राधा दासी रे । पोस पिया सुन अरज मिले वृन्दाबन बासी रे ॥ रा० दा० ॥ सज सिणगार सब सखियों रे ओडण चीर हबासी रे ॥ १० ॥ राधा० दा० ॥ १० ॥ माह महीने दौलत प्यारी देत छवासी रे ॥ रा० दा० ॥ भैरव पण्डित पूज वृज गोविन्द गुण गासी रे ॥ ११ ॥ राधा दासीरे ॥ ११ ॥ फागण खेलत फाग कृष्ण राधा सुख रासी रे ॥ राधा दासी रे ॥ गिरधर गनेश यों भयो कृष्ण की बारामासी रे ॥ १२ ॥ राधा दासी रे ॥ १२ ॥

बारहमासी राग झंझोटी ताल खैरवो ॥
रंगत पनजीरै ख्यालरी ॥ नग १२ ॥
२ ॥ बारहमासी राधिका जी की ॥

अरी कुब्जा कामन किया कृष्ण पर जादू डारो रे ॥मोहन प्यारो रे ॥ टेर॥
चैत मास सुण चतुर नार सज रही सिणगारो रे ॥ मोहन प्यारो रे ।
वैनी बोर पटी पै कोर मुख चन्द्र उजारो रे॥ १ ॥ मोहन प्यारो रे ॥१॥
वैसाख मास बस भई बिरह में नहीं कछु सारो रे ॥ मोहन प्या० ॥
तज खान पान ये प्राण पिया चित चितवन धारोरे ॥ २ ॥ मोहन प्या०
॥ २ ॥ जेठ मास नहीं सांस सजन मेरो कारज सारोरे ॥ मोहन प्या०॥
ये सुण सुण बतियां । फाटत छतियां। क्यों पतियां फारो रे ॥ ३ ॥
मोहन प्या० ॥ ३ ॥ असाढ़ मास बरसत तरसत ज्यों चन्द चकोरो रे ।
मोहन मेरो रे । दादुर मोर पपैया शोर बरसत घनघोरो रे ॥ ४ ॥ मो-
हन मेरो रे ॥४॥ सावण बण आई सुरंग सहेली राधा सज सिणगारो रे॥
मोहन प्या० ॥ तन बृखभान यों जान पिया बिन झूलो खारो रे
॥ ५ ॥ मोहन प्या० ॥ ५ ॥ भादूं मास बरसत घन मेवला कीचड़
गारो रे ॥ मोहन प्या० ॥ सेज कामणी चमके दामणी दया विचारो
रे ॥ ६ ॥ मोहन प्या० ॥ आसोज आस पास प्रीतम कै है लाचारो रे ॥
मोहन प्या० ॥ जोबन कीन्हों जोर सोर खुल रह्यो गुलजारो रे ॥ ७ ॥
मोहन प्या० ॥ ७ ॥ कातो पाती बांच स्याम तज देऊं सिणगारो
रे ॥ मोहन प्या० ॥ खुले केस कर भगुवा भेस सखि सर वण फारो रे
॥ ८ ॥ मोहन प्या० ॥ ८ ॥ मिगसर मान कान करुणा सुन सिर मुकट
धारो रे ॥ मोहन प्या० ॥ मनमोहन मिल गयो विरज गलबैयां
डारो रे ॥ ९ ॥ मोहन प्या० ॥ ९ ॥ पोस पिया प्यारी यों बोले ओले

अंतस ह्यारो रे ॥ मोहन प्या० ॥ त्रिभंग नाथ सुण बात घात ऐसी मत डारो रे ॥१०॥ मोहन प्या० ॥ १० ॥ बसन्त बाग फाग खेलत सङ्ग कामण गारो रे ॥ मोहन प्या० ॥ फेंट गुलाल अबीर अरगचा सनमुख डारो रे ॥ ११ ॥ मोहन प्या० ॥ ११॥ फागण फाग रमलिया कृष्ण नख गिरवर धारो रे ॥ मोहन प्या० ॥ गिरधरगनेश यों भणे कृष्ण मोरा कारज सारो रे ॥ १२ ॥ मोहन प्या० ॥ १२ ॥

३ बारह मासी होरी राग काफी ताल होरी । गत दीपचंदी । १३

॥ ३ ॥ होरी की बारामासी ॥

सांवरो जी ने लिख लिख हारी। मिलै मोहि कुंज बिहारी ॥ सांवरो जी ने ॥ टेर ॥ चैतमास चिन्ता उर तन में करत राधकाप्यारी। जैसे मीन नीर बिन तड़फत ऐसे पिया बिन प्यारी। बिरह मांई भई लाचारी ॥१॥ सांवरो जी ने लिख लिख हारी ॥ १ ॥ बैसाख मास सब सखियां मिल के पीपल पूजन जारी॥ पीपल पूज मांगत गिरधारी। याही तो बीनती म्हारी ॥ सखी सब मंगल गारी ॥ २ ॥ सांवरो जी ॥ २ ॥ जेठ मास सखी ज्वाला पड़त है सूरज तप रह्यो भारी। ग्रीखम ऋतु पिया बिन खारी। मैं छांट छांट जल हारी ॥ सूख गई तन फुलवारी ॥ ३ ॥ सांवरो जी ॥ ३ ॥ असाड मास बरसत घन मेवला खुले बाग फुलवारी ॥ चम्पा फूल गुलाब केतकी तरह तरह की त्यारी ॥ सूगन्धी लेओनी मुरारी ॥ ४ ॥ सांवरो जी ने ॥ ४ ॥ सांवणमें मन भावन लागी झूलन सङ्ग बिहारी। सखी झुण्ड वृखसुत पै आरी सजी ये बैन सिनगारी ॥ राधे मुरछा गत खारी ॥ ५ ॥ सांवरो जी ने ॥ ५ ॥ भादव रैन अंधेरी चमकती कोयल चपला सोरी। दादुर मोर पपैया कोरी । ये छतियन दरकत मोरी ॥

नदी जल बिरह बहे भोरी ॥ ६ ॥ सांवरो जी ॥ ६ ॥ आसोज आस पिया के मिलन की खान पाननहीं खारी। झुर झुर पिंजर भई है पियारी कुवजा सोक हमारी ॥ पूरबले लेख लिखारी ॥ ७ ॥ सांवरो जी ॥ ७ ॥ काती करम भरम बिरह घेरी सेलो सिङ्गी धारी। बन खण्ड ढूंढ पूछ वृज सारी। कोई देखे हो कृष्ण मुरारी ॥ भवन घर अलख जगारी ॥ ८ ॥ सांवरो जी ॥ ८ ॥ मिगसर मान कान के कारण जमुना जल में न्हारी। दान आन सखि हरी जस गारी। घर घर मङ्गलाचारी ॥ सखी सब ग्वाल विचारी ॥ ९ ॥ सांवरो जी ने ॥ ९ ॥ पोस पिया मिल गये बिरज में मोर मुकट सिर धारी। राधे लपट मिल गई गिरधारी। वहां और बैकुंठ दिये वारी ॥ छवि वो कहीयन जारी ॥ १० ॥ सांवरो जी ॥ १० ॥ माह महीने बसन्त पंचमी घर घर केसर घोरी ॥ खेलत फाग बृजबन की नारी। भर मारी पिचकारी। फटी कुचुवन की कीनारी ॥ ११ ॥ सांवरो जी ॥ ११ ॥ फागुण में फुल वारी में बैठे जरकस जामा सारी। गिरधरगनेश कहे कर जोरी। खेले कृष्णजी होरी। सङ्ग राधे वो गोरी ॥ १२ ॥ सांवरो जी ने ॥ १२ ॥

३ ॥ टेर फागुण की चंपकली बकसो दिन च्यार। आसक मांगे चीज उधार ॥

४ बारह मासी फाग री राग झंझोटी ताल खैरवो ॥

कृष्ण फाग खेलो वृजराज मोर मुकुट धरलो सब साज ॥ टेर ॥ चैत चमेली ने खुली है रमेली। श्याम समेलीरा सारो पिया काज ॥ १ ॥ कृष्ण फाग खेलो वृजराज ॥ १ ॥ वैसाख वासो डारी प्रेम की पासी आवत हासी सखी मोय लाज ॥ २ ॥ कृष्ण फाग ॥ २ ॥ जेठ जवानी अधे लू भवानो सेज सुवोनी पिया महलां में आज ॥ ३ ॥ कृष्ण ॥ असाढ़

बरसै न सुंदर तरसे जोरे इर सें जावे हुरमत माज ॥ ४ ॥ कृष्ण फाग ॥ सावण सखियां लग रही अंखियां जोबन छकियां गगन रया गाज ॥ ५ ॥ कृष्ण फाग ॥ ५ ॥ भाद्व भारी बहै नदियां सारी पिया बिन प्यारी रे भयोछै अकाज ॥ ६ ॥ कृष्ण फाग ॥ ६ ॥ आसोज आस धरत नहीं न्यास लेवत नहीं सास सजन मोहताज ॥ ७ ॥ कृष्ण फाग ॥ ७ ॥ काती में पतियां सुण सुण बतियां बह गई गतियां छाया मुख दाज ॥ ८ ॥ कृष्ण० ॥ ८ ॥ मिगसर श्याम मिले सुख धाम किया सब काम कंत सखी आज ॥ ९ ॥ कृष्ण फाग ॥ ९ ॥ पोस में प्यारी कर सब त्यारी ओढणसारी खेलै सतरंजबाज ॥ १० ॥ कृष्ण फाग० ॥ १० ॥ बसंत वसियो राधे को रसियो मुकट कसियो रमै रस राज ॥ ११ ॥ कृष्ण ॥ ११ ॥ गिरधर गनेश गाया फागुण देश है वो निरगुण शेष धुनि जो वे मांय साज ॥ १२ ॥ कृष्ण फाग खेलो बृजराज ॥ १२ ॥ ३ ॥ टेर आगली ॥ चंपकलीरी ॥ १५ ॥

५ ॥ बारह चौक हरी जस राग भंभोटी ताल खैरवो ॥

सज रही राधे सिणगार । चंद्र बदन खुल रह्यो गुलजार ॥ टेर ॥ सज रही भेस गूथ लिया केस छिटक पड़ा शेस सीस की लार ॥ १ ॥ चंद्र बदन खुल ॥ लंहगा लंकीन चूंदर बंकी अंगिया टंकी लगी कि- नार ॥ २ ॥ चंद्रबदन ॥ २ ॥ पैरण गहणा क्या छिब कहणा मधुरे वैणा राधे नार ॥ ३ ॥ चंद्रबदन ॥ ३ ॥ काजल टीको न जुलप्यां तीखी बिंदली नीकी नैनन की धार ॥ ४ ॥ चंद्रबदन ॥ ४ ॥ दांतन चूंप खुल्यो मुख रूप देख गिरे भूप भवानी नार ॥ ५ ॥ चंद्रबदन ॥ ५ ॥ नथनी को भलको बिजली सो चिलको पड़रह्यो पलको घूंघटपटफार ॥

६ ॥ चंद्र ॥ नख चख सजियो न मोहन रसियो हिवड़े बसियो नंद कंवार ॥ ७ ॥ चंद्र बदन ॥ ७ ॥ निकसी घर से जोवण हर से बूदां वरसे वहत जलधार ॥ ८ ॥ चंद्रबदन ॥ ८ ॥ जोबन जोर कियो है सोर बदन भयो ओर सखी लाचार ॥ ६ ॥ चंद्रबदन ॥ ६ ॥ अतरदान चाव मुख पान लगाई आन भई गुलजार ॥ १० ॥ चंद्रबदन ॥ १० ॥ भजती राम व्याप गयो काम मिले नहीं श्याम चढ्यो अहंकार ॥ ११ ॥ चंद्रबदन ॥ ११ ॥ गिरधर गनेश कर निर्गुण भेष फागुण के देश रस गाई गार ॥ १२ ॥ चंद्रबदन खुल रया गुलजार ॥ १२ ॥

४ बारहमासी की पैरी नग १६ ॥

॥ १ ॥ राग उजाज ताल कवाली ॥

कुबरी बैरन भई मोरी । वा कंसराय की चेरी रे ॥ टेर ॥ चेत में आली मैं घर२ माली दे वृन्दावन फेरी रे ॥ १ ॥ कुबरी बैरन ॥ बैसाख विरज धीरज नहीं धरतो पेर प्रेम की बेरी रे ॥ २ ॥ कुबरी ॥ २ ॥ जेठ में झुरतो मोहनी मूरती घाट घाट पे हेरी रे ॥ ३ ॥ कुबरी ॥ ३ ॥ असाड वरसो कुवरी तरसो नागन डसज्यो जहरी रे ॥ ४ ॥ कुबरी ॥ ४ ॥ सावण श्यामी अंतरजामी आसा लग रही तेरी रे ॥ ५ ॥ कुबरी ॥ ५ ॥ भादव सोग जोग में लीन्हो लाज शरम कूं गेरी रे ॥ ६ ॥ कुवरी ॥ ६ ॥ आसोज अरज मरज सब लिख दी अब मत करणा देरी रे ॥ ७ ॥ कुवरी ॥ ७ ॥ कातीपातीबांचश्यामकीकरूं द्वारका नेरी रे ॥ ८ ॥ कुवरी ॥ ८ ॥ मिगसर मुरली सुण ली सुपने सेज रमी पिया मेरी रे ॥ ६ ॥ कुवरी॥६॥ पोसमेंप्यारोमोह्योमनम्हारोविरहबारलीपहरी रे ॥ १० ॥ कुवरी ॥ १० ॥ वसंत वासी मोरे घर आसी बातकरूं हृदय री-

रे ॥ ११ ॥ कुवरी ॥ ११ ॥ गिरधरगनेश भेर फागुण धर मिल गये नंद किशोरी रे ॥ १२ ॥ कुवरी बैरण भई मोरी ॥ १२ ॥

४ टेर आगली । सात सहेल्यां रे झूलणे पिणयारीहे लोय । नग १० ॥ पाणीडे, नै गई रै तालाव म्हारा बाला जोय ॥ इस रंगत पै ॥

॥ २ ॥ बारहमासी राग झंझोटी ताल खैरवो ॥

बृज बनिता बिलखी फिरै ऊदोजी जोय । माधो नै मिलाओ मोहि आज नहीं तो जोगण होय ॥ टेर ॥ चैत में चतुर सुजान कूं मैं घर घर लीयेः जोय ॥ पीतम गया परदेश ऊदो कह रही तोय ॥ १ ॥ बृजबनिता बिलखी फिरै ॥ बैसाख बासी द्वारका में कुबज्या क्री रह्यो सोय । त्यागी सब कुल की लाज दिवी हुरमत खोय ॥ २ ॥ बृजबनिता ॥ जेठ में झुरतो श्याम बिना सखियां रही रोय ॥ तोड़ि-यो सखि नवलख हार दियो काजल धोय ॥ ३ ॥ बृजबनिता ॥ अ-साड आसा लगी पिया प्यारी रही जोय । महलां चढ़ देखूं दुरवीण कहीं आवत होय ॥ ४ ॥ बृजबनिता ॥ सावण सूनी सेज सजन बिना धरती में सोय । श्याम बिना बेहाल दिया सब तन खोय ॥ ५ ॥ बृजबनिता ॥ भादू बैरागण भई बिहारी लज्जा नहीं तोय ॥ बांदी सूं बांधी है प्रीत दिया भगवामोय ॥ ६ ॥ बृजबनिता ॥ आसोज ऐसी कूवरी थे हिवरै-लीवी पोय । प्रीतम है परनारमतो सामो तूजोय॥७॥बृजबनिता॥ काती में कामण किया पिया कुबजारा रया होय । छोड्यो जिन गोकुल गांव समझावै नहीं कोय ॥ ८ ॥ बृजबनिता ॥ मिगसिर मिलिया श्याम सखीरी सुपनै रही सोय । खुली रे नींद नहीं पीव दुख दूणा होय ॥ ९ ॥ बृजबनिता ॥ पोस पिया मिल गया सखीरी सब राजी होय ।

खमा खमा वृजराज कर रह्यो सब कोय ॥ १० ॥ बृजवनिता ॥ ब-संत बासी श्याम सुंदर खेलत रंग दोय । भीणी भीणी उडे रे गुलाल रंग कीचड़ होय ॥ ११ ॥ वृजवनिता ॥ फागण खेलत फाग कृष्ण सखी दुरमत खोय । गिरधर गनेश भयो दिल आनंद होय ॥ १२ ॥ वृजवनिता बिलखी फिरै ऊदो जी हे जोय । माधो ने मिला ओ मोंहि आज ॥ ४ ॥

टेर । आगली । छपर पुराणा पिया पर गया रे वरषण लागा मेह ॥ २ ॥ नग १८ अब घर आयजा गोरी रा बालमाजी ॥ रंगत निहाल देरो

३ ॥ बारहमासी राग लूर सारंग ताल खैरवो ॥

वृखसुता विरह फाटती जी तुम सुण नंद जी का कान्ह ॥ सुण नंद जी का रे कान्ह हे जी भला कान्ह अच्छा भला कान्ह अब मोय मिलजा मोहन सांवरा हो जी ॥ टेर ॥ चैत में चिन्ता करूं फिरूं रे म्हारै पिया जी मिलण की लाग । पिया जी मिलण की रे लाग हे जी भला लाग अच्छा भला लाग ॥ १ ॥ अब मोय मिलजा मोहन सांवरा हो जी ॥ १ ॥ वैशाख भस्म रमाय लेऊं देऊं सब गहना लूटाय ॥ २ ॥ अब मोय मिलजा ॥ जेठ में जोगन होय गई रे सखी सरवण लीन्हा फार ॥ ३ ॥ अब मोय ॥ असाढ बन ठन राधका गल खपनी लीन्ही डार ॥ ४ ॥ अब मोय ॥ सावण सुगन मनाय के वनखंड बि-चरत वृजनार ॥ ५ ॥ अब मोय ॥ भादव भक्ती करी हरी जी तुम दर्शन दो वृजराज ॥ ६ ॥ अब मोय ॥ आसोज उसकूं भजै तजै सखी सब गोपियन सिणगार ॥ ७ ॥ अब ०॥ काती पाती भेजी उदोजी सुण सब सखियन को हाल ॥ ८ ॥ अब मोय ॥ मिगसर मिलिया श्याम धाम सखी कर रही मंगलाचार ॥ ६ ॥ अब ॥ पोस में पियारी त्यारी करी गल

गज मोतियन को हार ॥ १० ॥ अब ॥ बसंत बसियो विरज में श्री रसियो नंद कंवार ॥ ११ ॥ अब मोय ॥ गिरधर गनेश गाया फागण देश सखी खेलत कृष्ण मुरार ॥ १२ ॥ अब मोय मिलजा मोहन सांवरा जी ॥ १२ ॥

४ ॥ टेर आगली । मिणयार रो हे बांकड़ली मूछांरो । हे मिणियार रो ॥ न० १९ ॥

४ हरीजस राग माड तथा जोगीया आसावरी ताल दादरो ॥

गिरधारी रे हे राधे थारी जोड़रो हे नटवरिया भेसां रो हे घूघरिया केसां रो हे गिरधारी रो ॥ टेर ॥ वो नन्द जी नो सांवरो हे राधे मधुरी सी बीन बजाय ॥ १॥ गिरधारी रे हे ॥ लुगट मुकट हीरां जड़यो हे राधे मुख मुरली कर हाथ ॥ २ ॥ गिरधारी रो हे ॥ कानों कुंडल झिगमिगै हे राधे गल बैजन्ती माल ॥ ३ ॥ गिरधारी रे हे ॥ काड़ियां कन्दोरो सोहनो हे राधे झांझर को झणकार ॥ ४ ॥ गिरधारी रे हे ॥ त्रिभंगी छिव छैल की हे राधे पीताम्बर सूं प्यार ॥ ५ ॥ गिरधारी रे हे ॥ मुरली धर मन में बस्यो हे ललता सज सोलह सिणगार ॥ ६ ॥ गिरधारी ॥ ललता ले राधे गई हे राधे श्री बृन्दाबन नन्द गांव ॥ ७ ॥ गिरधारी ॥ ग्वाल बाल सङ्ग खेलतो हे राधे तट जमुना जूको तोर ॥ ८ ॥ गिरधारी ॥ कृष्ण कदम सूं ऊतरे हे राधे कहो सुंदर कित जाय ॥ ९ ॥ गिरधारी ॥ दरशन कर परशन भई हे राधे तन मन दीन्हों छवार ॥ १० ॥ गिरधारी ॥ कृष्ण कुंजन रमै राधका हे राधे कर मुरली धर प्यार ॥ ११ ॥ गिरधारी ॥ गिरधर गनेश गुनी गावतो हे राधे तूं रंग भीनो गोपाल ॥ १२ ॥ गिरधारी रे हे राधे थारी जोड़रो हे नटवरीया भेसां रो हे घूघरिया केसांरो हे गिरधारी रे ॥ १२ ॥

४ टेर आगली म्हारी प्रीत लगी तो सूं चांदजी रे म्हानूं झालो तो देतो जा ॥ टेर ॥ नग २०

५ राग तिरंगी ताल खैरवो ॥

म्हारा श्याम सुंदर रङ्ग भीनारे बिहारी म्हानूं रास रमा जारे । हो सांवरिया म्हानूं मुख दिखलाय जारे । हो छबीला म्हासूं हाथ मिला जारे । ॥ टेर ॥ थे गोकुल का कंवर कनैया हूं बृखभान दुलारीरे । बिहारी मो सूं करले तूं यारी रे ॥ १ ॥ म्हारा श्याम ॥ मोर मुकुट थारे कांधे लुकट है कानां में कुंडल झिलके रे बिहारी नथ वेसर भलके रे ॥ २ ॥ म्हारा श्याम सुंदर ॥ रुणक झुणक थारा बाजेरे घूघरा झांझर को झणकारोरे । कृष्ण नट वर रङ्ग कारो रे ॥ ३ ॥ म्हारा श्याम सुंदर ॥ जमुना किनारे थे धेनु चरावो ओडण कामल कारी रे । बिहारी गोबिन्द गिरधारी रे ॥ ४ ॥ म्हारा ॥ कानां कपटी रे म्हारी झपटी चोर चोर दधि खावे रे । बिहारी सखीयन सङ्ग धावे रे ॥ ५ ॥ म्हारा श्याम ॥ मधुर मधुर थारी मुरली बाजे सुणताई सुध बुध भूली रे बिहारी घर सासू की सूली रे ॥ ६ ॥ म्हारा श्याम ॥ प्रीत की रीत निवाहो रे मोहन बोलत राधा प्यारी रे बिहारी मन में है थारी रे ॥७॥ म्हारा श्याम ॥ मैं प्यारा तेरे रंग राची प्रीत करी छूं साची रे बिहारी फेरो मत पाछी रे ॥ ८ ॥ म्हारा श्याम ॥ थे छो फूल गुलाब रारे मैं केसर री क्यारी रे बिहारी प्यारी मैं थारी रे ॥ ९ ॥ म्हारा श्याम ॥ रास विलास रमै जमुना पे सहस गोपी गिरधारी रे बिहारी रे जमुना गुलजारी रे ॥ १० ॥ म्हारा श्याम ॥ मोहन प्यारो जादव डारो सखियां श्याम लुभानो रे बिहारी वृज को है डाणी रे ॥ ११ ॥ म्हारा श्याम ॥

गिरधर गनेश भयो इस पद सूं तिर गया अधम अनारी रे बेद सुरती ललकारी रे ॥ म्हारा श्याम सुंदर रङ्ग भीना रे विहारी म्हानूं रास रमा जा रे ॥

फागण री गालियां की धुनि ।

टेर आगली । हां सखी नें बरजण आया । नाचण यार किया मन चाया ॥ १ ॥

पैरी ५ नग २१ राग तुरंगी ताल खेरवो ।

१ हरीजस ।

ऊधव सुन सखि अरज करूं छूं पिया परदेसां म्हारो छायो । बैरण भरमायो ॥ हां सखी बैरण भरमायो । कुबजा सोक कियो मन चायो ॥ टेर ॥

नन्द चन्द रसराज रसोलो जिन सें म्हे नेह लगायो । बैरण भरमायो ॥ क्या जाणुं जादू कर पायो । प्राणपती पोछो नहीं आयो ॥ जलजाओ ये सखि देस द्वारका कुवरी नें सहर बसायो ॥ १ ॥ बैरण भरमायो ॥ १ ॥ कह रहि सखियां तरसत अंखियां विरह जोबन गरणायो ॥ बैरण भरमायो ॥ नैणां मांय नीर भर आयो । जोभ थकी गोतो जिव खायो । पिया पिया कर कर प्यारी बोली ऊधव म्हे हाल सुणायो ॥ २ ॥ बैरण भरमायो ॥ २ ॥ झुर रहि विरज धीरज नहीं धरती गौ मुख घास न खायो । बैरण भरमायो ॥ ग्वाल बाल गोपेसुर जोवे । वृज की गोपी ग्वालन रोवे । जमना जू जल सूकण लागो । वृन्दावन अणकायो ॥ ३ ॥ बैरण भरमायो ॥ ३ ॥ ऊधव सुण माधव को तुं बतियां पहली क्यूं प्रेम पिलायो ॥ बैरण भरमायो ॥ प्रीत लगाई अब सरमायो ।

छोड़ो ब्रिज द्वारका धायो। कारी कुबजा में कूब परत है मोहन मन ललचायो ॥ ४ ॥ बैरण भरमायो ॥ ४ ॥ ऊधव अरज मरज सब लिख दे राधे जू इम फुरमायो ॥ बैरण भरमायो ॥ कृष्ण मिले राधा सुख पायो। वृज की गोपी मंगल गायो ॥ गिरधर गनेश सखि मिलो है राधका मोहन रास रचायो ॥ ५ ॥ बैरण भरमायो ॥ हां सखी बैरण भरमायो। कुबजा सोक कियो मनचायो ॥

टेर आगली। सखीरी पूछूं थानें बात थेतो कठे गमाई रात। थारो परण्यो जोवे बाट थारा सासूजी सुणे तो देसी ओरबो रे लो ॥ २ ॥

पेरी ५ नग २२ राग झंझोटी ताल खेरवो ॥

२ हरीजस ॥

ऊधोजी लाओनि लाल बिहारी। म्हारी लगन लगी गिरधारी। मुख बोले राधा प्यारी। म्हारे पिवने मिलारे ऊधो सांवरोरे टेर॥ ऊधो जी भेजूं लिख लिख पाती मेरी फाटत बहियां छाती। मोहन कर गयो मोसूं घाती। कुबजा रे संग बसियो रसियो बावरो रे ॥ १ ॥ ऊधोजी लाओनि ॥ १ ॥ उधो जी अन पाणी नहिं खाती। मैं हूं विरह जोबन की माती। अब मैं पीव मिलण कूं च्हाती। म्हारे पिया मन बसियो रसियो लावरोरे ॥ २ ॥ उधो जी लाओनि ॥ २ ॥ उधो जी जमुना जल नहिं न्हाती। खेलण सखियन संग नहिं जाती। म्हारे एक दाय नहिं आती। कुबजा संग फंसियो रसियो सांवरो रे ॥ ३ ॥ उधो जी लाओनि ॥ ३ ॥ उधो जी माधो जी के साथी। राधा लिखं २ भेजे

पाती। गिरधर गणेश कर रह्या भाती। मोहन मुकुट कसियो रासियो आवरो रे ॥ ४ ॥ उधो जी नाओनि ॥ ४ ॥

टेर आगली। नाथूरामजी वारी नें किण माणी रे बात सुणी के नहिं ॥ ३ ॥

पैरी ५ नग २३ राग जंगलो ताल खैरवो।

३ हरीजस ॥

म्हारो श्याम सुंदर चित चोर लियो रे मधुरी सी बीन वजाइ ॥ टेर ॥ लेटोरी ग्वालन घर जाय ऊखर चढ़ माखन को खाय। म्हारो रह्यो मही सो ढोर दियो रे ॥ १ ॥ मधुरी सी बीन वजाइ ॥ १ ॥ हम गुजरी गोरस ले जांय। लपट झपट करतो बृजराय। म्हारी फोर मथनियां न दोर गयो रे ॥ २ ॥ मधुरी सी ॥ २ ॥ बृज को गोपी ग्वा-लन डरे। कृष्ण चन्द्र का धाका परे। ओ तो मानत नहिं नंद को कह्यो रे ॥ ३ ॥ मधुरी सी ॥३॥ ऐसी धूम बिरज में करे कंस रायसूं ओ नहिं डरे। ऐसो निपूतो सखि होय रह्यो रे ॥४॥ मधुरी सी ॥४॥ गिर-धरगनेश गावता ख्याल कृष्णचन्द्र का सुणलो हाल। ओ तो बृजभोमो अवतार लियो रे ॥ ५ ॥ मधुरी सी ॥ ५ ॥

टेर आगली। हांसखी पहरावण वारो। असल लखारो चुड़ियां वारो ॥ ४ ॥

पैरी ५ नग २४ राग बरवो ताल खैरवो।

४ हरीजस ॥

सखी गइ जल भरणे कूं मोहो नंद लालो रे। कृष्ण ने जादू

डारो। हां सखी मुरली को प्यारो ॥ टेर ॥ सज सिणगार सिर गगरी लीनी। चली नार नाजक रंग भीनी। चीतालंकी नैण सुरंगी बह रह्यो खारो रे ॥ १ ॥ कृष्ण ने जादू डारो ॥ १ ॥ नैण बाण कर मारी सैनी। फूलां हंदी गूंथी बेनी। खुले मुक्ख जाणु चन्द्रबदन गूं-घट पट न्यारो रे ॥ २ ॥ कृष्ण ने जादू डारो ॥ २ ॥ कृष्ण कहै सुन गुजरी प्यारी। लगी प्रीत हिरदे बिच थारी। जैसे चन्द चकोर नेह चित लग गयो म्हारो रे ॥ ३ ॥ कृष्ण ने जादू डारो ॥ ३ ॥ मोहन मोहनी ऐसी डारी। ग्वालन सुध बुध भूली सारी। कृष्ण भवर होय बैठ खांच रस लीनो सारो रे ॥ ४ ॥ कृष्ण ने जादू डारो ॥ ४ ॥ गि-रधर गणेश रस गाई गारी। कृष्ण छैल मोही बृज नारी। सखी प्रीत जो करी कृष्ण कीना अवधारो रे ॥ ५ ॥ कृष्ण ने जादू डारो ॥ ५ ॥

टेर आगली। हां हुकम कर दिया सदर सें। यार बु-लावै चाल अधर सें ॥ ५ ॥

पैरी ५ नग २५ राग बरवा ताल खेरवो ॥

५ हरीजस ॥

नैणां नेह लगाय चली दिल चम्पत बरणी रे। प्रीत मोहन से करणी चलो सखी गघरी जल भरणी ॥ टेर ॥ बृजबनिता सब बात बिचारी। गूंघट वदन करी सब त्यारी। प्राण पिया सें लगी पैर नहिं धरती ध-रणी रे ॥ १ ॥ प्रीत मोहन सें करणी ॥ १ ॥ नणंद नेह कर हँस कै बोली। कहां चली सुन्दरी नाजक भोली। जमना जात सखियन को साथ। जल गाघर भरणी रे ॥ २ ॥ प्रीत मोहन से करणी ॥ २ ॥ चली ढूंढने प्रीतम प्यारी। कुंज भवन मिल गये गिरधारी। स्वात-

बूंद विन खरी आस इंदर के घरणी रे ॥ ३ ॥ प्रीत मोहन से कर-णी ॥ ३ ॥ गुजरी कृष्ण गल बहियां डारी । प्रेम प्रीत कर मोही मु-रारी । छिटक छबीली नार प्रेम में खाय रहि गरणी रे ॥ ४ ॥ प्रीत मोहन से करणी ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश रस गाई गारी कृष्ण छैल मोही बृजनारी । सखी प्रीत जो करी मुगत की चढ़ी निसरणीरे ॥ ५ ॥ प्रीत मोहन से करणी ॥ ५ ॥

टेर आगली । नखरो जोर बण्योरे छंद गाली रो । जो-बन झिल रह्यो वेसर वारी रो ॥ ६ ॥

पैरी ६ नग २६ राग झंझोठी ताल खैरवो ।

१ हरीजस ॥

सरणी म्हे तो । लीयो रे गिरधारी रो । देखो रूप बणयो छै मोहन प्यारी रो ॥ टेर ॥ मोर मुकट वारे खांदे लुकट प्यारी डाण लियो छै ब्रजनारी रो ॥ १ ॥ सरणी म्हे तो० ॥ १ ॥ जमना किनारे धेन चरावै प्यारो नटवर भेष मुरारी रो ॥ २ ॥ सरणी म्हे तो० ॥ २ ॥ वृन्दाबन की सघन कुंजन प्यारो रोक्यो छै घाट पण-यारी रो ॥ ३ ॥ सरणी म्हे तो ॥ ३ ॥ गिरधरगणेश भणै बृजभामी प्यारो गुण गायो छै विहारी रो ॥ ४ ॥ सरणी म्हे " " ५ ॥

टेर आगली । हां ये तूंतो म्हारै नत्थूराम जी रै चाल ए बड़लै री छय्यां हींडो घाल हे ॥ ७ ॥

पैरी ६ नग २७ राग बरवो ताल खैरवो ॥

२ हरीजस ।

हेजी म्हानूं दरसण दीजे नन्दलाल रे भगतबिछल रिछ पाल रे ॥

टेर ॥ हांरे हरी नरसिंग होय के तूं धर अवतारा । हिरणा कुस दुष्टी कूं मारा । अरे हांरे हरी भगत बचायो दे दे ढाल रे ॥ १ ॥ भगत विछल ॥ १ ॥ अरे हां रे हरी राम लछमण होय रावण मारा । भगत विभीषण कूं तुम तारा । अरे हां रे हरी फूंको असुर को तूं खाल रे ॥ २ ॥ भगत विछल० ॥ २ ॥ अरे हांरे हरी कृष्ण होय के कंस पछाड़ा। जुरासिंध सिसपाल बिडारा । अरे हांरे हरी गौवन को तूं गौपाल रे ॥ ३ ॥ भगत विछल० ॥ ३ ॥ अरे हांरे हरी तुमही तो भगत अनेक उ-धारा । तेरा तो गुन का छेह न पारा । अरे हांरे हरी करूं कुरबाण हीरा लाल रे ॥ ४ ॥ भगत विछल० ॥ ४ ॥ अरे हांरे हरी गिरधर गणेश भणे जस थारो । मिल गये कृष्ण काज कियो म्हारो । अरे हांरे हरी गायो गुणी जन ख्याल रे ॥ ५ ॥ भगत विछल० ॥ ५ ॥

टेर आगलो । अरे थांरा यार आयोरा पाछा जायरै । जोसी तुं म्होरत वताय रै ॥ ८ ॥

पैरी ६ [illegible] १८ राग बरबो ताल खैरवो ॥

३ हरीजस ।

हांरे थांरो जनम मरण मिट जाय रे । शिव २ ध्यान लगाय रे ॥ टेर ॥ आक धतूरा स्यामी अमल अरोगे । हां रे शिव विजयारो अहार कर खाय रै ॥ १ ॥ शिव २ ध्यान० ॥ १ ॥ अंग बागम्बर गल रुंड माला । हांरे थांरै सहस नाग लपटाय रे ॥ २ ॥ शिव २ ध्यान० ॥ २ ॥ जटा मुकुट मांही गंग विराजे । हांरे थांरे भूत प्रेत सङ्ग धाय रे ॥ ३ ॥ शिव २ ध्यान० ॥ ३ ॥ हांरे शिव नन्दीगण असवारी सोवे । हांरे तूंतो सिंगी नाद बजाय रे ॥ ४ ॥ शिव २ ध्यान० ॥ ४ ॥ हांरे शिव गिरधर

गणेश भणै जस थारो । हां रे वोइ तो हरख निरख गुण गायरे ॥ ५ ॥
शिव २ ध्यान० ॥ ५ ॥

टेर आगली । आबिलम रहि रे । सालूवाली समधण
नित नविरे ॥ ९ ॥

पैरी ६ नग २९ राग उजाज ताल खैरवो ॥

४ हरीजस ॥

आ बिलम रहि रे । वृषसुत सजनी नित नवि रे ॥ टेर ॥ हे
चंदा बदनी मिरगा नैणी चंचल नैण । हे वृषसुत सजनी रा मधुरे से
बैण ॥ १ ॥ बिलम० ॥ १ ॥ हे अंजर खजर छूटी जुलफां नागनि दोय।
हे लांग मांग मोतियन चिमकत छिब जोय ॥ २ ॥ बिलम० ॥ २ ॥
हे सुन्दर चुन्दर लहंगा चोली गुंजमाल की । हे पट गूंघट गज हंस
चाल की ॥ ३ ॥ बिलम ० ॥ ३ ॥ हतनी नथनी कर्णफूल उदबुद भेस।
हे सीस फूल सजनी रे आटो लटकै सेस ॥ ४ ॥ बिलम० ॥ ४ ॥ हे सु-
न्दर रमै श्याम काम कीन्हा सब पेस । हे गिरधर गणेश गावै ख्याल
मारु देस ॥ ५ ॥ बिलम० ॥ ५ ॥

टेर आगली । असी रुपय्या ले कलदार । बाजो बाजै
ठणकै दार ॥ १० ॥

पैरी ६ नग ३० राग झंझोटी ताल खैरवो ॥

५ हरीजस ॥

हेरी कृष्ण खेल रह्यो बाल जती । सखियां सब कहै म्हांरो

प्राणपती ॥ टेर ॥ मथुरा जायो न गोकुल आयो । धायो जसवत दूध छतो ॥ १ ॥ सखियां० ॥ १॥ इन्दर आयो ने जल बरसायो । गिर कुं उठायो नहीं पाई छै गती ॥ २ ॥ सखियां ॥ २ ॥ मटिया खायो ने मुख दिखलायो । पार न पायो फिर गई छै मती ॥ ३॥ सखियां० ॥ ३ ॥ गिरधर गायो ने गणेश पायो । श्याम रिझायो भइ परमगती ॥ ४ ॥ सखियां० ॥ ४ ॥

टेर आगली । आगे जैरो करदे म्हारा गोरधन नाथ । फेर फेर करदे म्हारा दाऊजी दयाल ॥ ११ ॥

पैरी ७ नग ३१ राग झंझोटी ताल खैरवो ॥

१ हरीजस ॥

छेरी छिटक चानणी खुल रहि रात । कान्हो कपटी पकर्‌यो हात ॥ टेर ॥ जमुना में जातो न जल भर लातो । पीछो आतो सखियन को साथ ॥ १ ।, छिटक० ॥ १ ॥ कीन्हो जोरी ने ठुलरी तेरी । बहियां मरोरी कर खोटी बात ॥ २ ॥ छिटक ॥ २ ॥ परती पइयां ने छोंड म्हारी वहियां । तोरी सइयां रे तिरलोकी नाथ ३ ॥ छिटक० ३ ॥ गिरधर गणेश भणे बृजनारी यारी कर सब घर कूं जात ॥ ४ ॥ छिटक० ॥ ४ ॥

टेर आगली । हां ये सगी व्हालो ये लागै थारो गाघरो ॥१२॥

पैरी ७ नग ३२ राग झंझोटी ताल खैरवो ॥

२ हरीजस ॥

हां ये सखी मोरमुकटवारो सांवरियो । बावरियो श्री नन्द

कंवार । हां ये सखी मोरमुकटवारो सांवरियो ॥ टेर ॥ हां ये सखी नन्द चन्द रस सूं भरियो । हरियो दिल बीन बजाय ॥ १ ॥ हां ये सखी० ॥ १ ॥ हां ये सखी कृष्ण कुंजन खेले गिरधरियो । बरियो ग्वालन घर जाय ॥ २ ॥ हां ये सखी० ॥ २ ॥ हां ये सखी गौवन ले बन २ फिरियो । ओ मिरियो दूध गोरस खाय ॥ ३ ॥ हां ये सखी० ॥ ३ ॥ हां ये सखी मुरली धर लारै परियो । लरियो ये सखि धूम मचाय ॥ ४ ॥ हां ये सखी० ॥ ४ ॥ हां ये सखी गिरधर गणेश दिलसूं भिरियो । तिरियो गोविन्दगुण गाय ॥ ५ ॥ हां ये सखी० ॥ ५ ॥

टेर आगली । हे जी म्हारो असल सिपाही जिंदवो । १ ३ ।

पैरी ७ नग ३३ राग कालिंगरो ताल खैरवो ॥

३ हरीजस ॥

हां रे म्हारो कान्हारे गिरवर धारी । अरे हांरे म्हां नूं दरसण दीन्हारे मुरारी रे कान्हा ॥ टेर ॥ अरे हांरे वाके क्रीट मुकट जरे हीरा । अरे हांरे वो हतो हलधर जी का बीरा रे कान्हा ॥ १ ॥ हांरे म्हारो० ॥ १ ॥ अरे हांरे वाके पीतांबर बैजन्ती सोवै । अरे हांरे अंग श्याम सुन्दर मन मोवै रे कान्हा ॥ २ ॥ हांरे म्हारो० ॥ २ ॥ अरे हां रे वाने मुख मुरली धर लीन्ही । अरे हांरे छिव त्रिभंग बांककर दीनी रे कान्हा ॥ ३ ॥ हां रे म्हारो० ॥ ३ ॥ अरे हां रे वाके झांझर की झणकारो । अरे हां रे वाने मोय लियो जुग सारो रे कान्हा ॥ ४ ॥ अरे हां रे म्हारो ॥ ४ ॥ अरे हां रे वाको गिरधरगणेश जस गावै । अरे हां रे वासूं भगत मुगत पद पावै रे कान्हा ॥ ५ ॥ अरे हां रे म्हारो० ॥ ५ ॥

टेर आगली । नाथूरामजी वारी लाडैकी नाजक नार । या कीन्हा यार अपार हुई जुग में जारी । आंख लगाय गई प्यारी ॥ १४ ॥

पैरी ७ नग ३४ राग झंझोटी ताल खैरवो ॥

४ हरीजस ॥

पीव गया परदेस सखी गिरवर धारी। कांइ किया बैरण वस किया पिया तज दी प्यारी । कुबज्या सङ्ग कीन्ही यारी ॥ टेर ॥ हूं वृष-भान श्यान सूरत केसर क्यारी। देखत चन्दा गिरपरे अरे घरमें नारी॥ १ ॥ कुबज्या सङ्ग ॥ १ ॥ है कुबज्या दुबजा रूप रंडी भुरकी डारी । कांइ श्याम काम बस भया रह्या उद बुद त्यारी ॥ २ ॥ कुबज्या सङ्ग॥ २ ॥ हेरि तन मांइ तपती जपती नहि अंखियां म्हारी । सुण भूख कूक बन्द हुई तूंही रटती प्यारी ॥ ३ ॥ कुबज्या सङ्ग ॥ ३ ॥ हेरी मर कुबज्या कूं मांत आंत देती गाली । मेरे पिया बिना जाय जिया ज्यान झुरती विहारी ॥ ४ ॥ कुबज्या सङ्ग ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश यूं भणे सुन्द्र कर लाचारी । आय नन्द चन्द मिल गया कृष्ण गिरवर धारी ॥ ५ ॥ कुबज्या सङ्ग ॥ ५ ॥

टेर आगली । वाः वाः आनन्दी लै घोटो थारै यारां रो नहि टोटो हे आनन्दी लै घोटो ॥ १५ ॥

पैरी ७ नग ३५ राग झंझोटी ताल खैरवो ॥

५ हरीजस ॥

हे जी म्हारो श्याम सुंदर मन मोह्यो ए जरा जोयो ए । सजनी

नागर नट को । आवे झटको । कलेजे में कान्हो खटको ॥ टेर ॥ मैं तो जमुना जाती सिर धर गघरी । म्हारी रिम झिम बाजे सखि पायल पगरी । छिब नख चख सालू झीणे पट को ए ॥ १ ॥ सजनी नागर नट को० ॥१॥ विरह श्यामघटा तन मन छाई । नैनां प्रेम नीरजल बरसाई । चले प्यार पवन को चटको ए ॥ २ ॥ सजनी नागरनटको० ॥ २ ॥ मिले श्याम सुंदर सखि कुंजगली । कर दरसन परसन बात भली। चित मुकुट लुगट चावे लटको ए ॥ ३ ॥ सजनी नागरनट को० ॥ ३ ॥ म्हारे बालपणे की है प्रीती । तज गयो रे कृष्ण कर अनीती । लावो पावो रि सखी विष बटको ए ॥ ४ ॥ सजनी नागर नटको ॥ ५ ॥ गावे गिरधर गणेश मिले गिरधारी । सखि रींझ भींज हुइ इकतारी । गयो फिकर जिकर सब घटको ए ॥ ५ ॥ सजनी नागरनट को ॥ ५ ॥

—:o—

दिल बिलम पचीसी ॥ २५ ॥

चैत में गणगोरियां के गीतां की धुनि की पैरी ॥

टेर आगली । सेण म्हारा रे झिलतीरो जोबन माणलैरे ७ ॥

पैरी ८ नग ३६ राग वुज़ाज ताल खैरवो ॥

१ हरीजस ॥

मोहन प्यारा रे सांवरो सुरत नैणां लागैणी । मोहन म्हारा रे ओ लहर लहर जिव जाय । मोहन प्यारा रे मधुर मूरत नैणां ,लागणी ॥ टेर ॥ मोहन प्यारा रे मोर मुकट कट काछैनो । मोहन म्हारा रे मुख

मुरली धुन गाय ॥ १ ॥ मोहन प्यारा रे० ॥ १ ॥ मोहन प्यारा रे कोट कुंडल झुलक्यां न.गैणी । मोहन म्हारा रे नथ वेसर झलकाय ॥ २ ॥ मोहन प्यारा रे० ॥ २ ॥ मोहन प्यारारे श्याम घटा न राधा दामैणी । मोहन म्हारा रे प्रेम नीर बरसाय ॥ ३ ॥ मोहन प्यारा रे० ॥ ३ ॥ मोहन प्यारारे कृष्ण कुंजन राधा बाघैणी । मोहन म्हारारे विरह बन गरजत आय ॥ ४ ॥ मोहन प्यारा रे० ॥ ४ ॥ मोहन प्यारा रे चतुर नार चकवी जागैणी । मोहन प्यारा रे पिया बिन रह्योहन जाय ॥ ५ ॥ मोहन प्यारा रे० ॥ ५ ॥ मोहन प्यारा रे गिरधर गणेश गावै कामैणी । मोहन म्हारा रे श्याम सुन्दर मिले आय ॥ ६ ॥ मोहन प्यारा रे०॥६॥

टेर आगली । हे जी रसिया जी थानैं किण बिलमाया के । लोरी रैजावतां बडी बिलमाया । कांइ रे जवाब करूं रसियो ॥ २ ॥

पैरी ८ नग ३७ राग सारंग ताल होरी गत दीपचन्दी ॥

२ हरिजस ॥

एजी बृजवासी थानूं किण भरमायो । आ कुबज्या सौक कियो मन चायो । मैं कांइरे कसूर कियो मोहना भूल परी ना चूक परी ना तो श्याम बिना विषखाय मरूंगा । मैं कांइरे कसूर कियो मोहना ॥ टेर ॥ कुबज्या री सौक कंस की चेरी । आ पुरब जनम की है वैरण मेरी ॥१॥ मैं कांईरे कसूर० ॥१॥ हे जी बृजवासी तूं कब घर आसी । या प्यारी के प्रेम परी गलफांसी ॥ २ ॥ मैं कांइरे० ॥२॥ अन्न न भावै नींद न आवै । या सुरत लगी घनश्याम सुवावै ॥ ३ ॥ मैं कांई रे० ॥ ३ ॥ सुन २ पतियां न फाटत छतियां । गतियां ववैरे ऊधा सारी २ रतियां ॥ ४॥

मैं कांइ रे० ॥ ४ ॥ कपटी तो कृष्ण द्वारका मे छायो । है कुबजा सूं भोग म्हानूं जोग पठायो ॥ ५ ॥ मैं कांइ रे० ॥ ५ ॥ गिरधर गणेश भणै जस गायो । यो श्याम सुंदर राधे मन भायो ॥६॥ मैं कांइरे० ॥६॥

टेर आगली । छैलो म्हारी जोर रो उदियापुर मालै रे ॥ ३ ॥

पैरी ८ नग ३८ राग दुरंगी ताल होरी गतदीपचन्दी ॥

३ हरीजस ॥

मुकटरा मोहना म्हारो मन हर लीन्हों रे । हो मुरतरा सांवरा मोपैं जादो कीन्हों रे ॥ टेर ॥ हूं जल जमुना जातरो म्हारे सखि रे सहेल्यां रो साथ । सामै मिलियो सांवरो म्हारै घालो गले मांय वाथ ॥ १ ॥ मुकटरा० ॥ १ ॥ सालू सारो सांवरो म्हारी चोलो रो खैंच्यो प्यार । मोतियन माला तोर कै म्हांसुं कियो हे कुंजन मांय प्यार ॥ २ ॥ मुकटरा० ॥ २ ॥ सासू नणद लरती घणी म्हारै परधयां सूं नहिं प्यार । बंसी वारो बस गयो म्हारो सुरत लगी एकतार ॥ ३॥ मुकटरा० ॥ ३ ॥ सुण सखि ललता लाल को म्हारे लगन लगी दिन रात । आंखन में आंसू परे थांनूं कैहो हूं दुखरी बात ॥ ४ ॥ मुकट-रा० ॥ ४ ॥ सखिरे श्याम कै कारणे फिरूं बृन्दावन नंदगांव । कृष्ण कृष्ण रटती रहूं म्हारै छन छन मांय काम ॥ ५ ॥ मुकटरा० ॥ ५ ॥ गिरधर गणेश सखि सोधती हुइ प्रेम मगन घन घोर । किरपा कीन्ही कृष्ण जी सखि मिल गया नन्द किशोर ॥ ६ ॥ मुकटरा० ॥ ६ ॥

टेर आगली । खेलण दो गिणगोर भंवर म्हानैं रम्मण

दो दिन च्यार । हांरे म्हारी सख्यां जोवे वाट चतुर म्हानैं रमण दो दिन च्यार ॥ १ ॥

पर्श ८ नग ३९ राग देस ताल होरी गत दीपचन्दी ॥

१ हरीजस ॥

वन वन [illegible] में लार विहारी म्हारी सुरत लगी इकतार । [illegible] नैणां तूं [illegible] निहार विहारी म्हारी सुरत लगी इकतार ॥ टेर ॥ भूषण [illegible] डार दिया री मैं ने तज दीनो सिणगार । एजी [illegible] मूं नांहं प्यार ॥ १ ॥ विहारी० ॥ १ ॥ सुन्दर वदन [illegible] खान पान लागे खार । हां रे थारे विरह भीजो [illegible] ॥ २ ॥ विहारी० ॥ २ ॥ सुन्दर श्याम की लार विहारी [illegible] । हारे थांरा नेह नख चख सिणगार ॥ ३ ॥ विहारी० ॥ ३ ॥ सुन्दर श्याम चाले प्यार विहारी म्हारे ववेरे कलेजे मे [illegible] तार चाहे मार । ४ ॥ गिरधर गणेश विचार [illegible] सुन्दरी नार । हेजी म्हांनूं मिलिया श्री नन्द कंवार [illegible] ॥ ५ ॥

[illegible] । बामण का नंदलाला तुझे पिलाय देऊं [illegible] । प्याला पर झुकतो पिलंग पर रमतो आये [illegible] । तें घर मे भगतण थाली ॥ ५ ॥

पर्श ८ नग २० राग भंपाली ताल खैरवो ॥

५. हरीजस ॥

[illegible] प्यारा तु गिरधारी गिरवर धारा । धरणी पर कोप

इन्दर कीन्हो ग्वाल बाल सखो लीन्हो। सखी की साथ करी प्यारा जाणत हैं जुग संसारा रे ॥ टेर ॥ रे नन्दन का सुण प्यारा तूं नरसिंग होय खंभ कूं फारा। हिरणाकुस कोप कियो भारी प्रह्लाद भज भगती धारी। हिरणाकुस डण्ड दिया खारा। हरि हिरणाकुस कूं तुरत मारा ॥ १ ॥ रे नन्दन का० ॥ १ ॥ रे नन्दन का सुण प्यारा तूं राम होय रावण मारा। रावण को तखत राज लङ्का तीन लोक मानत संका। भगतन कुं पकर दुस्टी तारा। अब आयोरे नास रावण थारा ॥ २ ॥ रे नन्दन का० ॥२ ॥ रे नन्दन का सुण प्यारा तूं कौरव होय पांडव बारा। द्रौपदी का केस दुस्टी तांणा कोस लिया रासत थाणा। या सुणी कृष्ण नन्द का प्यारा। एक एक कूं पछारा ॥ ३ ॥ रे नन्दन का० ॥ ३ ॥ रे नन्दन का सुण प्यारा तूं कलू काल सुण अंकारा। पृथवी परभू पै जाय कूकी तूं निकलंक होय मारी फूंकी। बचे भगत दुस्ट डूबा सारा। चार जुगां का हरी रखवारा ॥ ४ ॥ रे नन्दन का०॥ ४ ॥ रे नन्दन का सुण प्यारा दुस्टन कूं हरि संहारा। तुम परमानन्द पूरण पूरा सत चित निरगुण नूरा। गावै सेस महेश जसथारा भगत हेत लिया अवतारा ॥५॥ रे नन्दन का० ॥५॥ रे नन्दन का सुण प्यारा गिरधरगणेश भया गुलजारा। वो है भगत आप मिन्तर वाके अनभव पद लिख २ भाके। दिया ज्ञान ध्यान का ललकारा। सँहसर सिस किया अवधारा ॥ ६ ॥ रे नन्दन का० ॥ ६ ॥

पैरी ९ नग ४१ रंगत ठूमरी राग झंझोटी ताल कवाली ॥ १ हरीजस ॥

सखी हीरालाल गल गुंजमाल भ्रकुटी विसाल अंग नन्दलाल खुल रहे बाल नटवर सा हाल गज गमन चाल मानूं श्री गोपाल सखी ॥

॥ टेर ॥ हेरी कंवल नैन बजै मधुरे बैन संग चलत धेन सब ग्वाल बाल ॥ १ ॥ सखी हेरा० ॥१॥ सिर मुकट ठाट चंद्रा ललाट पीताम्बर पाट अंग श्यामगाल ॥२॥ सखी हेरा० ॥२॥ जमुना घाट पिणघट की बाट फोरत है माट दधिया हाथ डाल ॥ ३ ॥ सखी हेरा० ॥ ३ ॥ गिरधरगणेश ध्यावत हैं सेस सुर नर महेस सिंवरत गोपाल ॥ ४ ॥ सखी हेरा० ॥४॥

पैरी ९ नग ४२ ठुमरी राग झंझोटी ताल कवाली ॥

२ हरीजस ॥

चित मन मोहन मेरा चोर लिया जावो लावोरी सखी तलफत है जिया ॥ टेर ॥ बृन्दाबन की कुंजगलन में जातो सिर पर माट लिया ॥ १ ॥ चित मन० ॥ १ ॥ कंवल नैन हैं कृष्ण रंग भीना क्या जानूं मुझ पै जादू किया ॥ २ ॥ चित मन० ॥ २ ॥ अन्न न भावै नींद न आवै श्याम विना बे हाल हुया ॥ ३ ॥ चित मन० ॥ ३ ॥ जमुना घाट पिणघट की वाट पैं बजाय वीणा मन मोय लिया ॥ ४ ॥ चित मन० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणे सखि बोलो आंख खोल कर रहि है पिया ॥ ५ ॥ चित मन० ॥ ५ ॥

पैरी ९ नग ४३ ठुमरी राग झंझोटी ताल कवाली ॥

३ हरीजस ॥

ढूंढूं वन वंसीवटवारा मोर मुकट नटवर रंग कारो ॥ टेर ॥ कुंज २ में भवन२ में। फिरी घाट जमुना तट सारो ॥ १ ॥ ढूंढूं बन ॥ १ ॥ चन्दा अस्त चकोर आंख गई । भंवर सुगंधी सङ्ग गयो मारो ॥ २ ॥ ढूंढूं वन० ॥ २ ॥ हेरी सखी रसराज मिलाओ। देऊंगी नव लख

हार हमारो ॥ ३ ॥ ढूंढूं बन ॥ ३॥ गिरधर गणेश मिले गिरधारी सङ्ग राधका मोहन पियारो ॥ ४ ॥ ढूंढूं बन० ॥ ४ ॥

पैरी ९ नग ४४ ठुमरी राग झंझोटी ताल कवाली ॥

४ हरीजस ॥

हेरी श्याम विना जुग लागत खारो लावोरी सखी देऊं नवलख हारो ॥ टेर ॥ त्रिभंगी बांका नोक नैनन की । सुपने में घायल कर-डारो ॥ १ ॥ श्याम० ॥ १ ॥ दिन नहिं चैन रैन नहिं निद्रा । नेह लग्यो वो सजन हमारो ॥ २ ॥ श्याम० ॥ २ ॥ नणदी नैण बैण सुण बोली । कां चली हे सूंदरी सज सिणगारो ॥ ३ ॥ श्याम० ॥ ३ ॥ जमुना जाऊं बाई जल भर ल्याऊं । सखी साथ हूं करत बिचारो ॥ ४ ॥ श्याम० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश घाट जमुना पै संग सखी और मोहन पियारो ॥ ५ ॥ श्याम० ॥ ५ ॥

पैरी ९ नग ४५ ठुमरी राग झंझोटी ताल कवाली ॥

५ हरीजस ॥

तोरी सैयां रे म्हारी छोड़ बहियां । मैं तो तोरी सैयां । रे म्हारो छोड़ बहियां ॥ टेर ॥ अंगली पकड़ मोरा पुणचा भी पकड़ा । अंचल छोड़ परतो पइयां रे ॥ १ ॥ तोरी सैयां० ॥ १ ॥ मद्दो नी मटको सिर सें पटको । भीज गई चोली दइया रे ॥ २ ॥ तोरी सैयां ॥ २ ॥ जोबन डाण ताण दे लेतो । हम गोकुल छोड़ मथुरा रहियां रे ॥ ३ ॥ तोरी सैयां ॥ ३ ॥ कृष्ण कंवर भंवर सुण मोगी । हम गरीब ग्वालन घर जाइयांरे ॥ ४ ॥ तोरो सैयां० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भयो गिरधारी जावो री सखी छोडी बहियां रे ॥ ५ ॥ तोरी सैया० ॥ ५ ॥

पेरी १० नग ४६ राग माढ ताल दादरो ॥

१ हरीजस ॥

उद्धव माधो ने मिला देऊं दुलरी हार की। दुलरी हार की रे देऊं गुंजमाल की। उद्धव माधो ने मिला रे देऊं दुलरी हार की ॥ टेर ॥ छन तूं लिख दियो जोग भोग कुबज्या की माल की। उणा मोकर लिगमाया रे चेरी कंसराय की ॥ १ ॥ उद्धव माधो ने ॥ १ ॥ मोहनी मूरत मोहनी मूरत दिल कुमाल की ॥ म्हानूं अन्न न भावे नींद न आवे रे मूरत वेहान की ॥ २ ॥ उद्धव माधो ने० ॥ २ ॥ दादुर मोर पपैया बोले कोयल काल की। धण सेजां सूती न नैनां रोती प्रीतम उस प्यार की ॥ ३ ॥ उद्धव माधो ने० ॥ ३ ॥ वांचत पाती न फाटत छाती चतुर सुजान की। इंदर बरसै न सुंदर तरसै चंद्र चकोर की ॥४॥ उद्धव माधो ने० ॥ ४ ॥ मिल गये कृष्ण कान्ह करुणा सुन वृषभान की। गिरधर गगोज ग्वालन गोपी मिले गोकुल गांव की ॥ ५ ॥ उद्धव माधो ने ॥ ५ ॥

पेरी १० नग ४७ राग माढ ताल दादरो ॥

२ हरीजस । जवाब कृष्ण को ॥

क्या छिन छिन गयेप्यारी सुत वृषभान की ॥ टेर ॥ अंग केतकी रंग तिहारो रूप निधान की। हेरी म्हे अवतार धर्‌या रघुवर तूं सग जानकी ॥ १ ॥ क्या छिन० ॥ १ ॥ बैनी बोर पटी पै कोर खुनो दिल कुरानकी। आंगे लाना झूमर नाजक उमर वोरी पान की ॥ २ ॥ क्या छिन० ॥ २ ॥ सुंदर सुंदर नथंगा चोनी गुंज माल की। थारै हिये पार छिनछिन प्यारी ज्योनी भान की ॥ ३ ॥ क्या छिन० ॥ ३ ॥

नख चख गहना साज लाज करती नन्दलाल की। थारै गले बिच बहियां डारी सैयां सजन सुजान की ॥ ४ ॥ क्या छिब० ॥ ४ ॥ वृन्दाबन में रास रच्यो हुई अतर पान की। गिरधरगणेश गोपाल रमावै सुत वृषभान की ॥ ५ ॥ क्या छिब० ॥ ५ ॥

पैरी १० नग ४८ राग माढ ताल दादरो ॥

३ हरीजस। जबाब सखी ॥

हे जी थे कांई जानो जी रसराज मोहन पीरि पार की ॥ टेर ॥ मथुरा जायो न गोकुल आयो ओडी भार की। थे बन २ जावो न धेन चरावो ले कमली काल की ॥ १ ॥ थे कांई जानो० ॥ १ ॥ कान्हो कपटी मारी झपटी फारी सार की। थे बहियां झटकी धरणी पटकी चिटकी नार की ॥ २ ॥ थे कांई० ॥ २ ॥ नटवर बाना धर लियो कान्हा कुंडल हार की। तेरे चमकत गहना क्या छिब कहना कर रह्यो जारकी ॥ ३ ॥ थे कांई० ॥ ३ ॥ खेलत होरी संग ले टोली कर किलकार की। थे दीसो छोटा न भीतर खोटा बोलो खार की ॥४॥ थे कांई० ॥ ४ ॥ करती दरसण होतो परसण कर लाचार की। गिरधर गणेश सुध बुध भूली फिरै मोहन लारकी ॥ ५ ॥ थे कांई० ॥ ५ ॥

पैरी १० नग ४९ राग माढ ताल दादरो ॥

४ हरीजस। जवाव सखी ॥

थे देदो जी रसराज म्हारी लंगर आरसी ॥ टेर ॥ मोरे घर आयो तू लेकर धायो लंगर आरसी। हे री सुण नन्दलाला नैण विसाला मत कर पारसी ॥ १ ॥ थे देदो जी रसराज० ॥ १ ॥ नंद को ढोटा बोलत

खोटो हूं देऊंगी गारसी । हे री सुण रे सपूता जाय निपूता गउवां चारसी ।। २ ।। थे देदो जी रसराज० ॥ २ ॥ मथुरा जाऊं न पकर मंगाऊं नैणां न्हारसी । जब कंसा आवे तने बांध मरावै देणी धारसी ॥ ३ ॥ थे तेदो जी रसराज० ॥ ३ ॥ डाण जू लेतो वोह दुख देतो करतो जारसी । हेरी हूं अबला सबला तूं बैठो सायब मारसो ।। ४ ॥ थे देदो जी रसराज० ॥४॥ गिरधर गणेश भणे यूं गोपी बोलत खारसी । तब मोहन दया मया कर दीन्हो लंगर आरसी ॥ ५ ॥ थे देदो जी रसराज ॥ ५ ॥

पैरी १० नग ५० राग माढ ताल खैरवो चाल गजल ॥

५ हरीजस । जवाब सखी ॥

कान्हा कपटी म्हारी झपटी तोर्‌यो नवलख हार ॥ टेर ॥ हूं ग्वालन गोकुल कूं जाती सज सोलह सिणगार । हेरी मिल गये मोहन श्याम सुंदर म्हारी अंगिया दीन्हो फार ॥ १ ॥ जोरी जुलम करतो मन मोहन मटकी दीन्हो सिर डार ॥ हेरी ततथइ ततथइ ग्वाल बाल मिल करता है किलकार ॥२॥ रे तोर्‌यो ॥२॥ कोइ तो खैंचे चीर हमारो हाथ पकर ली नार । कोइयक जरकस सारी सिर पर निरखै कोर कनार ॥ ३ ॥ रे तोर्‌यो० ॥ ३ ॥ हेरी भवन २ भंवरो होय भटकै लेवै सुगंधी सार । जल जावो ये सखी राज कंस को काडत नाय नितार ॥ ४ ॥ रे तोर्‌यो० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणे सखि देती पाणी पीपी गार । हेरी ऊजर वसज्यो वृज की भोमी निपजो यामें खार ॥ ५ ॥ रे तोर्‌यो० ॥ ५ ॥

पैरी ११ नग ५१ राग सोरठ तथा मलार ताल तिताली जलद ॥

१ हरीजस ॥

राधे जू की बाणी बोलै अमृत मोर । श्याम घटा घन घोर ॥ टेर ॥ गवर बरण अंग रंग केतकी चन्दा सजन चकोर । बांसक आटी न पर रहि पाटी मिल गये नन्दकिशोर ॥ १ ॥ राधे जू की बाणी० ॥ १ ॥ मोहन रहियां गल डारूंगी बहियां बिरह मचायो शोर । मेरी मान तान तन मन को श्याम नहीं कछु जोर ॥ २ ॥ राधे जू की० ॥ २ ॥ प्रीत की रीत देख सुण मोहन लगी लगन घन घोर । जैसे स्वात बूंद बिन तलफत चन्दा सजन चकोर ॥३॥ राधेजू की० ॥३॥ कहै गिरधारी सुण हे प्यारी नेक जाण मत ओर । गिरधर गणेश यूं भणै श्याम मुख राधे कलेजे की कोर ॥ ४ ॥ राधे जू की० ॥ ४ ॥

पैरी ११ नग ५२ राग सोरठ ताल तिताली जलद ॥

२ हरीजस ॥

कांई प्रीतम प्रीत लगाय पिया मत न्यारी राखो रे ॥ टेर ॥ छिन २ मांय घरी घट जावे जिया तलफत म्हांको रे । दाड़म दाख फूल फुलवारी आय अमृत चाखो रे ॥ १ ॥ पिया मत न्यारी राखो० ॥ १ ॥ सुण २ बतियां फाटत छतियां क्यूं पतियां हांको रे । अन्न न भावे नींद न आवे जरा नैणां तो भांको रे ॥ २ ॥ पिया मत न्यारी० ॥ २ ॥ कुबज्या कलंक कंस की चेरी रो हुकम हांको रे । हूं वृषभान श्यान सूरत मानो अमृत पाको रे ॥ ३ ॥ पिया मत न्यारी० ॥ ३ ॥ गिरधर गणेश यूं सुणयो श्याम राधे जू को हांको रे । मन मोहन मिल गया बिरज अंग रंग को बांको रे ॥ ४ ॥ पिया मत न्यारी० ॥ ४ ॥

पैरी ११ नग ५३ राग सोरठ ताल कवाली ॥
३ हरीजस ॥

हे री सखी सुण सपने की बात । म्हारो मोहन पकर्यो हाथ । मैं वारी सखी सुण सुपने की बात ॥ टेर ॥ दादर मोर पपैया बोले तोले आधी रात । सुख भर सयन सेज में सूती पिव हिवरे धर हाथ ॥१॥ हेरी सखी सुण सुपने० ॥ १ ॥ प्रेम में प्रीत प्रीत में प्यारो दोनूं खेलां साथ । नन्द चन्द रसराज रसीलो जणियां जसवत मात ॥ २ ॥ हेरी सखी० ॥ ॥ २ ॥ हिवरो हुलार दियो तन मन वार लियो भवर सजन को गात। खुल गइ आंख सोकसी निद्रा कपटि कपट छल जात ॥ ३ ॥ हेरी सखी० ॥ ३ ॥ क्या सखी करूं मरूं विरह मारी गालो देऊ काछु गात । गिरधर गणेश यूं भणत सूंदरी सुण तिरलोकी नाथ ॥ ४ ॥ हेरी सखी० ॥ ४ ॥

पैरी ११ नग ५४ राग सोरठ ताल कवाली ॥
४ हरीजस ॥

पपैया तुं पिव पिव बाणी बोल । जरा दिलकी तुं घुंडी खोल ॥ पपैया तूं पिव पिव बाणी बोल ॥ टेर ॥ पिव २ करती प्राण पुकारूं पोली पड़ी वे मोल । तुं अभिमान आनक्यूं लायो ललत जीभ कूं खोल ॥ १ ॥ पपैया तुं पिव २ ॥ १ ॥ हिवरे को जिवरो कर राखूं भाखूं वचन हिंडोल । दाडम दाख चाख मेरे प्यारा प्यारी बांधत तोल ॥ २ ॥ पपैया तुं० ॥ २ ॥ कुवरी कामण गारी मारी दिया है शब्द का सोल । प्यारो न्यारो बण परदेशी हमसूं कर गयो कोल ॥ ३ ॥ पपैया तुं० ॥ ३ ॥ पिव २ बाणी सुणती साणी जस बजवायो ढोल । गिरधर गणेश यूं भणत राधका दीना छे गूंघंट पट खोल ॥४॥ पपैया तुं०॥४॥

पैरी ११ नग ५५ राग सोरठ ताल कवाली ॥

५ हरीजस ॥

लाल के मोर मुकट गुंजमाल । भृकुटी है नैण बिसाल । लाल के मोर मुकट गुंजमाल ॥ टेर ॥ मोहन सैने मधुरे बैने चहने चन्द ज्यूं चाल । अधुर २ और मधुर २ सुण मोहन तिलक सिर भाल ॥ १ ॥ लाल के मोर० ॥ १ ॥ जमुना घाट सखियन को ठाट पैं बाट बये गोपाल । बहियां झटकी न मटकी पटकी चटको गोपी ग्वाल ॥ २ ॥ लाल के मोर० ॥ २ ॥ मोहन मोरी दुलरी तोरी जोरी करी जोय साल । कब्बर कछनी पकरी अचनी नचनीं नैण बिसाल ॥ ३ ॥ लाल के मोर० ॥ ३ ॥ कह रहि सइयां परती पइयां रहियो लाल गोपाल । गिरधर गणेश यूं भणत सखी सब नाच रही दे ताल ॥ ४ ॥ लाल के मोर० ॥ ४ ॥

पैरी १२ नग ५६ रंगत दोहा ॥

१ दोहा ॥

प्यारी भीजी प्रेम में कर प्रीतम सूं प्यार ।
सुपने मिलियो सांवरो सखि आंख खुली दुख त्यार ॥ १ ॥

२ दोहा । नग ५७ ॥

प्यारे ने पतियां लिखी मैं दीन्ही बेर हजार ।
रुदन करत है राधिका सखि होगयो बदन अंगार ॥ २ ॥

३ दोहा । नग ५८ ॥

तन मन धन अर्पण कियो लियो सांवरा तोय ।
क्यूं कुबज्या सूं बिलमियो चूक परी कांइ मोय ॥ ३ ॥

४ दोहा । नग ५९ ॥

डावी आंख फरूकती उडरै काला काग ।
नहिं तो पांखां दे उरी म्हारै पिया मिलण की लाग ॥ ४ ॥

५ दोहा । नग ६० ॥

पिंड पिंजर पीला भया भज भज सास उसास ।
अबला अरज यूं करत है तोरी परी है प्रेम की पास ॥ ५ ॥

सुखमाल पचीसी । २५ ।

पैरी १३ नग ६१ राग कालिंगरा ताल खैरवो ॥

१ हरीजस ॥

लाला दूर खेलन मति जाना । घर माखन मिसरी खाना । रे लाला दूर खेलन मति जाना ॥ टेर ॥ जसवत मात तात समजावे हाऊ को डर कान्हा रे ॥ १ ॥ लाला० ॥ १ ॥ दाऊ हाऊ दिखादे भैया वतादे तो तान मैना रे ॥ २ ॥ लाला० ॥ २ ॥ ले लाला लडुवे भर देऊं गडुवे चाव लेवो रे मुखपाना रे ॥ ३ ॥ लाला ॥ ३ ॥ जमुना न्हाऊं मैया खेलण जाऊं मानां नी जसवत कहना रे ॥ ४ ॥ लाला ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश घाट जमुना पै बजा रह्यो रस वैना रे ॥ ५ ॥ लाला० ॥ ५ ॥

पैरी १३ नग ६२ राग कालिंगरा ताल खैरवो ॥

२ हरीजस ॥

सखि और ग्वाल वाल मिल भेले । मोहन जमुना जूपे खेले ॥

टेर ॥ आ मेरे ललना छाक खवाऊं जसवत देछै हेले ॥ १ ॥ मोहन०॥ १ ॥ मोर मुकट मकराकृत कुंडल बीन बांसुरी झेले ॥ २ ॥ मोहन० ॥ २ ॥ नन्द गये उपनन्द बुलावण मिल गये मोहन छैले ॥ ३ ॥ मोह-न० ॥ ३ ॥ गिरधर गणेश कृष्ण ग्रह आये जसवत हिवरे मेले ॥ ४ ॥ मोहन० ॥ ४ ॥

पैरी १३ नग ६३ राग कालिंगरा ताल खैरवो ॥

३ हरीजस ॥

प्यारा प्यारी सुं मिलता जाइयो । टुक बरसाने में आइयो ॥ प्यारा प्यारी सुं मिलता जाइयो ॥ टेर ॥ ख्याल खेलना नटवर नागर माखन मिश्री खाइयो ॥ १ ॥ प्यारा० ॥ १ ॥ कारी कामर ले घेरी घूमर ज-मुना तट धेन चराइयो ॥ २ ॥ प्यारा० ॥ २ ॥ हिवरै लपेट लेऊं तन मन वार देउं टुक इक बीन सुनाइयो ॥ ३ ॥ प्यारा० ॥ ३ ॥ गिरधर गणेश भणै सखि मुझ को मोहन झिलक दिखाइयो ॥ ४ ॥ प्यारा० ॥ ४ ॥

पैरी १३ नग ६४ राग कालिंगरा ताल खैरवो ॥

४ हरीजस ॥

प्यारी डाण दही का देना । तुम मान मोहन का कहना । हे प्यारी डाण दही का देना ॥ टेर ॥ ग्वालन मद की माती जाती पकर श्याम कहै वैना ॥ १ ॥ हे प्यारी डाण० ॥ १ ॥ बरसाणे में रहती कहती छोड़ बहियां रे बेइमाना ॥ २ ॥ हे प्यारी० ॥ २ ॥ मोहन मोरी दु-लरी तोरी खोस लुटाया गहना ॥ ३ ॥ हे प्यारी ॥ ३ ॥ मारुं कंस वंस

नहि राखूं भाखूं वचन आवै चैना ॥ ४ ॥ हे प्यारी० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणै वृज भूमी श्याम चलाई सैना ॥ ५ ॥ हे प्यारी ॥ ५ ॥

पैरी १३ नग ६५ राग कालिंगरा ताल खैरवो ॥

५ हरीजस ॥

हेरी म्हानूं मिल्या श्याम रंग भीना । म्हेतो जमुना तट दरशण कीन्हा ॥ टेर ॥ कुंडल मुकुट लकुट हातन में बजा रह्या रस बीना ॥ १ ॥ म्हे तो जमुना० ॥ १ ॥ त्रिभंगी बांक नांक नैनन की पीतम्बर कस लीन्हा ॥ २॥ म्हे तो जमुना० ॥ २ ॥ जमुना घाट बाट बृन्दाबन रोज चरवत धीना ॥ ३॥ म्हे तो जमुना० ॥ ३ ॥ ऐसा भेस केस गूंघरवा मुझ कूं दरशण दीन्हा ॥४॥ म्हे तो जमुना० ॥ ४॥ गिरधरगणेश भणै भवसागर सफल हुवा येसखि जीना ॥ ५ ॥ म्हे तो जमुना ॥ ५॥

पैरी १४ नग ६६ राग कालिंगरैरी गरबी ताल होरी ॥

१ हरीजस ॥

म्हारो मोहन पकर्‌यो हाथ म्हारा रै श्यामीकर छल बलनी बात ॥ टेर ॥ वीण बजाइ सखियां विलमाई ओ मोहन चलावे घात ॥ १ ॥ म्हारा रै श्यामी कर छलबल० ॥ १ ॥ आज लाज कूं मत लेवो मोहन म्हारै छोटी नंणदिया रो साथ ॥ २ ॥ म्हारा रै श्यामी० ॥ २ ॥ सासू हटीली म्हारी नणद चटीली आजो वे दिन और रात ॥ ३ ॥ म्हारा रै श्यामी ॥ ३ ॥ कहै वृजनारी सखियां सारी सुण तिरलोकीनाथ ॥ ४ ॥ म्हारा रै श्यामी कर ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश यूं भणत श्याम सखि मगन हुई घर जात ॥ ५ ॥ म्हारा रै श्यामी० ॥ ५ ॥

पैरी १४ नग ६७ राग कालिंगरा रंगत गरबी ताल होरी ॥

२ हरीजस ॥

म्हारा रे श्यामो ऊबो छै जमुना रे घाट । जिन रोक लिवी सब बाट ॥ टेर ॥ जमुना रो नीरां तीरां धेन चरावे ग्वाल बाल ले ठाट ॥ १ ॥ म्हारा रे श्यामो ऊबो० ॥ १ ॥ मोहन मेरी दुलरी तोरी ओ फोर्‌यो मही नो माट ॥ २ ॥ म्हारा रे श्यामो ऊबो० ॥२॥ कान्हा कपटी मारो झपटी ओ लीन्हो मही रो चाट ॥ ३ ॥ म्हारा रे श्यामो ॥ ३ ॥ मथुरा जायो न गोकुल आयो ओ रह्यो रे नंद घर फाट ॥ ४ ॥ म्हारा रे श्यामो० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश श्याम जमुना पै लो सखियन कूं लाट ॥ ५ ॥ म्हारा रे श्यामो० ॥५॥

पैरी १४ नग ६८ राग कालिंगरा रंगत गरबी ताल होरी ॥

३ हरीजस ॥

मोहन कूं हटको ए जसोधा मोहनकूं हटको । म्हारो फोर्‌यो मही नो मटको ।टेर। मोरे घर आवे धूम मचावै ओ भेम कियो नटको ।।१।। ए जसोधा मोहन० ।।१।। बंसी बजावै न तान सुनावै ओ कालजरै खटको ॥ २ ॥ ए जसोधा मोहन० ॥ २ ॥ झूंठी ग्वालन पालन आई थारै जोबन रो चटको ॥ ३ ॥ ए जसोधा० ॥ ३ ॥ म्हारो है मोहन बालो भोलो ख्याल खेल अटको ॥ ४ ॥ ए जसोधा० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश यूं भणत जसोधा म्हारै भर्‌यो छै मही नो मटको ॥ ५ ॥ ए जसोधा० ॥ ५ ॥

पैरी १४ नग ६९ राग कालिंगरा रंगत गरबी ताल खेरवो ॥

४ हरीजस ॥

ऊधोजी म्हारै मोहन मन बसियो । म्हारै हिवरो तणो रसियो ॥

हो ऊधो जी म्हारे ॥ टेर ॥ कुबजा सोक कंस की चेरी में । मन चितरो घसियो ॥ १ ॥ हो ऊधोजी० ॥ १ ॥ तज दियो देस दया नहिं आई । लोक देख हंसियो ॥ २ ॥ हो ऊधोजी० ॥ २ ॥ अन्न न भावे नींद न आवे । प्रेम पिया पसियो ॥ ३ ॥ हो ऊधोजी० ॥ ३ ॥ सूनी सेज सखी नहिं सोवे पिलङ्ग पर्यो कसियो ॥ ४ ॥ हो ऊधो जी० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणे सखि उद्धव मिलाय दे रसियो ॥ ५ ॥ हो ऊधोजी० ॥ ५ ॥

पैरी १४ नग ७० राग कालिंगरा रंगत गरबी ताल होरी ॥

५ हरीजस ॥

सुणो हे सखि । मंदिर में चालो । म्हारो रे श्यामी आयो छै नंद लालो ॥ टेर ॥ मोर मुकट की लटक चटक सिर आंख चले भालो ॥ १ ॥ म्हारो रे श्यामो० ॥ १ ॥ तिरभंगी बांक नांक नैनन की अंग रङ्ग को कालो ॥ २ ॥ म्हारो रे श्यामो० ॥ २ ॥ कह रहि सखियां तरसत अंखियां बृन्दाबन मांलो ॥ ३ ॥ म्हारो रे श्यामो० ॥ ३ ॥ सखि गई जोहन मिलगये मोहन दे प्यारी भालो ॥ ४ ॥ म्हारो रे श्यामो० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणत श्याम सूं महला में हालो ॥ ५ ॥ म्हारो रे श्यामो० ॥ ५ ॥

पैरी १५ नग ७१ राग भैरवी ताल होरी ॥

१ हरीजस ॥

मुरलिया काहे न गुमान भरी । थ नुं मोहन मुख पर धरी हे ॥ टेर ॥ जानूं जात जनम कुल भूमी हम सूं तूं क्युं अरी ॥ १ ॥ हे मुरलिया० ॥ १ ॥ बृन्दाबनकी सघन कुंजन मांड बांस काट लायो हरी॥

२ ॥ हे मुरलिया० ॥ २ ॥ छेदर सात सजन करदीना तूं बजै फूंक सूं परी ॥ ३ ॥ हे मुरलिया० ॥ ३ ॥ अब पटराणी भई प्रीतम की जद हम सूं तूं लरी ॥ ४ ॥ हे मुरलिया० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणै सब सखियां दारी हम सूं तूं रहिये डरी ॥ ५ ॥ हे मुरलिया० ॥ ५ ॥

पैरी १५ नग ७२ राग भैरवी ताल होरी ॥

२ हरीजस ॥

श्याम तेरी मुकट लटक मनमोह्या । मैं बन बृन्दाबन जोया ॥ टेर ॥ चितकूं चोर ओढ़ गूंघटदे श्याम नजरभर जोया ॥१॥ श्याम तेरी० ॥१॥लुकट मुकट मकराकृत कुंडल मुरली मोती पोया ॥२॥ श्याम तेरी० ॥ २ ॥ नैनां का अंजर चल रह्या खंजर तन मन व्याकुल हुया ॥ ३ ॥ श्याम तेरी० ॥ ३ ॥ त्रिभंगी बांक नांक नैनन की देख पापकूं खोया ॥ ४ ॥ श्याम तेरी० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणत श्याम छिब देख नैन कूं धोया ॥ ५ ॥ श्याम तेरी० ॥ ५ ॥

पैरी १५ नग ७३ राग भैरवी ताल होरी ॥

३ हरीजस ॥

श्याम तूं दूध । को दामनगीर । क्या जाने पर पीर ॥ टेर ॥ मही की मटकी शिर सूं पटकी । भीज गया तन चीर ॥ १ ॥ श्याम तूं० ॥ १ ॥ जरकस साड़ी कोर किनारी । कर दिवी भीरम भीर ॥ २ ॥ श्याम तूं० ॥ २ ॥ कंस पुकारूं डाणा उकारूं । जदे धरे जियाधीर ॥ ३ ॥ श्याम तूं० ॥ ३ ॥ सुण नंदलाला लै गुंजमाला । छोड बहियां दिलगीर ॥ ४ ॥ श्याम० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणै सब सखियां । खेलत लाल बल वीर ॥ ५ ॥ श्याम तूं० ॥ ५ ॥

पैरी १५ नग ७४ राग भैरवी ताल होरी ॥

४ हरीजस ॥

उड़ जा रे तूं बन रा काग । म्हारे पिया नीं मिलणरी लाग रे ॥ टेर ॥ कुबजा सोक सजन मोह लीना डसज्यो कालो नाग रे ॥ १ ॥ उड़ जा० ॥ १ ॥ प्रीतम पास जाय तूं कहियो जलत सखी विरह आग रे ॥ २ ॥ उड़ जा० ॥ २ ॥ सोने री चूंच चुगाऊं दाड़म रम दाखन के बागरे ॥ ३ ॥ उड़ जा० ॥ ३ ॥ माखन मिसरी खवाऊं तुझ कूं रीझ भींज कहूं आगरे ॥ ४ ॥ उड़ जा० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणे सब सखियां पीव मिला दे काग रे ॥ ५ ॥ उड़जा० ॥ ५ ॥

पैरी १५ नग ७५ राग भैरवी ताल होरी ॥

५ हरीजस ॥

सखी जाऊंगी पिया जू के देस । मैं कर जोगिया का भेस रे ॥ टेर ॥ लहंगा लंगोट पहन गल कफनी । जटा खोल देउं केस रे ॥ १ ॥ मैं तो जाऊंगी ॥ १ ॥ सरवण फार धार मृगछाला डंड कमंडल ल्हेस रे ॥ २ ॥ मैं तो जाऊंगी० ॥ २॥ पहर पावरी बनूं बावरी कहूं जंगल की ऐस रे ॥ ३ ॥ मैं तो जाऊंगी० ॥ ३ ॥ सिंगी नाद आद कर हरकूं जाऊं द्वारका पैस रे ॥ ४ ॥ मैं तो जाऊंगी० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणे सखि बिछड़ी धाल गले मांय शेष रे ॥ ५ ॥ मैं तो जाऊंगी ॥ ५ ॥

पैरी १६ नग ७६ पंचरंगी ।

१ हरीजस । ठूमरी राग तिलंगी ताल पंजाबी ठेको ।

वजी तो जमुना बैरण बंसुरी । इण सांवरिये की दमक चमक

देखूं दूखे पसुरी ॥ टेर ॥ ग्वालन भूली सुध बुध घर की चलीरी सीख मुरली बजे हर की। अधुर मधुर बजे छननन छननन पग पायल कसुरी ॥१॥ बजी रे जमु० ॥ १ ॥ समभी सैन बैन कहै सखियां बिन मिलिया तलफत जिया अखियां रमक ठमंक चली फननन फननन दे घूमर हुंमुरी ॥ २ ॥ बजी रे जमुना० ॥ २ ॥ त्रिभंगी बांक नांक नैनन की करी कृष्ण जुगती बैनन की। ग्वाल बाल फिरे गननन गननन पकर सखी न धसुरी ॥ ३ ॥ बजी रे जमुना० ॥ ३॥ सजनी काम श्याम घटा आई। ज्यूं बिजली कामण मद छाई। रिम भिम पावन सननन सननन भीजी प्रेम ससुरी ॥ ४ ॥ बजी रे जमुना० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश रमै गिरधारी षट दश सहस राधका प्यारी। मोहन जोवेरे मोहे भननन भननन सखी बदन तसुरी ॥ ५ ॥ बजी रे जमुना० ॥ ५ ॥

पैरी १६ नग ७७ ॥

रंगत रेखूता राग तिलंग ताल होरी ॥

२ हरीजस ॥

उधो सुन बृन्दाबन वासी। कृष्ण कुंजन मांय कब आसी ॥ टेर ॥ सुणोरी श्याम अबिनासी प्यारी गल प्रेम पडी पासी। करै सब लोक विरज हांसी कृष्ण घर में घाली दासी ॥ १ ॥ उधो सुन० ॥ १ ॥ पिया बिन प्राण निकस जासी नीर बिना मीन पावे त्रासी। मेरे नहिं सजन बिना थासी श्याम सूरत कब दिखलासी ॥ २ ॥ उधो सुन० ॥ २ ॥ विरह तन रोग भई खासी आंगली रेख गिणत घासी। तजूं सिणगार सेउं कासी फिरूं विरकत होय सन्न्यासी ॥ ३ ॥ उधो सुन० ॥ ३ ॥ कृष्ण करुणा सुण अबिनाशी मिले राधे भइ सुखराशी। ये गिरधरगणेश गुण गासी रमै रसराज सखी दासी ॥ ४ ॥ उधो सुन० ॥ ४ ॥

पैरी १६ नग ७८ ॥

हिंडोरो । राग सोरठ मलार ताल झूमरा ॥

३ हरीजस ॥

हिंडोरै है झूलै जुगल किशोर ॥ टेर ॥ बृन्दाबन तन सघन कुं-जन मांय । बोलत दादुर मोर ॥ १ ॥ है हिंडोरै है० ॥ १ ॥ चम्पाफूल झूलना जाली । गूंथ गुलावी डोर ॥ २ ॥ है हिंडोरै है० ॥ २ ॥ अतरदान पान मुख प्यारी । त्यारी करी नखकोर ॥ ३ ॥ है हिंडोरै है० ॥ ३ ॥ रमती हसै बूंदां बरसै छायो जवानीरो जोर ॥ ४ ॥ है हिंडोरै है० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश बणै अलबेला नागरनन्दजू के छोर ॥ ५ ॥ है हिंडोरै है० ॥ ५ ॥

पैरी १६ नग ७९ गरवी राग कलिंगरा ताल खैरवो ॥

४ हरीजस ॥

है जी जागो जागो रसराज रजनी नांय नांय नांयरे । हो पिया पणियारण पाणी जायरे ॥ टेर ॥ सारंग की जोत झिलमिल भई रवि भान किरण उद बुद थई । हेजी शशी छिप्यो है गगन कैरे मांयरे ॥१॥ हो पिया० ॥१॥ चिड़ियन को शबद सुनतो रही कररहे हैं किलोल पंछी कोई । है जी कंवल खुल्यो जमुना जल मांय रे ॥२॥ हो पिया० ॥२॥ चकवो चकवे के भेलो थई ग्वालन निकसी रे वेचन मही । है जी म्हारा मोती नथनी को ज्योतो नांय नांय नांय रे ॥३॥ हो पिया ॥३॥ है जी पिया दांतण झारी तो हाथां लई बृखभान जगावे श्याम ताई । तेरा गुण गिरधर गणेश जस गाय गाय गाय रे ॥ ४ ॥ हो पिया० ॥ ४ ॥

पैरी १६ नग ८० राग होरी काफी ताल होरी ॥

५ हरीजस ॥

जोबन झुर रह्यो रै जमारो । पिया परदेश हमारो ॥ टेर ॥ जोबन जोर शोर सुण सजनी । तन मन कर रह्यो आरो । तलफत जिया रे पिया घर नांहीं । मेरो नहीं कछू सारो । कृष्ण देवे कब वारो ॥ १ ॥ जोबन० ॥ १ ॥ लग रहि आंख सोक कुबजा सूं । श्याम भयो धूतारो । झुर रहि बिरज धीरज नहिं धरती । लाल बिना लाचारो । जाऊं बन कै बनजारो ॥ २ ॥ जोबन० ॥ २ ॥ सुण पतियां गतियां घट माहीं । खान पान लगे खारो । तज जेवर तेवर अब किन को । बिनारे मोत क्यूं मारो । श्याम कुबजारो तज लारो ॥ ३ ॥ जोवन० ॥ ३ ॥ जमुना सूखी । भूखी गउवां छोड़ दियो मुखचारो । गिरधरगणेश भणे मोहन सूं । सुणतां हो बेग पधारो । राधे सज रही सिणगारो ॥ ४ ॥ जोबन० ॥ ४ ॥

पैरी १७ नग ८१ ॥

रंगत गज़ल राग खम्माच ताल खेरवो ॥

१ हरीजस ॥

एक सुंदर चंचल गूजरी बेचन चली मही । कुंजन में फिरती कामिनी करती लेओ दही ॥ टेर ॥ नख चख सिणगार सज सुंदरी, करती थई थई । सुख माल चाल हंस की । जल मीन सी गई ॥ १ ॥ एक सुंदर चंचल० ॥ १ ॥ कर जोर शोर सुंदरी, रिम झिम फिरती रही । लुड़ती लट पट सी नागनी, बृन्दाबन में वही ॥ २ ॥ एक सुन्दर चंचल ॥ २ ॥ नंदलाल चाल देखकै दौ दरबड़ी सही । मिल ग्वाल वाल सांवरो, लंकी पकरो वही ॥ ३ ॥ एक सुंदर चंचल० ॥ ३ ॥ रसराज लाज

ले मती परती, सजनी पई । गिरधरगणेश । गोपाल लाल लूटी मथनी दही ॥ ४ ॥ एक सुन्दर चंचल० ॥ ४ ॥

पैरी १७ नग ८२ ॥

रंगत गज़ल राग खम्माच ताल खैरवो ॥

२ हरीजस ॥

सुण श्याम जाम नन्द का, जाने दे मुझे हरी । हूं गरीब ग्वालन, परती पइयां मैं घरी घरी ॥ टेर ॥ नद दध ले कुंजन में जाती, फिर फिर पेट भरी । तूं मेरो दही मही ढोर दियो । गल गरीब छुरी करी ॥ १ ॥ सुण श्याम जाम० ॥ १ ॥ गघरी फोरी न दुलरी तोरी, लागी चोट नरी । सुन्दर चुन्दर लहँगा चोली । फारी खैंच जरी ॥ २ ॥ सुणश्याम जाम० ॥ २ ॥ घर पर जाऊं क्या बतलाऊं । रोती आंख भरी । सुध बुध भूली सासू की सूली । बैरण विपत परी ॥ ३ ॥ सुण श्याम जाम० ॥ ३ ॥ नंदलाल हाल समझकें । त्यारी करदिवो हरी । गिरधरगणेश यूं भणे, सखी घर आती इन्द्रपरी ॥ ४ ॥ सुण श्याम जाम ॥ ४ ॥

पैरी १७ नग ८३ ॥

राग बरवा ताल खैरवो ॥

३ हरीजस ॥

तोरे दरस बिना मोरा जिया तरसे ॥१॥ टेर ॥ मोर मुकट की लटक चटक पे । नेम प्रेम अंखियां बरसे ॥ १ ॥ तोरे दरस० ॥ १ ॥ सासू हटोली म्हारी नणद चटीली । या रोक टोक करती घरसे ॥ २ ॥ तोरे दरस० ॥ २ ॥ अन्न न भावे नींद न आवे । रीत प्रीत बांधी हरसे ॥ ३ ॥

तेरे दरश ॥ ३ ॥ गिरधरगणेश भणै सखि प्यारी । यारो करण निकसो घर वै ॥ ४ ॥ तेरे दरश बिना० ॥ ४ ॥

पैरी १७ नग ८४ ॥

राग बरवो ताल खैरवो ॥

४ हरीजस ॥

चलो श्याम सुंदर ढूंढण प्यारी । चलो श्याम सुंदर ढूंढण प्यारी ॥ टेर ॥ नख चख साज, लाज गूंघट को । बदन खुल्यो केसर क्यारी ॥ १ ॥ चलो श्याम सुंदर ॥ १ ॥ धर शिर गगरी सखियां सगरी । रमक झमक कर लो त्यारी ॥ २ ॥ चलो श्याम सुंदर० ॥ २ ॥ कुंजन श्याम जाम नंद जी को । सखी बदन कीन्हो यारी ॥ चलो श्याम सुदर० ॥ ३ ॥ गिरधरगणेश भणै बृजनारी । यारी कर घर कूं जारी ॥ ४ ॥ चलो श्याम सुंदर० ॥ ४ ॥

पैरी १७ नग ८५ ॥

राग देश ताल खैरवो ॥

५ हरीजस ॥

सिवर जगथंब जननी सुखदाई । देवै मन वंछत फल भाई ॥ टेर ॥ उद बुंद सुंदर अंकास चुन्दर भाण कोट रसनाई । असुरन नेवर जेवर सुर के प्रहर बदन में धाई ॥ १ ॥ सिंवर० ॥ १ ॥ सिद्द चंडि शेष महेस मुरारी अगुआ दोनू भाई । ब्रह्मा पूजन करै धरै सब ध्यान जान् मम्माई ॥ २ ॥ सिंवर० ॥ २ ॥ असुरन मार तार भक्तन कूं अमृत धारा पाई । ऐसे ही रूप अरूप अंबिका देती है दिखलाई ॥ ३ ॥ सिंवर० ॥ ३ ॥ निंहचै सजन भजन कर याको मांगे सो मिलजाई । गिरधरगणेश भणै असतूतो अनुभव कर के गाई ॥ ४ ॥ सिंवर० ॥ ४ ॥

भक्त पचीसी ॥

पैरी १८ नग ८६ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

१ हरीजस ॥

नाच गन गवरी के नन्दा । शिर तिलक भाल चन्दा ॥ टेर ॥ बागो वेष केस गूघरवा । मोतियन माल बैजन्दा ॥ १ ॥ नाच गन० ॥ १ ॥ एक दंत दूजो दयावन्त है । लडुवा खात मुकन्दा ॥ २ ॥ नाच गन० ॥ २ ॥ रिद्धी सिद्धी संग में सेवै । भक्तन के शिर बिन्दा ॥ ३ ॥ नाच गन० ॥ ३ ॥ सृष्टी सारी ध्यावे नर नारी । लाभ होय बोह धन्दा ॥ ४ ॥ नाच गन ० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणै गणपत कूं । काट जगत का फन्दा० ॥ ५ ॥ नाच गन० ॥ ५ ॥

पैरी १८ नग ८६ राग भैरवी ताल खेरवो ॥

२ हरीजस ॥

हम इष्ट हमारा ध्यावें । और दाय नहिं आवै ॥ टेर ॥ पिछली रात हात सेवा कर । पीछे भोजन पावै ॥ १ ॥ हम इष्ट० ॥ १ ॥ पुस्तक बांचे हर ने जांचे और कहीं न जावे ॥ २ ॥ हम० ॥ २ ॥ भैरव पीर मीर मेहरम बोह । हम नहिं सीस निवावै ॥ ३ ॥ हम इष्ट० ॥ ३ ॥ वाद विवाद याद नहिं हम कूं । हर दम गम कूं खावै ॥४॥ हम इष्ट० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणै भव सागर रहते सदा निरदावै ॥ ५ ॥ हम इष्ट० ॥ ५ ॥

पैरी १८ नग ८८ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

३ हरीजस ॥

हम करें कृष्ण की सेवा । तब पावेंगे निज मेवा ॥ टेर ॥ काया नगरी में त्यारी सगरी । मंदिर अंदर देवा ॥ १ ॥ हम करें० ॥ १ ॥ हरिजसधारा सूं अंग धोय डारा । जाप साफ कर नेवा ॥ २ ॥ हम करें० ॥ २ ॥ करयो केसर चढि परमेश्वर । प्रेम पुष्प मन मेवा ॥ ३ ॥ हम करें० ॥ ३ ॥ मेहरम मुकट लुकट हाथन में । ज्ञान गह्या पैरेवा ॥ ४ ॥ हम करें० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भयो घट भीतर । इस विध करता सेवा ॥ ५ ॥ हम करें० ॥ ५ ॥

पैरी १८ नग ८९ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

४ हरीजस ॥

जब उलट गया दिल प्रेमा । तब रह्या नहीं कछु नेमा ॥ टेर ॥ नहिं कछु खाना नहिं कछु पीना । हो गया ठंढा हेमा ॥ १ ॥ जब उलट० ॥ १ ॥ छकिया डोले मुख सैं न बोले । प्रीत लगी घनशामा ॥ २ ॥ जब उलट० ॥ ३ ॥ प्रीत पकी री तब फूल फकीरी । हुया जगत बे कामा ॥ ३ ॥ जब उलट० ॥ ३ ॥ तखत हजारा मुलक बजारा । त्याग दिया धन धामा ॥ ४ ॥ जब उलट० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भयो भवसागर । वे मस्त किया जगनामा ॥ ५ ॥ जब उलट० ॥ ५ ॥

पैरी १८ नग ९० राग भैरवी ताल पंजावी ठेको ॥

५ हरीजस ॥

तू तो मेंडा यार मिला दिलजानी । मेंने अंग रमाई वानी ॥ टेर ॥

देश देश और मुलक मुलक में । पाई नहीं तोरी श्यानी ॥ १ ॥ तू तो मेंडा० ॥ १ ॥ जग की आस बास सब तज दी । लाभ हुवो चाहे हानी ॥ २ ॥ तू तो मेडा ॥ २ ॥ चाहे मार तार या जग में । तेरी सुरत मन मानी ॥ ३ ॥ तू तो मेडा० ॥ ३ ॥ सुणिये श्याम काम जलदी का । पलो निखी हूं छानी ॥ ४ ॥ तू तो मेंडा० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणे श्याम सूं । हूं जाचक तूं दानी ॥ ५ ॥ तू तो मेंडा० ॥ ५ ॥

पैरी १९ नग ९१ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

१हरीजस ॥

भरोसो भक्त बिछल प्रभु तेरो । हूं चरणन को चेरो ॥ टेर ॥ श्री वृजनन्दन चन्द चांदनी । तुझ बिन घोर अंधेरो ॥ १ ॥ भरोसो भक्त० ॥ १ ॥ दिन नहिं चैन रैन नहि निन्द्रा । मोह चक्कर आय घेरो ॥ २ ॥ भरोसो भक्त० ॥ २ ॥ जीना मरना डरना छिन २ । इनं को करदे निवेरो ॥ ३ ॥ भरोसो भक्त० ॥ ३ ॥ तूं है देव सेव हूं सांचो । मुलक घाट घर हेरो ॥ ४ ॥ भरोसो भक्त० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणे श्याम सूं । जलदी काज कर मेरो ॥ ५ ॥ भरोसो भक्त० ॥ ५ ॥

पैरी १९ नग ९२ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

२ हरीजस ॥

अब श्याम चुका दे मेरो । या बहुत दिनों को फेरो ॥ टेर ॥ मनुष हाजरां को देत बाजरो । तुझ घर क्यूं या देरो ॥ १ ॥ अब श्याम० ॥ १ ॥ तुझ कूं ध्याया भूंडा ना, चाया । तूंही श्याम भया

वैरी ॥ २ ॥ अब श्याम० ॥ २ ॥ गोपीनाथ बात सुण मेरी । काट करम की बेरी ॥ ३ ॥ अब श्याम० ॥ ३ ॥ हूं निरी आस पास परभू के । लिख लिख अरजी गेरी ॥ ४ ॥ अब श्याम० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणै श्याम कांई । तुम्ह घर रैन अंधेरी ॥ अब श्याम ॥ ५ ॥

पैरी १९ नग १३ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

३ हरीजस ॥

हरी तूं सूतो छै कै जागै । अब भगतां सूं क्यूं भागै ॥ टेर ॥ क्या ऐसी भीर परी हरि तुम्ह में । बंद्यो खाट के पागै ॥ १ ॥ हरी तूं ॥ १ ॥ कै कोइ आयो असुर ले धायो । कै बंद्यो सत्य के धागै ॥ २ ॥ हरी तूं० ॥ २ ॥ कै भयो दूलो मारग भूलो । कै कोइ रामत लागै ॥ ३ ॥ हरी तूं० ॥ ३ ॥ कै सरमायो निंजर न आयो । लारै नहीं ना आगै ॥ ४ ॥ हरी तूं० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणै श्याम में चूक परी छै सागै ॥ ५ ॥ हरी तूं० ॥ ५ ॥

पैरी १९ नग १४ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

४ हरीजस ॥

हरी का बिगारो थारो । क्युं मुम्ह पै संकट डारो ॥ टेर ॥ जसवत जायो नरसी रै धायो । विष पियो मेड़तणी रो खारो ॥ १ ॥ हरी का० ॥ १ ॥ द्रोपदी भीर तै चीर बदायो । सजन कसाई तारो ॥ २ ॥ हरी का० ॥ २ ॥ सेणै को नाई थनूं सरम न आई । धन दियो धनै नें चारो ॥ ३ ॥ हरी का० ॥ ३ ॥ सब कछु किया आगै जस लीया । अब नहिं तेरो सारो० ॥ ४ ॥ हरी का० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणै श्याम तेरो मात तात नहिं मारो ॥ ५ ॥ हरी का० ॥ ५ ॥

पैरी १९ नग ९५ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

५ हरीजस ॥

क्यूं मुझपें अंखियां काडेरे । हम नहीं पागरा छांडे ॥ टेर ॥ तूं जो रुठै तांई प्रीत न टूटै । चाहे सूली चाडे रे ॥ १ ॥ हम नहीं० ॥ १ ॥ चाहे नफा सफा कर डारे । चाहे दुबले कर जाडे रे ॥ २ ॥ हम नहीं० ॥ २ ॥ चाहे रख भूखा टुकरा सूखा । चाहे जिमादे माडे रे ॥ ३ ॥ हम नहीं० ॥ ३ ॥ चाहे कष्ट भ्रष्ट कर डारे । चाहे स्त्री सुंदर लाडे रे ॥ ४ ॥ हम नहीं० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भयो श्याम सूं । चाहे गज हसतो पाडे रे ॥ ५ ॥ हम नहीं० ॥ ५ ॥

पैरी २० नग ९६ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

१ हरीजस ॥

हम तज्यो जगत को दावो हरी । भाग कहां तुम जावो ॥ टेर ॥ लात जताओ क्यूं पीठ बतावो । मती गमावो मावो रे ॥ १ ॥ हरी भाग० ॥ १ ॥ प्रीत की रीत निबाहो मोहन । लोक काढसी कावो रे ॥ २ ॥ हरी भाग० ॥ २ ॥ सुणियो श्यामी अंतरजामी । मती चुकावो सावो रे ॥ ३ ॥ हरी भाग० ॥ ३ ॥ आगे काज राज सब कीना । अब क्यूं चोंदी चावो रे ॥ ४ ॥ हरी भाग० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भयो श्याम सूं । अब जलदी सूं आवो रे ॥ ५ ॥ हरी भाग० ॥ ५ ॥

पैरी २० नग ९७ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

२ हरीजस ॥

हरी तुम कह्यो हमारो कीजे । तूं भगतां को जस लीजे ॥ टेर ॥

जे कोइ सरण मरण डर नांहीं । जिन कूं पीठ न दीजे ॥ १ ॥ हरी तुम० ॥ १ ॥ पहली प्यार यार कर बैठा । अब क्यूं मुज पें खीजे ॥ २ ॥ हरी तुम० ॥ २ ॥ बिना बुलावे दौर न जावे । हम सूं क्यूं नहिं धीजे ॥ ३ ॥ हरी तुम ॥ ३ ॥ कपटी हरियो घर घर फिरियो । अब कांइ मेह सूं भीजे० ॥ ४ ॥ हरी तुम० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणे श्याम सूं । खाली आदण सीजे ॥ ५ ॥ हरी तुम० ॥ ५ ॥

पैरी २० नग १८ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

३ हरीजस ॥

नहिं फेरे हुकम हरि पाछो । है मित्र हमारो सांचो ॥ टेर ॥ रण में सूरो दानो पूरो । भोर पर्‌यां नहिं काचो ॥ १ ॥ है मित्र० १ ॥ भगतन बोहरो समझै मेरो । जिन सूं पल पल जांचो ॥ २ ॥ है मित्र० ॥ २ ॥ बन बन जावे धेन चरावे । सखी सांग कर नांचो ॥ ३ ॥ है मित्र० ॥ ३ ॥ वो गिरधारी बुध है भारी । रह जसवत को लाचो ॥ ४ ॥ है मित्र० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणे श्याम सूं याद आगली जांचो ॥ ५ ॥ है मित्र० ॥ ५ ॥

पैरी २० नग १९ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

४ हरीजस ॥

मिलजा रे बृन्दाबनबासी । थारी लोग करै छै हासी रे ॥ टेर ॥ तज दी नगरी मैं हुरमत सगरी । परी है प्रेम की पासी रे ॥ १ ॥ मिलजा० ॥ १ ॥ गोकुल जोयो तनु घर घर रोयो । ढूंढ लिवी है कासी रे ॥ २ ॥ मिल जा० ॥ २ ॥ हरदम जपियो कां तूं छिपियो । बाज रह्यो अविनाशी रे ॥ ३ ॥ मिल जा० ॥ ३ ॥ कपट आप के दोय बाप को । घर

में घाली दासी रे ॥ ४ ॥ मिल जा० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणे श्याम मिलियां सूं दुरमत जासी रे ॥ ५ ॥ मिल जा० ॥ ५ ॥

पैरी २० नग १०० राग भैरवी ताल पंजावीठेको ॥

५ हरीजस ॥

अब देवो कृष्ण जी झांकी । ये अखियां तरसत म्हाकी रे ॥ टेर ॥ मकरी ज्यूं तार यार सूं लागी । जदया प्रोतज पाकी रे ॥ १ ॥ अब देवो० ॥ १ ॥ अब क्या डरना हर सूं लड़ना । क्या मरजी है थाकी रे ॥ २ ॥ अब देवो० ॥ २ ॥ अब तो बगत सगत आय पोछी । रेवैनहिं कछु बाकी रे ॥ ३ ॥ अब देवो० ॥ ३ ॥ दिल जो पेठा हो गया सैंठा । लगी लगन की नाको रे ॥ ४ ॥ अब देवो० ॥ ४ ॥ गिरधर गणेश भणे श्याम सूं जद ये कविता भाकी रे ॥ ५ ॥ अब देवो० ॥ ५ ॥

पैरी २१ नग १०१ राग भैरवी ताल पंजावी ठेको ॥

१ हरीजस ॥

कोइ मिलादो गोपीनाथा । वासूं करणी हैं दोय वाता । टेर । बृजबन भूमी वसता स्वामी जाको जादव जाता ॥ १ ॥ कोइ मिला दो० ॥ १ ॥ मथुरा जायो गोकुल आयो । श्याम सुन्दर है गाता ॥ २ ॥ कोइ मिला दो० ॥ २ ॥ नन्द को ढोटो हलधर सूं छोटो । जणियो जसवत माता ॥ ३ ॥ कोइ मिलादो० ॥३॥ चारत धेना वजावत वेना । वो भगतां को दाता ॥ ४ ॥ कोइ मिलादो० ॥४॥ गिरधरगणेश भणे श्याम मिलियां में सुख होय साता ॥ ५ ॥ कोइ मिलादो० ॥ ५ ॥

पैरी २१ नग १०२ राग भैरवी ताल पंजावी ठेको ॥

२ हरीजस ॥

हम सूरत सुपने पाई । वा छिब निजर न आई ॥ टेर ॥ अंग रंग श्याम नाम गिरधारी । मधुरी सी वेनु बजाई ॥ १ ॥ हम सूरत० ॥ १ ॥ कुंडल मुकट लुकट हाथन में । राग भैरवी गाई ॥ २ ॥ हम सूरत० ॥ २ ॥ मोतियन गहना क्या छिब कहना । भान कोट सुस नाई ॥ ३ ॥ हम सुरत० ॥ ३ ॥ नारी रूप भूप बहु देखे वा सूरत नहिं कांई ॥ ४ ॥ हम सूरत० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणै श्याम कूं । जणिया जसवत माई ॥ ५ ॥ हम सुरत० ॥ ५ ॥

पैरी २१ नग १०३ राग भैरवी ताल पंजावी ठेको ॥

३ हरीजस ॥

अब भटक भटक चित हारा । नहिं पाया दरशण थारा ॥ टेर ॥ धरम अचारा शुभ करम बिचारा । परस्या तीरथ सारा ॥ १ ॥ नहिं पाया ॥ १ ॥ मूड मुडाया कोइ केस बधाया । न्हाया त्रिवणी धारा ॥ २ ॥ नहिं पाया० ॥ २ ॥ रमाई बानी हो गये ध्यानी गया अज्ञानी मारा ॥ ३ ॥ नहिं पाया० ॥ ३ ॥ पत्थर देवा झूठी सेवा । लागत है जग खारा ॥ ४ ॥ नहिं पाया० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणै घट भीतर । सुरत लगी इकतारा ॥ ५ ॥ नहिं पाया० ॥ ५ ॥

पैरी २१ नग १०४ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

४ हरीजस ॥

मिल गया घट भीतर मादू । वां बज रह्या अनहद नादू ॥ टेर ॥ औघट सेरी चढ़े गुरगमे पेरी । मिट्या भरम का जादू रे ॥ १ ॥

मिल गया ॥ १ ॥ कोयल सोरा बोलत मोरा । वरसत सावण भादू रे ॥ २ ॥ मिल गया० ॥ २ ॥ सूक्षम थूल मूल है कारण । तुरिया वस्तु अनादू रे ॥ ३ ॥ मिल गया० ॥ ३ ॥ निरगुण नूरा सब घट पूरा । सूरा नहीं है सादू रे ॥ ४ ॥ मिल गया० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भयो घट भीतर हो गइ निश्चे आदू रे ॥ ५ ॥ मिल गया० ॥ ५ ॥

पैरी २१ नग १०५ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

५ हरीजस ॥

पहली अपना कर क्यूं रखिया । अब श्याम चुरावत अंखिया ॥ टेर ॥ कायर वण चाहे सायर बणजा । चाहे निरधन दानी छकि-या ॥ १ ॥ पहली अपना० ॥ १ ॥ चाहे देव सेव तुं बणजा । चाहे गोपीनाथ बण सखिया ॥ २ ॥ पहली अपना० ॥ २ ॥ तू होय सर-ण चरण चाहे रख ले । तूं फकीर के साइ गादी तकिया ॥ ३ ॥ प-हली अपना० ॥ ३ ॥ सुखिया बन चाहे दुखिया बन जा । चाहे सठ पंडित दिखिया ॥ ४ ॥ पहली अपना० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भयो श्याम सूं । दे जवाब कर लिखिया ॥ ५ ॥ पहली अपना० ॥ ५ ॥

पैरी २२ नग १०६ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

१ हरीजस । जबाब कृष्ण का ॥

जरा धीरज धरिये सादू । मैं सब लायक हूं मादू ॥ टेर ॥ भगत प्रहलाद जगत में हासो । पुत्र पिता के बिबादू ॥ १ ॥ जरा धीरज ॥ १ ॥ समय सदामा फिरत वेदामा । बजत निसाणा नादू ॥ २ ॥ जरा० ॥ २ ॥ हार्यो दल मेरो मैं भयो रणचोरो । या समय समझ

ले अनादू ॥ ३ ॥ जरा धीरज० ॥ ३ ॥ सुर को जीत हार असुरन की । दल मार मार खपायो हूं मादू ॥ ४ ॥ जरा धीरज ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भयो हरी सब कुछ करूं तो असल हूं जादू ॥ ५ ॥ जरा धीरज० ॥ ५ ॥

पैरी २२ नग १०७ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

२ हरीजस । जबाब भगत का ॥

जब का किरियोवर तेरो । वा समै काज करै मेरो ॥ टेर ॥ समै का वायक तू नहिं लायक । देव नहीं तो हूं चेरो ॥ १ ॥ जब का० ॥ १ ॥ भीर में धीर देवै सो प्यारो । पीछे धूर अमोरी में गेरो ॥ २ ॥ जग का० ॥ २ ॥ थोरा सा काम श्याम कर जलदी । मन में देले फेरो ॥ ३ ॥ जब का० ॥ ३ ॥ लिख लिख थकिया झूठा ही भकिया । तु कांना सू बेरो ॥ ४ ॥ जग का ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भयो श्याम सूं तेरे हि द्वारे डेरो रे ॥ ५ ॥ जब का० ॥ ५ ॥

पैरी २२ नग १०८ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

३ हरीजस । जबाव कृष्ण का ॥

तेरो काज करूं तो गिरधारी । नहिं तो जावे हुरमत म्हारी ॥ टेर ॥ ग्राह गज हसती री उतरी मस्ती । हूं भयो अरज सुणारी ॥ १ ॥ नहिं तो० ॥ १ ॥ द्रोपदि भीर में चीर दुसासन खैंच बधाई मैं सारी ॥ २ ॥ नहिं तो० ॥ २ ॥ पांचो पिंड इंड भारत में । तोर घंट कूं डारी ॥ ३ ॥ नहिं तो० ॥ ३ ॥ मैं हूं दास पास भगतां के हुकम हलप शिरधारी ॥ ४ ॥ नहिं तो० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भयो हरि मुझ कूं कोड़ भगत की गारी ॥ ५ ॥ नहिं तो० ॥ ५ ॥

पैरी २२ नग १०९ राग भैरवी ताल पंजाबी ठेको ॥

४ हरीजस ॥ जवाब दोनों का ॥

आय मिल गये श्याम सुजाना । शिर मोर मुकट धर वाना ॥ टेर॥ ये ले जोग भोग ले सब कुछ । मत देओ मरम का ताना ॥ १ ॥ आय मिल० ॥ १ ॥ करिय माफ आप तकसीरा । हूं बालक तुम दाना ॥ २ ॥ आय मिल० ॥ २ ॥ भगत बिहारी की कर सब त्यारी । मातोंरा वधाई श्याना ॥ ३ ॥ आय मिल० ॥ ३ ॥ हो गया राज पाट भगतां का । जस सुण लीज्यो काना ॥ ४ ॥ आय मिल० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश हरी आपस में होगये अंतरध्याना ॥ ५ ॥ आय मिल० ॥५ ॥

पैरी २२नग ११० राग भैरवीं ताल पंजाबी ठेको ॥

५ हरीजस ॥

या भक्त पचीसी गावे । सो नर परम पदारथ पावे ॥ टेर ॥ पापां का चूरा होय वरसत नूरा । दुख दालिद्र जावे ॥ १ ॥ या भक्त० ॥ १ ॥ घर वहु वसतो घूमत हसतो । झटके लछमी आवे ॥ २ ॥ या भक्त० ॥ २ ॥ दान जो देता वहुजस लेता । मन वांछत फल पावे ॥ ३ ॥ या भक्त० ॥ ३ ॥ करिये पाठ टाठ होय घर में सतगुरु यूं फुरमावे ॥ ४ ॥ या भक्त० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भणे भवसागर । फेर जनम नहिं आवे ॥ ५ ॥ या भक्त० ॥ ५ ॥

निरगुण निष्फन्द ॥

पैरी २४ लावणी तथा हरिजस भजन गानविद्या । नग १२० ॥

पैरी १ नग १ उपदेश पैरी ॥

धर्मपचीसी ॥

१ लावणी ओ३म्‌कार की रंगत लंगड़ी ताल खैरवो ॥

ओ३म्‌ सत चित आनन्द सच्चिदानन्द सर्व सृष्टीका मूल । ओ३म्‌-कार कूं, रटत है ऋषी मुनी सब जोगेसूर ॥ टेर ॥ अवल बणया अकार रजोगुण, ब्रह्मा ने उत्पन कीना । होताई ब्रह्मा पढ़त हैं वेद हाथ में धर लीना ॥ उकार से उपजे है विष्णू श्याम सतोगुण रङ्ग भीना । मकार महेश्वरा तामसी रूप धार दरशण दीना ॥ अर्द्धमात्रा मूल खुल्या यह फूल तीन उपजे आंकूर ॥ १ ॥ ओ३म्‌कार कूं० ॥ १ ॥ लेके हुकम ब्रह्मा सृष्टी कूं रची रजोगुण की माया । तीन लोकका रच्या ब्रह्मण्ड पिण्ड सुंदर काया ॥ तेतीस क्रोड़ हुये दई देवता ओ३म्‌कार का जस गाया । थावर जङ्गम, सबी के ओ३म्‌कार हिरदै भाया ॥ ओ३म्‌कार है अलख रटत हैं खलक मँाय बरसत है नूर ॥ २ ॥ ओ३म्‌कार कूं० ॥ २ ॥ लेके हुकम विष्णू जो पालना करी सतोगुण संसारी । संहस तरह की रचीहै खाने पीने की त्यारी ॥ अमरापुर में अमृत कीन्हा मृत्युलोक अन के अहारी । पताल-मांही खावते मास असुर नर गु-लजारी ॥ विष्णू जो पालना करी नांव है हरी भक्त को टाले सूर ॥ ३॥ ओ३म्‌कार० ॥ ३ ॥ लेके हुकम यह महेश मन में तमोगुणी दृष्टी ला-

या । तीन लोक के, जीवन कूं पकर आप पल में खाया ॥ सोहं शक्ती मांय महेश्वर त्याग दिवी अपनी काया । पिंड ब्रह्मण्ड की, उत्पती परले कैही सुण भाया ॥ गिरधरगणेश यूं भणै समझ नर ओ३म्कार विन है सब कूर ॥ ४ ॥ ओ३म्कार कूं० ॥ ४ ॥

पैरी १ नग २ रंगत खरी ताल खैरवो ॥

२ लावणी ओ३म्कार की ॥

ओ३म् भज उतरे सन्त । पन्थ उर पाया । ब्रह्मा विष्णू महेश शेष मुख ध्याया ॥ टेर ॥ नारद सारद गणेश गैार चित चाया । इन्द्र चन्द्र सनकादिक सुरज जनाया ॥ नव गिरह फिरै असमान पृथवी छाया । गण किनर अनर गन्धर्व परीयन जस गाया ॥ दानव देवत सेवत ओ३म् मन भाया ॥ १ ॥ ब्रह्मा बिष्णू० ॥ १ ॥ भू ध्रू प्रहलाद विभीषण मन हर काया । हरी चन्द बलिराजके काज करण हरि आया ॥ शृङ्गी भृङ्गी शुकदेव व्यास फुरमाया । यह कपिल मुनी माता ने ज्ञान बतलाया ॥ सब ऋषी खुशी होय ओ३म् में ध्यान लगाया ॥ २ ॥ ब्रह्मा विष्णू० ॥ २ ॥ ओ३म् ने वेद पुराण कुरान चलाया । जन्तर मन्तर तन्तर में ओ३म् आया ॥ नव निद्ध आठ सिद्ध पन्दरै विद्या बणाया । नव खण्ड ब्रह्-मण्ड घट मठ ओ३म् दरसाया ॥ कर सजन भजन परणवसूं सुधरै का-या ॥ ३ ॥ ब्रह्मा विष्णू० ॥ ३ ॥ परणव बोले ओले तन मन के भाया । जो वो तत पद पूरण परमानन्द पाया ॥ गिरधरगणेश यूं भणै राह ब-रताया । सोहं प्राणी ये दूजा चक्कर खाया ॥ है ओ३म् पेड़ और सेड़ फूल फल जाया ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णू० ॥ ४ ॥

पैरी १ नग ३ लावणी लंगड़ी रंगत ताल खैरवो ॥

३ लावणी ओ३म्कार की ॥

ओ३म्कार को भजै तजै नर कूर कपट हरि जस गावे । आंधी न व्याधी मिटै वहां सुख संपत लक्ष्मी आवे ॥ टेर ॥ ओ३म्कार स्वरूप सबी का भूप भगत उन कूं ध्यावे । शिर तिलक भाल चिन्ह देख दुश्मण की छाती घबरावे ॥ भक्त रहत भरपूर खुला मुख नूर नहीं जाचण जावे । रिद्धी न सिद्धी दोही वहनां उन की सरणे आवे ॥ ओ३म्कारकी धरी छाप मिट गई ताप अनुभव गावे॥ १ ॥ आंधी न व्याधी० ॥ १ ॥ जंतर मंतर जादू टोना कोइ भगत पै नहिं आवे । ताव तेजरा बली हैं काल देख के डर जावे ॥ निर्भय घुरैं निसाण नोपतां सुखिया मंगल कूं गावे । भर २ मूठा उड़ावे द्रव्य नहीं खूटण पावे ॥ जिज्ञासू ले धरैं और नर मरैं दुष्ट चक्कर खावे ॥ २ ॥ आंधी न व्याधी० ॥ २ ॥ सात दीप नव खंड ब्रह्मंड सब भक्तां का दरसण चावे ॥ भवसागर में अधम तारण को भक्त जन है नावे ॥ पल में कर दे निहाल जिनों के पास नहीं कवड़ी दावे । गुपत कोटड़ी द्रव्य सूं भरी हरी जन लूटावे ॥ जिन की उलटी चाल समझ लो हाल हकीकत वतलावे ॥ ३ ॥ आंधी न व्याधी० ॥ ३ ॥ सेवा क्रिया सें मेवा मिलत निंद्या में नास देख होय जावे । उण पारस सूं भेटियां लोहे कूं कर कंचन तावे ॥ गिरधर गणेश यूं भणे मेरे दिल और देव कोइ नहिं भावे । ओ३म्कार कूं रट्या से जनम मरण नर नहिं आवे ॥ ओ३म्कार है मूल और सब फूल पत्तां को कुण ध्यावे ॥ ४ ॥ आंधी न व्याधी० ॥ ४ ॥

पैरी १ नग ४ रंगत खड़ी ताल खैरवो ॥

४ लावणी ॥

पांच भूत पचीस प्रकृति का निर्णय ॥

यह पंचीकृत का ख्याल हाल सुण भाई। पांचां की ओरत पचीस पिंड मे धाई ॥ टेर ॥ हुये हाड़ मास और नाड़ी चरम समाई। पृथिवी से उपजे घाण गुदा दोय बाई ॥ लेवे घाण सुगंधी अश्वनी कुमार सुंघाई। यह इंद्री गुदा मल त्याग देव जमराई ॥ पृथिवी ब्रह्मंड का भूत पिंड में छाई ॥ १ ॥ पांचों को ओरत० ॥ १ ॥ विरज मूत पसीना रुधिर लार मुख आई। जल सें उपजे हैं उपस्थ जीभ रसाई ॥ जिह्व्या जो ले रही स्वाद लिंग मूताई। जिह्व्या को देवत वरुण लिंग ब्रह्माई ॥ यह दूसरा भूत हुये जल की जुगती आई ॥ २ ॥ पांचों को० ॥ २ ॥ सुद्या तिरखा आलस निद्रा क्रान्ताई। अगनी सूं उपजे चक्षू पगले धाई ॥ चक्षू को देवता सूर्य्य सृष्टि दिखाई। पग को जो पती विष्णु देवत रह जाई ॥ यह तिसरा भूत हुये अगनी अंश बताई ॥ संकोच उठना चलना दौर फैलाई ॥ ३ ॥ पांचों ॥ ३ ॥ पवन सूं उपजे हाथ त्वचा सुण भाई ॥ देणा लेणा करे हाथ देव इंद्राई। सपरस करती है त्वचा देव पवनाई ॥ यह चौथा जो भूत पवन के अंश जणाई ॥ ४ ॥ पांचों को० ॥ ४ ॥ हुये काम क्रोध भय लोभ मोह गरणाई। अम्बर सूं उपजे श्रोत्र वाक फुरमाई। श्रोत्र इन्द्री सुण देवत दसू दिसाई। वक वाक इन्द्री का देवत अगनी गाई। गिरधरगणेश पच्चीस बीस दरसाई ॥ ५ ॥ पांचों को ॥ ५ ॥

पैरी १ नग ५ लावणी रंगत लंगड़ी ताल खेरवो ॥

५ लावणी ॥

जीव ब्रह्म का निर्णय ।

भरम रूप है काया कलपना । अहंकार सूं हरख रह्या । दृश्य दुवद्ध्या० लगी है जिन कूं संतां जीव कह्या ॥ टेर ॥ पांच तत्व का मत तेज पृथवी जल वायू अकाश भया । दशूं जो इन्द्री० ज्ञान की पांच करम की पांच कया ॥ अंतः करण है चार पांच विषयन के सङ्ग में मिला दिया । यह चतूर वीसो तन अकार मातरा हला दिया ॥ वणा ख्याल जागरत अवस्था, बाणीबेखरी बुला रया ॥ नेतर अस्थाना देखता रजोगुण परधान किया ॥ थूल भोग बिसवे अभिमानी जानी इन का जीव भया ॥ १ ॥ दृश्य दुवद्ध्या ॥ १ ॥ थूल विलाया सूच्छम आया दश इन्द्री अंतस चाया । अंतःकरण है चार देवता चवदे जिन के सङ्ग धाया ॥ पांच विषय और पांच प्राण सुण सपनावस्था समझाया । मध्यमा बाणी कण्ठ अस्थान सतोगुण दिखलाया । सुच्छम पदारथ रह्या भोग उकार मात तेजस थाया । यह सपनावस्था० बासना रही थूल की सो पाया ॥ थूल सूच्छम तन मन भाकी साखी इन का दूर रया ॥ २ ॥ दृश्य दुवद्ध्या० ॥ २ ॥ सूच्छम समाया कारण माया सुन्न सुषोपति सुण भाया । द्रष्टा ने दरसण दृश्य ये सुषोपती में नहिं पाया । हिरदे वास है प्राग आतमा बाणी पसंती ने गाया । मकार मातरा, भोग आनन्द उसी के मनभाया ॥ तमोगुण परधान जहां नहीं रूपरंग पड़ती छाया । वहां निराकार है वेद सुरती ने इस विधि समझाया ॥ थूल सूच्छम सुषोपती ये कथो तीन वख्यान भया ॥३॥ दृश्य दुवद्ध्या० ॥ ३ ॥ महाकारण पाया कारण उठाया तुरिया अव-

स्था निरदाया। बाणी पराजो, मातरा अर्द्ध सतोगुण शुध आया ॥ मूरधनी अस्थान, भोग परमानन्द परभू बिन माया। है प्रतच आतमा, रहा अभिमानी सब में इकाराया ॥ चार अवस्था मन की झाई मन बाणी थक जाया ॥ गिरधरगणेश ये विधी निषेध उठा के छंद गाया ॥ पूरण ब्रह्म परमानन्द परभू निकट दूर भरपूर रया ॥ ४ ॥ दृश्य दुवद्रुध्या० ॥ ४ ॥

पैरी २ नग ६ गुरुगम पैरी रंगत खरी ताल खैरवो ॥

१ लावणी गजानन्द की ॥

श्री गजानन्द बुद्धी देवो महाराजा। भोले शंकर के लाल सार दे। काजा ॥ टेर ॥ तुम महादेव के पुत्र बड़े तपधारी। गवरीके नंद गणेश रूप अधिकारी ॥ तुम चढ़ मूसे असवारी विनायक भारी। दरशण तेरा सब करैं लोग नर नारी ॥ कर संतन की प्रतिपाल भक्त रखताजा ॥ १ ॥ भोले शंकर के० ॥ १ ॥ गन एक हाथ से वेद पढ़ो तुम भारी। दुसरे जो हाथ में लिंग शिव जी की धारी ॥ तिसरे जो हाथ में पारवती महतारी। चैाथे जो हाथ मोदक लड्डू गुलजारी ॥ हम धरैं तुह्मारा ध्यान रखो मेरी लाजा ॥ २ ॥ भोले शंकर० ॥ २ ॥ गन सात दीप नव खंड बीच तोय ध्यावे। और तीन लोक के मांय आप को गावे ॥ तुम सब कूं देवो बुद्धि अकल उपजावे। कोइ करैं सेवना ते। मन वंछत फल पावे ॥ तुम छतीस राग रागणी का हो राजा ॥ ३ ॥ भेले शंकर० ॥ ३ ॥ गन बुद्धि का हो दाता पार नहिं पावे। और व्यांह जो मंगलाचार गन्न मन भावै ॥ कोई नहिं गन्न कूं ध्यावै सो गोता खावै। सब चव-

दह लोक के देव दर्श कूं चावे ॥ गिरधर गणेश यूं भणी हिरदे गन आजा ॥ ४ ॥ भोले शंकर० ॥ ४ ॥

पैरी २ नग ७ रंगत खरी ताल खैरवो ॥

२ लावणीं गुरु उपदेश ॥

श्री गोकुल के गोपाल का दरशण पाया । अजनेश्वर अबधू मिल्या ज्ञान हम गाया ॥ टेर ॥ मैं सुणी आप की महिमा मन ललचाया। तब मरत लोक कूं त्याग शरण मे आया ॥ सत संग घाट पै बैठ ज्ञान में न्हाया । मैं लीना धर्म अचार अती सुख पाया ॥ मिलने की मन में लगी खैंच गुरु लाया ॥ १ ॥ अजनेश्वर अबधू० ॥ १ ॥ मिलतांइ मालूम भई सुधारी काया । गुरु राग द्वेष दो मेट आप की माया ॥ तन मन से सेवा करूं चरण चित लाया । मैं भगत आप भगवान करो मनचाया ॥ अब मेहर करो म्हाराज बहुत अगताया ॥ २ ॥ अजनेश्वर० ॥ २ ॥ अब गुरु देत उपदेश उलट जा भाया । इण भवसागर में सतसंगत है नाया ॥ खेवटिया ज्ञानी संत पार ले धाया । वे नर चढिया निरबाण फेर नहिं आया ॥ सत संग बिना नर निकमा गोता खाया ॥ ३ ॥ अजनेश्वर० ॥ ३ ॥ शिष सुख चावे तो ध्यान करो इकराया । यां बियोग सुधरे परमारथ में काया ॥ यह शिष लीन्हा उपदेश सती का जाया । तब मेहर करी म्हाराज किया मनचाया ॥ गिरधर गणेश गुरुदेव सेव सुख पाया ॥ ४ ॥ अजनेश्वर० ॥ ४ ॥

पैरी २ नग ८ लावणी रंगत खरी ताल खैरवो ॥

३ लावणीं । अमृत वेरी की ॥

इस तन काया में बनाई हरि ने वेरी । मांये अमृत है नीर पियो

कोइ हेरी ॥ टेर ॥ बेरी की शोभा कहूं सुणो तुम सारी। वां नहीं घाट नहिं बाट न धरती धारी ॥ तन घर में बेरी जाणों दुनियां सारी। फिर रही है करम के साथ भरम की मारी ॥ अमृत पीवण कूं संत गये उण सेरी ॥ १ ॥ मांये अमृत० ॥ १ ॥ उस बेरी पे है तिरबेणी गिरधारी। इंगला न पिंगला सुखमना बहै नारी ॥ नव नाथ लगाया ध्यान वां शंकर भारी। चोरासी सिद्ध वां बैठे आसण मारी ॥ वां तीन लोक बस रही सृष्टि बोह तेरी ॥ २ ॥ मांये अमृत है० ॥ २ ॥ सासा की लाव कर सुरत शबद की जोरी। चित को जो चरस अमृत भर भर दे मोरी ॥ तन मन चरखी पैं चला सदा बरजोरी। ओ३म् मन्त-रले बीज दे क्यारी कोरी ॥ फिर लगे अमर फल बात मानजा मोरी ॥ ३ ॥ मांये अमृत० ॥ ३ ॥ तू कर सतगुरु की सेव हरी गुण गारी। नहिं तर बेरी पे भंवर परा है भारी ॥ और तपसी त्यागी वेद कहत संसारी। अमृत पीने सूं काया सुधरै थारी ॥ गिरधरगणेश यूं भणे करो मत देरी ॥ ४ ॥ मांये अमृत है० ॥ ४ ॥

पैरी २ नग ९ लावणी रंगत खरी ताल खैरवो ॥

४ लावणीं नेकी की ॥

नेकी का नहचा नर हिरदे कोइ राखै। वां अष्ट सिद्ध नवसिद्ध खरी है जाके ॥ टेर ॥ नेकी राखी प्रहलाद राम मुख भाखे। हिरणाकुस पच पच मरे असुर सब थाके ॥ बावन जो दान ले बलि की पोठ कूं डाके। पहरायत परभू भया द्वार के नाके ॥ हरिचंद तारा दे दान अन्न का फाके ॥ १ ॥ वां अष्ट सिद्ध० ॥ १ ॥ फिर मोर ध्वज कर दिवी पुत्र की फांके। वो घनाधरम कर बीज लाटली सांखे ॥

पांचों पांडव नहिं भवन जल्याथा लाखे। द्रोपदीको चीर दुशासन खैंचत थाके॥ मीरां तो विष कूं अमृतकर के चाखे॥ २॥ वां अष्टसिद्ध० ॥ नरसी की गाडी गोपाल सागरी हांके। करमां को खायो खीच लाड करबा के॥ भिलणी का झूठा बोर प्रेम के पाके। गनिका गोविन्द-गुण गाय गाय दिल में छाके॥ सजने के सालगराम तुल्या है ताके ॥३॥ वां अ०॥ ३॥ हरी कबीर घर बालदभर लायो आखे। फेर पायो बिदुर घरसाग त्याग दो दाखे॥ केई जो वियोगी तिरे अधम सुण लाखे। यह चारों वेद पुराण पण्डित दे साखे॥ गिरधरगणेश यूं भणै वोह मिन्तर म्हाके॥ ४॥ वां अष्ट० ॥ ४॥

पैरी २ नग १० लावणी रंगत खरी ताल खैरवो ॥

५ लावणीं भक्तों की मदद की ॥

भक्तों की मदद भगवान खरा सुण भाई। भक्तों का बुरा चावे तो कतल हो जाई॥ टेर॥ हिरणाकुस नेकी छोड़ बदी कूं लाया। प्रहलाद भक्त होय राम नाम मुख गाया॥ हिरणाकुस कीना कोप दिया डण्ड काया। प्रहलाद भजे भगवान नहीं घबराया॥ हरि चीर दुष्ट की खाल कागला खाई॥ १॥ भक्तां का बुरा० ॥ १॥ रावण के बंधे नवगिरह खाट के पाया। दशसीस भुजा है बीस बड़ी थी काया॥ जिन के जो भगत विभीषण छोटे भाया। वो त्याग दुष्ट को सङ्ग राम पै आया॥ रावण कूं मार लिया राम राज करे भाई॥ २॥ भक्तों का बुरा० ॥ २॥ कौरव जो कपट का लाख्या भवन बनाया। पांडव बैठे बच गया वो भवन लगाया॥ द्रोपदी को चीर दुशासन खैंचत भाया। खैंचत खैंचत थक गया दुष्ट घबराया॥ भारत कूं भस-

म कर खाय गई मम्माई ॥ ३ ॥ भक्तों का० ॥ ३ ॥ मीरां बाई ने विष का प्याला पाया । ईश्वर अमृत कर दिया भगत मन चाया ॥ यूं भगतांने भगवान तोल के ताया । वे भगत याद करतां ही हरी उठ आया ॥ गिरधरगणेश हरी काम पर्या बूलाई ॥ ४ ॥ भक्तों का बुरा० ॥ ४ ॥

परलोक पैरी ३ नग ११ लावणी रंगत खरी बड़ी ॥

ख्याल ताल खैरवो ॥

१ लावणी सन्न्यास धर्म की ॥

सत में स्वामी सन्न्यासी है समझ लिया जग कूं जो भरम । जोग साज के किया काज पुनि सन्न्यासी का सुनो धरम ॥ टेर ॥ कहता वरण बयान सजन वो गौर श्याम ना शीत गरम । देश नहीं है भेष और नहिं त्याग राग कठोर नरम ।। न्यात नहीं है जात जीव दुबद्या का क्या जाणै जो मरम । सदा सर्वदा नित निरंतर अपने सुख हो रह्या परम ॥ कुटस्थ साधू वो है माधू जिन की नहिं दृष्टी जो चर-म ॥ १ ॥ जोग साज के० ॥ १ ॥ जीना मरना है नहिं जिन कूं जुगत भुगत दीसै जो भरम । सुख दुख वन बस्ती नहिं जिन कूं चाहे जहां कर दिया अरम ॥ बतीस भोजन नित का फाका चाहे सेज फुलड़ों की नरम । चाहे पोडता पृथवी ऊपर जिनकूं नहिं आवे जो सरम ॥ ज्ञान नहीं करै ध्यान ग्रहण ना रखै तजै ना कोई करम ॥ २ ॥ जोग साज के० ॥ २ ॥ शिर मुण्डन है भगवा बाना चाहे हार पैरा हीरम । चाहे ओडादे शाल दुशाला चाहे गुदड़ी

लौरम लीरम ॥ चाहे उतार कपूर आरती चाहे धूर डारो सौरम ॥ चाहे वेद अस्तूती करजा चाहे गाली देजा वोरम ॥ जिन की गती अपार नहीं है पार कवी क्या लिखे फरम ॥ ३ ॥ जोग साज के० ॥३॥ जिन कूं आग लगे नहिं ससतर क्या मारे शूरा तीरम । उलटा पन्थ अगोचर साधू ज्यों का त्यों बस रह्या धीरम ॥ जिन से उपजे नर नारायण सकल सष्ट देवत पीरम । अधर उपाई आप खपाई नहिं दुसरा दीसे मीरम ॥ गिरधरगणेश यूं भणे यार में सन्यासी का कया करम॥ ४ ॥ जोग साज० ॥ ४ ॥

पैरी ३ नग १२ लावणी रंगत खरी ख्याल की ताल खैरवो ॥

३ लावणी साधूमत की ॥

एक विचारे दुतिया टारे तीजा तिरगुण तजिया कूर । आधी साखी साबत समझो सो साधू बसतो भरपूर ॥ टेर ॥ खेत ज्ञान में निपजा ध्यान धुनलगी भगी सब दिल की छूर । लटिया लाटा मिटिया घाटा पाया कणउड गये सब डूर ॥ एक होय खेले सकल घट पेले देखत दीसत अपना नूर । ब्रह्मा की वारी में फूल हजारी वृच-भरम निरख्या निज मूर ॥ तीन करम और किरया कहणी रहणी घट खट कर चकचूर ॥ १ ॥ आधी साखी० ॥ १ ॥ सब कूं देता आप न लेता वेता वेद का है निज मूर । घूमत ज्ञानी कुंजर श्यानी वजत निशाणी अनहद तूर ॥ निर्मल नैने मधुरे वैने भेख टेक से रहते दूर । मंदिर मठ चेलन का ठठ वे पंथ दन्त पे दीन्ही धूर ॥ भगवा भेष कन भटा केष नहिं देस दिवाना मत मंजूर ॥ २ ॥ आधी साखी० ॥ २ ॥ ऊंच

नीच की निगे जो नांहीं जिन की टोटल मिल गई पूर । खाना पीना जीना मरना जिन कूं नहिं है सांसे सूर ॥ जिन कूं रैन दिवस पुनि हम तुम पाप पुण्य का नहिं आंकूर । कुटस्थ साधू वो है माद्रू नाद्रू बिंद्रू नहिं पाये फूर ॥ लीन अलीन अलप अलपज्ञी अंगी अंग खुर दीना दूर ॥ ३ ॥ आधी साखी० ॥ ३ ॥ वो है साधू और असाधू पच्च बाद करते झकझूर । कोई मूंड मुंडाया कोई भेख लजाया कोई माया मद का भया मजूर ॥ गिरधरगणेश यूं भणी वेद सुरती गावै वे संत हजूर । सब में आप आप में सबही अम्बर ज्यूं घट मठ भरपूर ॥ या जो समझ रमझ संतन की नैन वैन त्रिन खुले जरूर ॥ ४ ॥ आधी साखी० ॥ ४ ॥

पेरी १ नग १३ लावणी रंगत खरी ताल खैरवो ॥
३ लावणी ब्राह्मण के धर्म की ॥

ब्राह्मण ब्रह्म चीनिया चित में जनम मरण में नहिं आया । तीन काल गायत्री जप के परम पदारथ पदपाया ॥ टेर ॥ प्रातःकाल का कहूं हाल सुण थूल फूल दीसे काया । ज्ञान नीर में न्हाया बीर ले करणी कामली तज माया ॥ सास नाप अजाप जाप जप सिंवरण सुमरणी ले धाया । तिरवेणी के घाट पाट ब्राह्मण मनसा भोजन पाया ॥ आसन आसा बैठ उदासा जगत भगत तज दी छाया ॥ तीन काल० ॥ १ ॥ मध्यान्ह काल का कहूं हाल सुण सुपन उपन मेटा दाया । ले गुरु का मंतर समझया तंतर जंत्र खैंच के तत ताया ॥ चार वेद का पढ़ा भेद जब ब्रह्म भाण दृष्टी आया । मिट गये भरम कट गये करम नहि लाज सरम कूं चित चाया ॥ हो गये मस्त ज्यूं फिरै हस्त वोह सुर्त निर्त ने घर लाया ॥ २ ॥ तीन काल का ॥ २ ॥ सायंकाल का कहूं हाल सुण कारण धारण पै आया । छूटा ज्ञान ध्यान पुनि हम

तुम अपने आप दरशण पाया ॥ द्वैत तोर के मारा चोर जब जोर शोर अनुभव गाया । खुल गये नैन बैन ब्राह्मण ने प्रेमफुंवारा बरसाया ॥ भूल हमारी गांठ सह्मारी घटत बढ़त मिल गइ माया ॥ ३ ॥ तीन काल० ॥ ३ ॥ अर्द्ध रात की कहूं बात मा कारण सारण थक जाया । बाणी कहणी गम नहिं रहणी रैन दिवस वां नहिं पाया ॥ गिरधर-गणेश यूं भये वो ब्राह्मण चार काल कूं दरसाया । छोटा मोटा मन का टोटा वरण आश्रम नहिं थाया ॥ वो ब्राह्मण सकल ये, और नकल सो ऊंच नीच दृष्टी लाया ॥ ४ ॥ तीन काल० ॥ ४ ॥

पैरी ३ नग १४ लावणी रंगत खरी ताल खैरवो ॥

४ लावणी मुसलमीन की ॥

मुसलमीन महबूब मिलो तो बदी छोड़ नेकी लावो । कुरान कल्मा पढ़ लो अलमा सनम भिस्त में चढ़ जावो ॥ टेर ॥ मुसलमीन होय लीन दीन कूं देख शेख चोकस रैवो । हरदम सांई समझो मांही कांई कांई कैसे कैवो ॥ अंदर जोवो सुरती पोवो धोवो दिल दुख सुख सैवो । या सीख चाख कें होजा पाक देह दरपण झाक दिल में पे वो ॥ भूल का चोला जाण का मोला खुला तो ख्याल ऐसा गावो ॥ १ ॥ कुरान कलमा० ॥ १ ॥ तन का तकिया मन से भकिया छकिया नांव रब का ध्यावो । रहणी रोजा पहर ले मोजा सोजा सजन सुवरण तावो ॥ पांचो चोर निवाज मोर जिंदगानी जोर हिरदे लावो । तसबी, तोर सैं द्वैत चोर जब भया पोर मेरम पावो ॥ पाया मुद्दा तब भया खुदा फिर जुदा यार किस कूं ध्यावो ॥ २ ॥ कुरान० ॥ २ ॥ रहीम राम है चारों धाम यह तेरा ही नाम

कांहो मत जावो । जब दिल पक्का कुण जाय मक्का नहिं स्वाद चखा तो गोता खावो ॥ दिल की बाजी जीते सो काजी नहिं तर पाजी क्यूं चावो । तसबी डार किताब फार मत रोजा धार गुम हो जावो ॥ बाहर फीका भीतर तीखा नीका नैन सरवन्न पावो ॥ ३ ॥ कुरान कलमा० ॥ ३ ॥ है बाबा आदम वो हीज मादम नादम बिदम नहिं दावो । चोईस पीर रहे जली तीर नहिं पहुंचे मीर चाहे मर जावो ॥ गिरधरगणेश यूं भणै जणैनहिं मुसलमीन वो बतलावो । सो मेरे शिर के फूल कहूं रसूल भूल तुम सब गावो ॥ यह छापा मैंने अखबार नबी का सार मार दिल समझावो ॥ ४ ॥ कुरान कलमा० ॥ ४ ॥

पैरी ३ नग १५ लावणी रंगत खड़ी ताल खैरवो ॥

५ लावणी अद्वैत मत की ॥

ब्राह्मण साधू संन्यासी ये मुसलमीन चौथा जो धरम । नहिं विधी निषेध भेद ये सच्चो सुणो तो सबी भरम ॥ टेर ॥ समत नहीं है साल बरस दिनमान घरी पल नहिं मासे । सब धरमों का धरम धार उर अद्वैत की सुण ले आसे ॥ उर दूर भरपूर परख ले ज्ञान अगती दे घासे । चार धरम की चौसर गाई मांय अद्वैत चलता पासे ॥ द्वैत धरम सूं बंधे करम कट जाय धार अद्वैत धरम ॥ १ ॥ नहीं विधी निषेध० ॥ १ ॥ एक समझ अद्वैत आत्मा निहिं दुसरा दीसे पासे । सकल सृष्ट परकासे परभू पिंड नहीं भणता सासे । निर्गुण नूर निरन्तर खेले खलक अलक भीतर भासे । नैणां सूं निगम नरोतम दृष्टी आवे तब पावे आसे ॥ अलख आतमा लखली प्राणी जिन कूं नहिं किरिया जो करम ॥ २ ॥ नहिं

विधी ॥ २ ॥ जहां तहां अपने आप बणी ना कहणा समझ देवत दासे। रजू में सरप भरम कर भासै विन विचार पावै चासे ॥ वो तो अजर जनमता नाहीं जिन का मरतक नहिं नासै। वो दरियाव तरंग जड़ चेतन जल से जुदो कोइ नहिं भासै ॥ ब्रह्मभाव है सत, असत दीसै जिण दृष्टी लगी चरम ॥ ३ ॥ नहिं विधी० ॥ ३ ॥ ब्राह्मण साधू सन्न्यासी ये मुसलमीन उपजे वासे। चारों वेद पुरान पिंडत कलमा काजी पढ़ता जासै ॥ गिरधरगणेश यूं भणै ख्याल सुणभरम करम सब ही नासै। रह्यो एक अद्वैत जोत सूं घट मठ दीपक परकासै ॥ पांचूं काफी कथी मती पूगी सोही नर पाया मरम ॥ ४ ॥ नहिं विधी० ॥ ४ ॥

प्रकाश पैरी ४ नग १६ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

१ लावणी जैनमतढूंढिये की ॥

ढूंड लिया अपने आपे कूं सो ही ढूंडिया मूनी राज। और मूंडिया धरा है सांग सरा नहिं एकहि काज ॥ टेर ॥ ले गुरुगम का ज्ञान लगाया ध्यान जैनमत कहता आज। ओ३म्कार सूं हुया नवकार निरन्तर लीना साज ॥ सत समायो अदल जमाई करम कमाई कीन्ही भाज। जिस में पाया गाया ज्ञान त्यागदी कुल की लाज ॥ तोरी रागी ने होगया त्यागी बण पागी मेटी दिलदाज ॥१॥ और मूंडिया धरा है० ॥१॥ भवसागर को भूंड पटक मन मूंड ढूंडली पैली पाज। मती मूं मती घूमती ज्ञान मारती सत्र के ताज ॥ चहुं दिसि चादर पटकी आदर होगया वहादुर रण में गाज। प्राण पातरा मातरा वेर पवाया पिंड कूं नाज ॥ आतम ओघो कर लियो जोगी मिट गयो रोगी हो

गया राज ॥ २ ॥ और मूंडिया० ॥ २ ॥ मुनिबर सादू अरिहंत आदू सोहं मादू भीतर बाज। थिर चित थानक तानक गाय गमाया मन का माज। अगम अठाई तुरत पठाई काया बटाई कर लिया काज। व्यौहार बिलाया हिलाया हलप मिलाया मन महाराज॥ घूमै गेवर ज्ञानी केवर ब्रह्मण्ड देउर दीसै जहाज ॥ ३ ॥ और मूंडिया० ॥ ३ ॥ सोहं प्यारा नहिं कोइ खारा कर संतारा मूनीराज। होय मुक्त सरूपा अरूपा अलख खलक देती मोताज ॥ गिरधरगणेश यूं भयौ सूत मुनि ऋखभ देव मत लीना साज। वो है स्वामी जामी अंतर उरको मेटी खाज। यह चार वेद को आन समझ मत जान मान ले मुनीवर आज ॥ ४ ॥ और मूंडिया० ॥ ४ ॥

पैरी ४ नग १७ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

२ लावणी ब्रह्मचारी की ॥

ब्रह्म बरत करता ब्रह्मचारी सुरत सुंदरी घर नारी। वो ब्रह्मचारी कहत श्री कृष्ण और सब व्यभिचारी ॥ टेर ॥ किया ब्रह्म का बरत हुवा दिल अरथ आतमा की यारी। दुसरी तो खारी। त्याग दी बिष ज्यूं वस्तू मन मारी॥ एक देख के भजे भेख और धेख नहीं सुण संसारी। सोहं किल कारी। शब्द सुण सुरत भई है गुलजारी ॥ जगी सुंदरी सगत मिटायो जगत जान प्रीतम प्यारी ॥ १ ॥ वो ब्रह्मचारी० ॥ १ ॥ सुंदर सज सिणगार करैंगे प्यार प्रीत निरगुण थारी। सोहं प्यारी, करो त्यारी अमरापुर घर नारी। सुरत पधारियो पंथ लियो सङ्ग कंथ कूच कीनो भारी। लग गइ इकतारी। अलख अमरापुर सोहं ब्रह्मचारी ॥ रमै सुंदरी सेज अमरपुर देश देव जै जै कारी ॥२॥

वो ब्रह्म० ॥ २ ॥ इन्द्र आदि सब देव करत हैं सेव शंकने जा धारी। करत खुवारी। आय ब्रह्मा विष्णू करैं लाचारी ॥ शेष गणेशा खरा द्वार केइ राम कृष्ण भये अवतारी। कम्मर कसमारी, हुकम सोहं सुंदर दे ब्रह्मचारी ॥ ब्रह्म जगत का भान रचो है जान देव कीन्हो त्यारी ॥ ३ ॥ वो ब्रह्मचारी० ॥ ३ ॥ ब्रह्मचारी रचना रच डारी अलख अलग हैं ब्रह्मचारी। करो विचारी जहां देवत पूगे नहिं संसारी ॥ गिरधरगणेश यूं भणै ब्रह्म कूं चीन्ह लिया सोइ ब्रह्मचारी। दुसरी तो जारी, मूरखनर करैं मरैं काया हारी ॥ यह चार वेद की साख कृष्ण का वाक। लिखी गीता सारी ॥ ४ ॥ वो ब्रह्मचारी० ॥ ४ ॥

पैरी ४ नग १८ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

१ लावणी जोगी की ॥

त्याग जगत का भोग हुवा निज जोग जुगत की लगी धजा। सुन्न शिखर में, मिले गुरुदेव जोग का बड़ा मजा ॥ टेर ॥ साज लिया है जोग काढिया रोग बदन की मिटी अजा। खट किरिया कूं। साज धरणी पर आसन तुरत पजा ॥ त्रीबंद कूं बांद चांद और सूरज दोऊं उलटा जो भजा। त्रीपरणायम, साज अठ कुम्भक अनहद नाद बजा ॥ ओ३म् धुनी कर रह्या मुनी उस द्वार काल नहिं पूगे कजा ॥ १ ॥ सुन्न शिखर० ॥ १ ॥ मेरु शिखर पैं जिकर लगी इकतार तान नहिं टूटे मजा। बंक नाल कूं, फूंकतां काया मंडल प्राण तजा ॥ खट चक्कर कूं छेद पाया निजभेद भरम की मिटी गजा। तिरकूटी के, महल में सैल सूंदरी करत लजा ॥ पांचूं मुद्रा धार हुया है पार पावे नहिं नाव नजा ॥ २ ॥ सुन्न शिखर० ॥ २ ॥ संहसर

शेष महेश खड़ा उन की अज्ञा अनुसार सजा । ब्रह्मा न विष्णु भैर-वी भैरव हुकम सूं खलक खजा ॥ इन्दर चन्द्र सुरज सिध मूनी सब देवत उन कूं जो भजा । भाई वो जोगेश्वर, सत चित आनन्द दूजा रोगि हजा ॥ सात दीप नव खंड ब्रह्मंड में उस जोगी की लगी धजा ॥ ३ ॥ सुन शिखर० ॥ ३ ॥ वो तो जोगेसूर और सब कूर वदन पर लिया वजा । भगवा बानो श्यानी सुधरत नहिं नर पावे सजा ॥ गि-रधरगणेश यूं भणै वो जोगी उस सूं मिल दिल मेटी दजा । वो नि-रगुण नूराहै पूरा घट मठ मांयें चलत रजा ॥ चार वेद की साख सु-रतियां लाख पढ़े वो जोगी छजा ॥ ४ ॥ सुन शिखर० ॥ ४ ॥

पैरी ४ नग १९ लावणी रंगत खड़ी ताल खैरवो ॥

४ लावणी मुनी की ॥

अनुभव बकै रखै नहिं संकलप मन मुरशिद धारी मूना । वो मू-नेश्वर लिखी गीता में और मूनी सूना ॥ टेर ॥ अनुभव हुवा मुवा मन जिस का संकलप बिकलप भंट भूना । आई सोहं शक्ती अगती चली मिट्या जादू टोना ॥ निरणय निगम अगम कर लीनो बिन स-सतर असतर जूना । जिस ने जोया सोया सुबे श्याम निर्भय मूना ॥ हुया जगत बे काम गमाया नाम पाप खोया पुना ॥ १ ॥ वो मूनेश्वर० ॥ १ ॥ कंठी तोर तूंबी कूं फोर चादर आदर अगनो भूना । त्याग लंगोटी अंगोठी राज पाट सूं सिर धूना ॥ बिगरी संज्ञा अंग नहिं अं-गिया नगन भगन हंसता रुना । बिछरत भूमी वो श्यामी धर अ-म्बर च्यारूं खूंना ॥ कोई ना जावे जां वो ध्यावे चंद सुरज आगे मूना ॥ २ ॥ वो मूनेश्वर० ॥ २ ॥ रहता सोहं मेटी दोहं दास देवत छेदर वूना । नहिं कोइ दूजा पूजा करूं कोस किस सूं मूना ॥ इस विध

डोले सब सूं बोले खाना पीना कर दूना । स्वतः जो आवे पावे प्राण भोग ठंडा ऊना ॥ त्याग नहीं है राग हानि और लाभ भली रेशम ऊना ॥ ३ ॥ ये जगत जाण जगदीश बीच यूं घाट पाट तंतू तूना । भूला भोगी रोगी हुया मिट्या ज्यूं लट घूंना ॥ गिरधरगणेश यूं भणे भरम और करम नहीं सोहै सूना । श्री कृष्ण का, वाक नट जाय तो नांक पे दें चूना ॥ मन बश मूनीराज और सब बाज चक्र खावे सूना ॥ ४ ॥ वे मूनेश्वर० ॥ ४ ॥

पैरी ४ नग २० लावणी रंगत ताल खैरवो ॥

५ लावणी परमहंस की ॥

परम हंस की परम गती है दृढ मती भीतर नागा । सोहं सागर चुणे मोती बुगलां का नहिं सागा ॥ टेर ॥ अपना खोया बंस परम वो हंस धरम सबही त्यागा । पांच विषय कूं भोगता भीतर जिन के नहिं रागा ॥ रोज कमावे गृस्थ दीखता म्हापरलय का बैरागा ॥ विचरत-भोमी सदा निरबन्ध रखे नहिं सङ्ग सागा ॥ उलटा खेले ख्याल खलक में परमहंस पे नहिं दागा ॥ १ ॥ सोहं सागर० ॥ १ ॥ वो हंसा हर रूप रमे सब के भीतर रहता आगा । पांख नहीं है, उडे वो बिना चूंच चुगणे लागा ॥ बिन जिव्या सूं गाणा गावे मधुरे सुर मोठी रागा । बिन चचू सूं चानणा चाहुं दिशा दरसे थागा ॥ अगने वसता भवन सदा थिर पैर विना जलदी भागा ॥ २ ॥ सोहं सागर० ॥ २ ॥ परम-हंस का परम धाम सुख बिना नीवको है जागा । सोहै प्यारा, पृथवी बिना पलंग बिछिया पागा ॥ नवसे नारी संग जिनो के बिन बसन्त खेले फागा । बिन सरवण सूं सुणे वो घ्राण बिना सूंघण लागा ॥ सार की सांकर फंदे नहीं वो बंदे सूत काचे धागा ॥३॥ सोहं सागर० ॥३॥

पिंड वना परचगड जिनों का बरण नहीं भासै बागा। ओढण अलफी जरी का थान थकां दीसै नागा। गिरधरगणेश यूं भयो परम वे हंस और सव ही ठागा। करम हंस ये कमाई करै दिखावै अंग नागा॥ गीता की दी साख सन्त सुरती। पण्डित चाहूं जागा ॥ ४ ॥ सोहं सागर० ॥ ४ ॥

परमानन्द पैरी ५ नग २१ रंगत खरी ताल खैरवो ॥

१ लावणी अघोर मत की ॥

ये उलट अघोरी अलख भवन जाता है। सोहं सीसा पी मन मुरशिद खाता है॥ टेर॥ दिल नगन मगन करणी कन्द्रा रहता है। जपै ओ३म् मन्त्र दिन रैन शब्द कहता है॥ और लोभ मोह मुरदे की खाक लाता है। और काम क्रोध का शीस कटा जाता है॥ ले ज्ञान खोपरी हाथ मगनमाता है॥ १ ॥ सोहं सीसा० ॥ १ ॥ अब ऊंच नीच नहिं नैण निजर आताहै। वो सर्वज्ञी होय सर्वरूप चाहता है॥ पं-गला बणके परवत पे ध्याता है। और गूंगा बणके चारों वेद गाता है॥ फिर कतवारी बण बिना हाथ काता है॥ २ ॥ सोहं सीसा ॥ २ ॥ फिर अंध चन्द होय रीझ मांज पाता है। जीने मरने का इलम भी आता है॥ यह अजब देश की उलटी सुण बाता है। सत चित अ-घोरी आनन्द का दाता है॥ रहै अष्ट सिद्ध नव निद्ध सङ्ग साथा है ॥ ३ ॥ सोहं सीसा० ॥ ३ ॥ अघोर पंथ का अन्त कया जाता है। वां देव दृश नहिं चन्द सुरज पाता है॥ गिरधरगणेश अघोर पन्थ गाता है। है अलख अघोरी सव सृष्टी खाता है॥ ये और भगोरी भ्रष्ट विषय न्हाता है॥ ४ ॥ सोहं सीसा० ॥ ४ ॥

पैरी ५ नग २२ रंगत खरी ॥ ताल खैरवो ॥

२ लावणी दरवेश की ॥

ये फिक्र फकीरां फाक सिंवरता सांई । उलफत में उलझे प्राण खुदा के मांई ॥ टेर ॥ तज दीन उड़ाई नींद निगी दे मांई । हुआ मन मुफलस मंजूर खुदा के तांई ॥ तन मन तह मंद कूं मार मिला दिल सांई । करणी कम्बलिया ओड अडब ना कांई ॥ तन में फेरे तसबीर, पीर है जांई ॥ १ ॥ उलफत में उलझे० ॥ १ ॥ दरवेश भेस भय मिटी भरम की भांई । दिल चश्म चमकती आफताब की भांई ॥ करे अलफ अवाज हलफ हक रब के तांई । कलमा सूं भरते कदम काड दिलबांई । कहै इल्लिल्ला रसूल राम एक सांई ॥ २ ॥ उलफत में उलझे० ॥ २ ॥ हुये मस्त मका दिल पका की जारत जांई । अबरू में खुला असमान कुदरती गांई ॥ औरां कूं भिस्त दे मेटे दोजख पांई । कहै अनलहक्क सब फना मेरी नहिं दांई ॥ नहिं हिन्दू मुसलमान जान मेटांई ॥ ३ ॥ उलफत में उलझे० ॥ ३ ॥ यह ख्याल हाल दरवेश मस्त हुये सांई । वो खुदा जुदा नहिं दीन देख दिल मांई ॥ गिरधरगणेश हुये मस्त मर्म ले यांई । जिन पढ़ लिया कथन कुरान वेद की छांई ॥ यह ख्याल हाल दरवेश समझ ओर कांई ॥ ४ ॥ उलफत में उलझे० ॥ ४ ॥

पैरी ५ नग २३ लावणी रंगत खरी ताल खैरवो ॥

३ लावणी जती की ॥

होय बाल जती रख दृढ़ मती सुण भाई । इन्द्रियन जीते सोइ जती मोक्ष कूं पाई ॥ टेर ॥ सत गढ़ शरण जाय मन की

मूंड मुंडाई । होय चेला ज्वाब सुण धरम लाभ अरथाई ॥ करै ज्ञान गोचरी हरदम गम कूं खाई। त्यागी खोटी सब दृष्टि बहन है माई ॥ ओ३म् से हुआ नोकार शब्द सुखदाई ॥ १ ॥ इन्द्रियन जीते० ॥ १ ॥ सोहं भैरव का इष्ट दिष्ट मम्माई। जतमत का जन्तर खैंचके तन्तर ताई ॥ जो मिले सो मितर नहिं दुश्मण दरसाई। ये सत विद्या की समझ रमज सें पाई ॥ है श्रावग शील संतोख निरप दोय भाई ॥ २ ॥ इंद्रियन जीते० ॥ २ ॥ ये काम क्रोध मद लोभ मोह लरकाई । मन चित बुध ये अहंकार की टोली आई ॥ होय गुणी गुरांसां पकर तुरत चिमटाई। ले ज्ञान ताजना मार मिटी घमटाई ॥ लरकन कूं पकर के सत विद्या सिखलाई ॥ ३ ॥ इन्द्रियन जीते० ॥ ३ ॥ हुये सिरी पूज सोहं पद सुरती छाई। वे केवलज्ञानी भया वेद यूं गाई ॥ गिरधरगणेश यूं भणे राह बरताई। सोहं प्यारा वो जती जीत जुग जाई ॥ ये कची मती का जती जूतियां खाई ॥ ४ ॥ इन्द्रियन जीते ० ॥ ४ ॥

पैरी ५ नग २४ लावणी रंगत खरी ताल खैरवो ॥

१ लावणी जंगम की ॥

जंगम जीते जुग ले शंभू का शरणा । शिव रटन कियां सूं मिटै जनम और मरणा ॥ टेर ॥ जिन शबद गुरु कर धर लिया भेख विचरणा । सतसंग अंग रंग लगा हिये में धरणा ॥ जत सत का क्रीट पहरे मुकट मनोरथ हरणा । जस की झोली खोली जिव्या शिव करणा ॥ घडे ज्ञान घंट ले हाथ खात गम जरणा ॥ १ ॥ शिव रटन० ॥ १ ॥ गुरु गम पैरी फेरी जंगम नित करणा । घर ध्यान ज्ञान आसा तज

आसन करणा । कर भजन भोख दिल होक दे हिरदा भरणा । चढ़ सुरत निरतके शिखर नहीं आखरणा ॥ होय जबर खबरकर उलटे पैर उतरणा ॥ २ ॥ शिव रटन० ॥ २ ॥ जंगम जुरिया अंगम देह चोर पकरणा ॥ पचीस पांच को बांच काड पण धरणा ॥ तन मन मारा धारा दिल ज्ञान अफुरणा । म्हा देव सेव काया कैलास दुख हरणा ॥ सेवा देवा दिल एक देख लिया शरणा ॥ ३ ॥ शिव रटन० ॥ ३ ॥ जंगम जीता बीता डंड जम का भरणा । इस हाल चाल चड गया सोहं पद धरणा ॥ गिरधरगणेश यूं भयो जंगम जग टरणा । शिव शिव रट सासे सास चाय कूं चरणा ॥ यह समझ वेद का भेद हिये में धरणा ॥ ४ ॥ शिवरटन ॥ ४ ॥

पैरी ५ नग २५ लावणी रंगत खरी ताल खैरवो ॥

५ लावणीं नाथ की ॥

हुया एक देख वो नाथ निरंजन पूरा । गुरु गम सम मुद्रा पेहर बजाया तूरा ॥ टेर ॥ मूंडा मन तन मारो ममता हुया सूरा । करणी कोपिन कस दशइन्द्री किया चूरा ॥ अनुभव खोली झोली भैरव सैं पूरा । करै अलख खलक घट मांय सन्त वो ठूरा । करै ज्ञान ध्यान भोजन जिव्या पर भूरा ॥ १ ॥ गुरुगमसम ॥ १ ॥ बाना छाना पग प्रेम पावरी खूरा । अमृत पातर जल पिये हिये मंजूरा ॥ सत की सेली झेली जोगी अवधूरा । गल नाद ओद कर फूंके उडाया कूरा ॥ आसा पे आसण मार सार लिया मूरा ॥२॥ गुरुगमसम० ॥२॥ सम दम साधन घट लगी समाधी जूरा । सुखमन सेरी पैरी बजे अनहद तूरा ॥ औघाट घाट बैठा नहिं जोग अधूरा । बां खण्ड ब्रह्मण्ड सब खोज जगत

का बूरा । नहिं नाप आप है सोहं सन्त हजूरा ॥ ३ ॥ गुरुगमसम० ॥ ३ ॥ दानव देवत सेवत संसार मजूरा । घट मठ व्यापक अम्बर ज्यूं सन्त हजूरा ॥ गिरधरगणेश भणै वेद ऋषी भरपूरा । वो नाथ बात सुण दूजा तो नकली नूरा ॥ करै भेक्ष धेक और पच्छ वाद अधूरा ॥ ४ ॥ गुरु गमसम० ॥ ४ ॥

——o——

भरमभंजन पचीसी ॥

पैरी ६ नग २६ लावणी लंगरी रंगत ताल खेरवो ॥

१ लावणी गुरुगमपैरी ॥

कठिन त्याग वैराग गुरू अजनेश्वर का सुणिये शाना । कोइ विरलाही जाना करी है जोग जुगत भगवा बाना ॥ टेर ॥ गिरह गवन नहिं भवन जिनों का अलख खलक में है रहना । मधुरे बैना १ बोलता कंवल खुले जिन के नैना ॥ आसण बणाया ठाट जमी का पाट चाट पे नित सोना । बोलत मोना, सुन्न शिखर में घर जिन का जूना ॥ जग की मेटी ताप हुया निज आप आप कूं पैचाना ॥ १ ॥ कोइ विरलाही० ॥ १ ॥ पांच पचीसूं मार लियो है सार सृष्ट घूमे ज्ञाना । मानूं कुंजर शाना, उदय और अस्त अन्त सुण पय्याना ॥ शरीर की सुध छाड नहीं है आड पाड परवत जाना । ज्यूं घुरै निशाना, पांच है तंत अंत का पय्याना ॥ दुनियां में दूभेद मेटिया छेद छयां धरते ध्याना ॥ २ ॥ कोइ विरलाही० ॥२॥ पचा पची पंत मेटिया सन्त सेण सव कूं जाना । क्या भवन

मसाना एकहि एक एकभई रसाना ॥ जिन के आगे अगम आरसी दीस रही चखू नैना । ये जोग का बाना, मुगत मायाने दत्त दिल में छाना ॥ भोजन फाका खावे किनका गम गंभीर खाना पाना ॥ ३ ॥ कोइ बिरला० ॥ ३ ॥ अष्ट सिद्ध नव निद्ध सन्त के खरी हाथ हाजर खाना । वे सन्त सुजाना, बजे अनहद बाजा दे दे ताना ॥ गिरधरगनेश गुरु है अजनेस जिन सत्त शबद लागा बाना । पिया अमृतदाना, उड़ाया मोह माया धर निस्साना ॥ ये क्रोड़ लाख में एक समझ ले नेक निगम नहिं है छाना ॥ ४ ॥ कोइ बिरला० ॥ ४ ॥

पैरी ६ नग २७ लावणी रंगत लंगरी ताल खैरवो ॥

२ लावणी मस्तलोकां की ॥

सन्त अमोलक रतन मणी ठोकर में पारस मिलता है । बिन तकदीरां, परख कां हाथ बीच नहिं झिलता है ॥ टेर ॥ गहला गूंगा बणा के बावरा जगहटरी में चलता है । रूप कुरूपा, बरण भंवरन के संग में मिलता है ॥ बोलै अमृत बैन वाद वीवाद बिना दिल खिलता है । चमकत दम दम वदन विज्ञान हवा सूं हिलता है ॥ प्रेम मगन हो गये सन्त सूबेर शाम नहिं गिनता है ॥१॥ बिन तकदीरां ॥१॥ खाना पीनाहै स्वाद एकरस जिह्वा इन्द्री गिलताहै । आप अकरता, वचन बाणी के संग नहिं पिलता है ॥ खरै खरावट ख्याल खतम दुनियां के साथ नहिं ललता है । ज्ञान ध्यान सूं भरा दरयाव कटोरा छलता है ॥ दया की दौलत दे दुनियां कू भली बुरी सूं सिलता है ॥ २ ॥ बिन तकदीरां० ॥ २ ॥ जागत सोवत सुन्न शिखर भिन महल मंडप नहिं तुलता है । मंडी मसाणो लिया विसराम बास निस किलता

है ॥ मिसरु तकिया देख तखत दुनियां दाई नहिं डुलता है । चाट चौवटे परामसीत मदारा खुलता है ॥ यह मस्तां का सांग सजन रहीम राम एक गिनता है ॥ ३ ॥ बिन तकदीरां० ॥ ३ ॥ वन बस्ती है एक एक आपे में मिले नहिं टलता है । दरशण परशण, कियां परलैका पाप सब जलता है ॥ गिरधरगणेश मस्तां का महरम जिज्ञासू कूं फलता है । आप बराबर करै कथनी के माफक चलता है ॥ वेद पुरान कुरान उलंग के निज महिमा में दिलता है ॥ ४ ॥ बिन तकदीरां० ॥ ४ ॥

पैरी ६ नग २८ लावणी रंगत लंगरी ताल खैरवो ॥

३ लावणी गुरुमहिमा की ॥

श्री अजनेश्वर महाराज महर कर दिया ज्ञान उजियारा है । भवसागर में पकरिया हाथ उतारे पारा है ॥ टेर ॥ भवसागर में भंवर परा गुरु जामें नीर अपारा है । डूबत राखो, जगत में मच गया घोर अंधारा है ॥ मोह माया की बदली छायी बरस रही चहूं धारा है । नाव खेवटिया, नहीं कोई दीसै घाट किनारा है ॥ पूंजी लाया सो बैठा खाया फकत आसरा थारा है ॥ १ ॥ भवसागर० ॥ १ ॥ मनसा मगर लिया घेर फेर यां सुपना सर्प विष खारा है । मानमींडका, चलै गुरु आसा तृष्णा धारा है ॥ मती मछलिया भिलकत यामें गिरह गोह मतवारा है । पशु और पंछी, पैर फंसगया कुटम यह जारा है ॥ काया काछवा खरा फिरा कवि गिणतां गिणतां हारा है ॥ २ ॥ भवसागर० ॥ २ ॥ इस सागर का शोर देख जिया कम्पत हिरदा म्हारा है । गुरु देवन के, देव हम लिया आसरा थारा है ॥ जनम जनम से मेरी बीनती

चरणों में सीस हमारा है। ज्ञान जहाज में, बैठा लो गुरु मेरे पतत उबारा है॥ ओ३म् मन्त्र कूं साध बैठाया जहाज तो जनम सुधारा है॥ ३ ॥ भवसागर० ॥ ३ ॥ ऐसे हैं गुरु देव और नहिं देव असुर नृप सारा है। बिन सतगुरु से, भटकता चौरासी संसारा है॥ गिरधरगणेश यूं भणै कथन कथनीसूं शब्द, उचारा है। मन का मद्दरमा मार मन ही के बीच विचारा है॥ येही हैं गुरुदेव करेंगे सेव भंवर जुग पारा है॥ ४ ॥ भवसागर० ॥ ४ ॥

पैरी ६ नग २९ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

४ लावणी सन्त जँवरी की ॥

सन्त जंवरी बणाया सोदा ओ३म् मंत्र व्योपार किया। सुर्त निर्त सें जचाया हुवा लाभ खुल गया हिया ॥ टेर ॥ जवाहर जड़ना बणाया गुरुना भक्त भाव बाजार किया। तन मन कांटा सत का सेठ भस्म नग बिका दिया ॥ कई नगीना नरक निसाणी छोड सुरग का बसा लिया। धरम धन कूं, दिया सो अमरापुर व्यापार किया ॥ हरी हाट मन मोहन दास की जिन में सोदा लिखा गया ॥ १ ॥ सुर्त निर्त सें० ॥ १ ॥ हीरो हजार पन्ना विचार मन माणक ने मिला दिया। गिरह की गठरी मोती जोती जड़या रतन भिया ॥ हियो हिरकणी चूनी निरखणी लैनीलम रंग चढ़ा लिया। लाल लायकों, साय की जँवरी भट मिल गया पिया ॥ खोलो चश्म चित परखत पारस सत गुरु ने सुध करी दिया ॥ २ ॥ सुर्त निर्त० ॥ २ ॥ सारंग सार है नई नगीना कपट धूर सूं मिला दिया ॥ अमरापुर का जवांरत छोड़ काचे कूं उठा लिया ॥ सत्तगुरू अस्तुति कहुं कोई ज्ञान सिलो किया सफा

फिया । भवसागर में सजन सुण तोल मोल नहिं थाग थिया ॥ यह जवांर जवंरी खोय गांठ सैं शिर पैं हाथ धर रोय रया ॥ ३ ॥ सुर्त निर्त सं० ॥ ३ ॥ ओ३म् मंत्र निज सार धारली आढ़त संतां लिखत दिया । दसू दिशा में, किया व्योपार सार हरनाम लियां ॥ गिरधरगयोश यूं भणै सजन कर ले सोदा पी ज्ञान थिया । काल चालसूं, निकल भवसागर निकसो जीत जिया ॥ मिलो ज्योति में ज्योति फेर ना चोरासी में जनम लिया ॥ ४ ॥ सुरत निर्त० ॥ ४ ॥

पैरी ६ नग ३० लावणी लंगरी रंगत ताल खेरवो ॥

५ लावणी गंगा जी की ॥

ज्ञानी सन्त गंगा न्हाया सें गंगा पवित्तर होती है। दुनिया दरसण, गंगा का कर के पाप सब धोती है॥टेर ॥ शिव की राणी होके पाणी वडे वेग से वहती है । फेर पहाड़ कूं चली शिव त्याग सिंधु में रहती है॥ गंगा न्हावे सो मुक्ती पावे हर की प्यारी कहती है । प्रीती पुरवक, परस जमद्वार लाज तेरी रहती है ॥ कलंक कटै और काया बटै गंगा जू पाप डुबोती है ॥ १ ॥ दुनिया दरसण० ॥ १ ॥ ऐसे ज्ञानी निरमल ध्यानी वे हंसा हरमोती हैं । बिन पढियां सें, वांचते चाहुं वेद की पोथी है ॥ अनुभव आना निरगुण वाना जगी ज्ञान की ज्योती है । तत्व तखत पैं, बैठ देखत दुनियां सब सोती हैं ॥ सोहं आप जाप नहिं जपणा ऐसो बिरतो होती है ॥ २ ॥ दुनिया दरसण० ॥ २ ॥ विष्णू दरशण कर होय परसन शिव ब्रह्मा लो बोती है । सन्त दरस बिन, गवर लक्ष्मी सावची रोती है ॥ इन्दर चन्द्र सुरज सिधमूनी सब को लारै ओती है । उन सन्तन का दरस कर करके दुर्मत खोती हैं॥

ऐसे सन्त सत्त चित्त आनन्द नहिं कोई न्याती न गोती हैं । ३ ॥ दुनिया दरसण० ॥ ३ ॥ सन्त रमै वे खण्ड ब्रह्मण्ड जां अपनी इच्छा होती हैं । भाग खुले तो, मिले मिट जावै जनम पनोती हैं ॥ ऊंडा भेवा परतक्ष देवा दीखे दृष्टी लोती हैं । घट मठ मांही सन्त यूं व्यापक धागे मोती हैं ॥ गिरधरगणेश यूं भणै गुपत हूं परगट मेरी बभूती हैं ॥ ४ ॥ दुनिया दरसण ॥ ४ ॥

ज्ञानइश्क पैरी ७ नग ३१ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

१ लावणी सुरत्संुदरी की ॥

महबूबां से प्रीत बांध के काम कठण का धारा है । उसी सुर्त्त ने, इश्क में जोग खतम कर डारा है ॥ टेर ॥ साजन के सिणगार सजे उर प्रीत की पटियां पारी है । ज्ञान शीशफूल डार सुमता की मांग संवारी है ॥ नयनों काजल कर्णफूल कानन के बीच गुलजारी है ॥ हार हमेल सब हिवडे ऊपर धारी है ॥ करणी कछनी पहर के नचनी चूंदर धीरज शिर धारा है ॥ १ ॥ उसी सुरतने० ॥१ ॥ लंघन लहंगा छला छाप हाथन में सभी सुधारा है । दिल सनम को चुड़ियां पहर कोई आसक्त कूं मारा है ॥ सत्तका तोड़ा पहर मकोड़ा पायल शोर भया न्यारा है । दिल मञ्जन मस्सी, लगा काजल ज्यूं रेख सवांरा है । मान पान कूं चाव नूर से लेहो सत का प्यारा है ॥ २ ॥ उसी सुरतने० ॥ २ ॥ अतन बतन कूं त्याग चली तज दिया जगत का लाजा है । प्रीत किया तो, सजन बिगरोही हजारों काजा है ॥ प्यारी प्यार किया दिल महरम से मिल गया मालक न्यारा है । भवसागर में इश्क कर कोई यक पार उतारा है ॥ अन्तस अमृत छांट

सुरत काया में सेज सवांरा है ॥ ३ ॥ उसी सुरत ने० ॥ ३ ॥ ऐसा इश्क कर नार यार वोही जो दिल का प्यारा है । उसी इश्क में सुरत ने काम सुधारा सारा है ॥ गिरधरगणेश उस देख सुरत हो गया जो मनमत वारा है । जक्त इश्क में यार क्यूं झूठा झगरा डारा है ॥ इश्क क्रिया महबूब मिले वां वेद कुरान पुकारा है ॥ ४ ॥ उसी सुरतने ॥ ४ ॥

पैरी ७ नग ३२ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

२ लावणी सन्तआसक की ॥

मैं आसक हूं इश्क आस पे लगी प्रीत मिलजा जिगरी । तेरे इश्क में, सनम तज दिया महल घर की नगरी ॥ टेर ॥ इश्क दिवाना होय रह्या मैं तेरी सुरत दिलबर जानी । फिरूं ढूंढ़ता, त्यागिया खान पान पीना पानी ॥ लोकलाज ये काज आज मैंने रमा लिवी दिलवर वानी । इश्क चमन में, बनाया भगवाभेक धर निस्सानी ॥ प्रेम के नेम नहीं है प्यारा हाण लाभ मेटी सिगरी ॥ १ ॥ तेरे इश्क में० ॥ १ ॥ मधुरे वचन नाह सुख को सुण के भर आया हिरदा और नैन । प्यास लगे तब, पियें जल भूख लगे गम खावें सैन ॥ साल दुसाला वार धार मृगछाला पे आसन जपते रैन । तेरी सुरतके, कारणे दिला कूं अपने कर लिया मैन ॥ आसक घूमै इश्क ऐस में जुगत मुगत भर रहि गगरी ॥ २ ॥ तेरे इश्क० ॥ २ ॥ सजन सैन लग गये नैन अब कलना परत बिन देखे तोय । क्रोर जतन कर मिटैना प्रेम पियारे लीना मोय ॥ गादी तकिया छोड़ सनम पे जमी गलीचा रया सोय । मुझ मुरीद पे महर कर अब तो मासुक दिल भर जोय । पीत की आंटी तुल गई कांटी मासुक सूं सुरती झगरी ॥ ३ ॥ तेरे इश्क में० ॥ ३ ॥ इश्क

यार खांड़े की धार सुग घर से शीस न्यारा भाई। सनम इश्क की लगी तब भूल गये जग रसुनाई ॥ गिरधरगणेश यूं भयो इश्क महबूब सुरत मैं ने पाई। जगत इश्क में यार मत डूबो ऊंडी है खाई ॥ ज्ञान इश्क किया सन्त मिला है. मिन्त प्रीत बांधी पगरी ॥ ४ ॥ तेरे इश्क में० ॥ ४ ॥

पैरी ७ नग ३३ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

३ लावणी सन्तआसक की ॥

खुसी हुये दिलवर आसक को देख सुरत अन्तस मेरा। ज्ञान ध्यान कूं ढूंडते मुलक घाट घर २ डेरा ॥ टेर ॥ जिसी रोज से लगी प्रीत दिल चमकत है दम दम मेरा। चाल सूं न्यारा, सजन की उलफत मोहबत ने घेरा ॥ सुणतो यार बिन प्यार कियां सें मच गया है कीचर गेरा। हुया वदन जो मेरा फकत चश्मा सूं निरखे मुख तेरा ॥ तेरा तो दीदार दूर है नहिं न्यारा सब के भेरा ॥ १ ॥ ज्ञान ध्यान कूं० ॥ १ ॥ अजब तेरी है चाल नैनकी परी झिलक झट पट मारा। गुल हुसन का प्यारा नहीं कोइ चलता खंजर दूधारा ॥ अबरूं में असमान बसे तेरे आफताब नवलख तारा। है गुलजारा, नहीं महताब हीर का उजियारा ॥ अलप अवाज सुणी तेरी मैं हुया मस्त मदभर सेरा ॥ २ ॥ ज्ञान ध्यान कूं० ॥ २ ॥ जैसी खुसबो यार तेरे में नहीं मुश्क फूलनकी बहार। बाग बगीचा नहीं कोइ पैगम्बर देखा हुशियार ॥ बरण बयान कहूं सुण तेरा जाफरान नहिं स्या गेरा। तूं अलख अमोलख नहीं कोइ कंकर पारस है जेरा ॥ नहीं गांव नहिं नांव तेरे मिलने कूं चाहता दिल मेरा ॥ ३ ॥ ज्ञान ध्यानकूं० ॥३॥

तेरे इश्क में यार त्याग कर तुझे मिलन देता फेरा । मैंने घर घर हेरा, नहीं महरम सजन पाया तेरा ॥ गिरधरगणेश यूं भणै खुला घट पाट सजन मिल गया मेरा। हो गया भेरा। देख दुरमती दोषदिल सूं गेरा ॥ गुरु बताया पन्थ मिलाया कन्थ कृष्ण नन्द का चेरा ॥ ४ ॥ जान शान कूं० ॥ ४ ॥

पैरी ७ नग ३४ लावणी रंगत लंगरी ताल खैरवो ॥

१ लावणी सन्त आसक की ॥

हूं बण बैठा इसक्क का आसक्क सुरत सुंदरी है गोरी । कोई मिलावे। मिलावे सजन अरज सुणियो मोरी ॥ टेर ॥ सूते सुखभर सेज मेज पैं परी झिलक नैनां प्यारी । आंख नाक कूं देखके भूल गये सुध बुध सारी ॥ हाव भाव कटाच्छ कटारी कन्थ के हिरदे मारी । उड़ी नींद तन, वींद गइ बिरह चोट आरमपारी ॥ अजब रूप नांहि भूप की प्यारी अमरापुर की है नारी ॥ १ ॥ कोई मिलावे० ॥ १ ॥ धर अम्बर असमान ढूंडता भटक भटक काया हारी । इश्क मिश्क पैं, सिच कोइ देवे मुझे लगती खारी ॥ खाना पीना जीना जांन में सुरत बिना बिगरे सारी । कोई मिला दो मुझ कूं, तुझ कूं क्रोर लाख तन मन वारी ॥ अंदर भगवा भेस देखिया देस दया गुरदम धारी ॥ २ ॥ कोई मिलावे० ॥२॥ अमरापुर है दूर सूर नहिं पूगै ससिया संसारी। शेष महेशा रहेसा, ब्रह्माजी की फुलवारी ॥ औघट गैला घाट बाट पैं नट गये नेझा धारी। ज्ञान ध्यान कूं, जान हम दिलदरियाव डुबकी मारी ॥ मिली सूंदरी ब्रह्म चूंदरी परमानन्द परसा प्यारी ॥ ३ ॥ कोई मिलावे०॥३॥ सुरत सजन कर लिया भजन भवसागर पार भई गुलजारी ।

या इसक की रीती प्रीती परमानन्द पहुंची प्यारी ॥ गिरधरगणेश यूं भयो इश्क आसक की छिब सब सें न्यारी । करें इश्क चाम सूं, नाम सूं जिन के मुख मटिया डारी ॥ वेद पुरान कुरान पुकारें सभी साख सुरती गारी ॥ ४ ॥ कोई मिलावो० ॥ ४ ॥

पैरी ७ नग ३५ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

५ लावणी सन्तआसक की ॥

इश्क यार आसकती मांयें सीस विना धड़ झूंज रया । सनम सोख में, बण्या है घर काजल मैंने सफा कया ॥ टेर ॥ अतन बतन कूं त्याग तनत आसण पर आसा लगा दिया । लाज काज कूं, छोड़ किरिया किरतब मन उठादिया ॥ भोजन फाका खावे किनका तन टुकड़े कूं खिला दिया । भरम करम कूं मेट धर अम्बर बिच में सुला दिया ॥ जुगती मुगती दोनूं ही नांख्यों मन मुरशद सूं मिला रया ॥ १ ॥ सनम सोख० ॥ १ ॥ घूमत ज्ञानी कुंजर ध्यानी सकल सृष्ट अनकार किया । अजाप जाप कूं नाप सुरती निरती ललकार दिया । पांच चोर को मूंछ मोर कें पचीस परखत पकड़ लिया । तीन अवस्था समजता तीनों गुण के तीर पिया ॥ वां आसक मासुक बण्या बैठा मन बुद्धी नहिं जाण रया ॥ २ ॥ सनम सोख० ॥ २ ॥ घट मठ में परकास उसी का प्यारी प्रीतम मिला दिया । वां एक आप है, बाप पृथिवी पर्य्यन्त अनेक किया ॥ चमक्यो लोहा तलफत सूवा यह मान मैंने दृष्टान्त दिया । इसी तरह सूं, करें वो दिष्टा दरसण दिरस किया ॥ है वो न्यारा सब के भेरा इस महरम में रम्म रया ॥ ३ ॥ सनम सोख० ॥ ३ ॥ एक यार है सब का तार करता हरता का सार कया । यूं वेद पुरा-

ना, कुराना पिंडत सुरती सुणा रया ॥ गिरधरगणेश यूं भणै सज्जन भवसागर से मैं पार हुया । घर काजल की, कोठरी सांई हो के सफा रया ॥ सनम इश्क कर दिया मिश्क जिन के मुखरे पें धूर दिया ॥ ४ ॥ सनम सेख० ॥ ४ ॥

भक्ति पैरी ८ नग ३६ लावणी खरी रंगत ताल खैरवो ॥

१ लावणी भगवान् का वचन की ॥

भक्ती करता सुण भक्त कहत भगवाना । भक्ती में मुक्ती मिलै शिगरक्के श्याना ॥ टेर ॥ देख दुख पाये प्रहलाद ध्रू धर ध्याना । बलीराजा गये पयाल नीचलै खाना ॥ हरिचन्द का बिगरा हाल द्रोपदी श्याना । पांडव बिचरे बन मांय बिपत रैवै छाना ॥ फिर मोरधज्ज की लिवी पुत्र की जाना ॥ १ ॥ भक्ती में मुक्ती० ॥१॥ मन मूर मस्त हुया अनलहक्क हैराना । जड़भरत भोग देवी के लगे सुण काना ॥ फरीद सेख टिर गया कुवे के म्याना । एक मस्त कलेजा दिया मिरी भगवाना ॥ नारद कूं नारी करी पलट दिया बाना ॥ २ ॥ भक्ती में मुक्ती० ॥ २ ॥ नरसी पें खरग मण्डलीक काडली म्याना । शिव समन्द ने सूली दिवी नृप वेइमाना ॥ फिर धना भगत घर नहिं खावण कूं धाना । यह सोच सदामा करै लोक दे ताना ॥ कंकण घाली रवि दास कैद हुये ज्ञाना ॥ ३ ॥ भक्ती में मुक्ती० ॥ ३ ॥ मीरां ने मिलियो जहर मिया कर दाना । गिनका करमा सिंवरी खाय मूठा पाना ॥ सब भक्त भ्रष्ट होगया रही फिर आना । सतरू होय कें रता लिया सिरीभगवाना ॥ गिरधरगणेश यूं भणै भक्त वख्याना ॥ ४ ॥ भक्ती मे मुक्ती० ॥ ४ ॥

पैरी ८ नग ३७ लावणी खड़ी रंगत ताल खैरवो ॥

२ लावणी जवाब भक्त को ॥

अब भक्त कहत भगवान सुणो दिल ज्यानी । तुम करो बिघन भक्तो में च्याहूं कांनो ॥ टेर ॥ अब भक्त लडै भक्ती भूमी है छानी । वे सूरबीर सिर गेर लड़त हैं ज्यानी ॥ फिर जरा नहीं है चाय दूसरैं कांनीं । औरां के खातर देवे कलेजा दानो ॥ है भागवान वे भक्त रमाई बानो ॥ १ ॥ तुम करो बिघन० ॥ १ ॥ सब दोलत दुनियां कुटम त्यागियो ज्ञानी । डर प्रीत नहीं पिण्ड मांय सुणो दिल ज्यानी ॥ कोना वन बसती एक धरत है ध्यानी । परलोक पदारथ परवा डर नहिं मानी ॥ वे सदा रहत अलमस्त सन्त सैलानी ॥ २ ॥ तुम करो बिघन० ॥ २ ॥ करै इंद्र कोप गिर परै गगन सुन ज्यानी । तेरा उलट जाय दरियाव मेरी नहिं हानी ॥ करदे परला सब विघन भगत के कांनीं । वे भगत भजे भगवान चमकती श्यानी ॥ वे भगत बिघन सूं नहिं होते हैरानी ॥ ३ ॥ तुम करो विघन० ॥ ३ ॥ भगवत का भजन कर भक्तं गावते तानी । वे अपना आपा चीन्ह हुवा ब्रह्मज्ञानी ॥ गिरधरगणेश यूं भणे भक्त रख आनी । भक्ती करता वेराग ज्ञान पैठा-नी ॥ ये भगत भजे भगवान तजे तो बेइमानी ॥ ४ ॥ तुम करो बि-घन० ॥ ४ ॥

पैरी ८ नग ३८ लावणी रंगत खरी ताल खैरवो ॥

३ लावणी जवाब भगवत को ॥

भगवत कहता सुण भक्त भजे तूं मुझ कूं । तो मैं भजता दिन

रैन तजूं नहिं तुझ कूं ॥ टेर ॥ मैं धरूं भगत को ध्यान प्रेम जस गाऊं । कोइ पड़े भगत में भीर मदत चढ़ आऊं ॥ भगतां को मदत कार अन पाणी फिर खाऊं । है भक्त वछल मेरा नाम फतह कर आऊं ॥ भगतां आगे सिर झुका जोरूं नित भुज कूं ॥ १ ॥ तो मैं भजता० ॥ १ ॥ वैकुंठ सुरग नहिं गऊलोक में ध्याऊं । और सातदीप नवखंड ब्रह्मण्ड नहिं पाऊं ॥ भक्तां के द्वार पैं बैठो चिमन मनाऊं । मेरा भक्त देवे ठंडो ऊनी सोइ खाऊं ॥ बिन मिले भगत दिल जक प-ड़ती नहिं मुझकूं ॥ २ ॥ तो मैं भजता० ॥२॥ भगवत कहता सुण भक्त चाकरी चाऊं । तुम देखो रजा मैं तुरतहि हुकम उठाऊं ॥ तेरे अष्ट सिद्ध नव निद्ध द्वार पैं लाऊं । वैरी होय तो बतला दे तुरत पजाऊं ॥ फरूं छत्रपती गढ़ सिखर फहके धुज कूं ॥ ३ ॥ तो मैं भजता० ॥ ३ ॥ भगवत कहता पहलो भगतां नें ताऊं । पीछे भगतां घर हुकम उठावण आऊं ॥ गिरधरगणेश यूं भणे भोग नहिं चाऊं । भगती देदे भगवान हरी गुण गाऊं ॥ भगती सूं मुकती मिले मुरख नर बुज कूं ॥ ४ ॥ तो मैं भजता० ॥ ४ ॥

पैरी ८ नग ३९ लावणी खरी रंगत ताल खैरवो ॥

१ लावणी भक्त का जवाब ॥

अब भक्त कहत भगवान भरोसा भारी । भक्तां नें भगवत रूप करो गिरधारी ॥टेर॥ अब श्याम मुरत बसरही हिरदे में थारी । मेरी लगन लगी दिन रैन सुनो गिरधारी ॥ ये प्रेम फुंवारा चले नैन में भारी । दिरद हम हम हुये खरे खबर ले म्हारी ॥ यूं भक्त कहत भगवान निधारी थारी ॥ १ ॥ भक्तां नें भगवत० ॥ १ ॥ तेरे इश्क ऐस में तज

दी दुनियां सारी । सब कुटुम कबीलो भ्रात तात महतारी ॥ खाना पीना सब त्याग कै ममता मारी । सुक जपै तुम्हारा जाप लगन इकतारी ॥ काया माया मन त्याग कैं चौंदो फारी ॥ २ ॥ भक्तां नें भगवत० ॥ २ ॥ गिनका गोपी तैं तारा अधम अनारी । करमां मीरां सिंवरी घर जीमो त्यारी ॥ फिर ध्रू प्रह्लाद विभिषण गज किलकारी । हरीचन्द बलीराजा मोरधज्ज संसारी ॥ शिव समन्द नरसी पीपे गैंद आय मारी ॥ ३ ॥ भक्तां नें भगवत० ॥ ३ ॥ सैधां सजना काछ था अधम अनारी । रविदास शेख घाटम की घाटी टारी ॥ फिर जाट जुलावा छीपा सूं है यारी । भक्तां का कारज कीन्हा कृष्णमुरारी ॥ गिरधरगणेश कह सुण हरि बेर हमारी ॥ ४ ॥ भक्तां नें भगवत० ॥४॥

पैरी ८ नग ४० लावणी खरी रंगत ताल खैरवो ॥

५ लावणी भगवत की ॥

भगवत भक्तां घर हुकम उठावण आया। भक्तां का कारज किया कृष्ण मन चाया ॥ टेर ॥ माडे दोलत दे सुखिया मङ्गल गाया। घुमत घुरला हस्ती नृप द्वारे आया ॥ कर रया खमा सब जगत भगत पद पाया । भूलोक नाम किया अमर सुधारी काया ॥ फिर बजत निसाणा छत्तर चंवर ढुलाया ॥ १ ॥ भक्तां का कारज० ॥१ ॥ तेतीस क्रोर शिव ब्रह्मा विष्णू लाया । नारद सारद गणेश शेष सुण ध्याया ॥ आय इन्द्र खरा ले बिवाण शंख बजाया। सब सुनत धुनो तिरलोकी दरशण चाया॥ अब भक्त गये बेकुंठ पुष्प बरसाया ॥ २ ॥ भक्तां का कारज० ॥ २ ॥ अब भक्त गया वेकुंठ पुरी जस छाया । सब देव हाजरी करें बिलक्षण माया ॥ कोई नन्दन वन का अमृत भोजन पाया । कोई रीज मांज

कर भक्त अगारी धाया ॥ विष्णू भक्तां नें जोत में जोत मिलाया ॥३॥ भक्तां का कारज० ॥ ३ ॥ कोई धन जननी जग मांय भगत कूं जाया । बावन पीढी तिरगई गांव सुख पाया ॥ गिरधरगणेश हुये भक्त सुधारी काया । हरि अपने मांय मिला के यूं फुरमाया ॥ भक्तों सूं मुक्ती दूर नहीं सुण भाया ॥ ४ ॥ भक्तां का कारज० ॥ ४ ॥

मनखंडन पैरी ९ नग ४१ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

१ लावणी मन की ॥

इस काया में मन्न मिरग है अंधेर बन में जाय चरा । बड़ा जोर है, त्यागी सूरवीर सूं नांय मरा ॥ टेर ॥ पांच तत्व की देह मिरग की नारायण रच दी प्यारा । काम क्रोध की, पीठ है लोभ मोह गरदन सारा ॥ मान का माथा भया मिरग का चला जानवर हुशियारा । ऐसा ये मिरगा, उजारा खेत बच दरखत सारा ॥ बनमाली ने चोट चलाई मिरग बाग में रया खरा ॥ १ ॥ बड़ा जोर है० ॥ १ ॥ मन्न मस्त होगया मिरग ये जोर पवन का मांय भरा । किया शोर ये, कह जैसे पारा वेकलू मांय ढुरा ॥ सात दीप नव खण्ड ब्रह्मण्ड में तिरलोकी के मांय अरा । उलटा ये मिरगा, देखले पवन वेग ज्यूं आय खरा ॥ जगत घास ये विनास कहिये मिरगा चर हो रया हरा ॥ २ ॥ बड़ा जोर है० ॥ २ ॥ निज्ज मन्न लिया सेल सन्न किया सतधोरा जिन नलधारा । पुन्न पागरा, कठण काठी लगाम लीनी प्यारा ॥ जत सत बकतर पहर उसी नें सील सेल कर पैं धारा । करुना कती और धरम की ढाल बांध ससतर सारा ॥ ज्ञान बाण सूं मारा मिरग

कूं भइ शिकार लो मृगछारा ॥ ३ ॥ बड़ा जोर है० ॥ ३ ॥ सतगुरु होगया बद्ध फिर शब्द नाम कूं ऊछारा। सजी सिकारा, चला जा बंका मारग घर थारा ॥ गिरधर गणेश यूं भणे सजन सुण एक नाम हर का धारा। पांच तत्व कूं मिला नर मिरगे को कुत्तो मारा ॥ दस इन्द्रिय कूं साज साधन से वेद पुराण समज्यो नीं जरा ॥ ४ ॥ बड़ा जोर है० ॥ ४ ॥

पैरी ९ नग ४२ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

२ लावणीं मन की ॥

मन मेरे में आया मिला है चित चोकस कर लीनासर। एक दोय तोड़ हैं साव समझ लिया एकहि घर ॥ टेर ॥ समझ रमज को बा सजन सख गया नहीं नां आया है। थिर चर नाहीं देस और अयार नहिं काया है ॥ ऐसा है अद्वैत आतमा जां तो ब्रह्म नहिं माया है। सुते जो सृष्टी भासतो थावर जंगम छाया है ॥ नहिं कोइ भाव अभाव बात बिचार यार हिरदे में धर ॥ १ ॥ एक दोय कूं ॥ १ ॥ ज्ञान नहीं अज्ञान तात और मात नहीं वो जाया है। चार वरण का ख्याल उस ख्याली में नहिं पाया है ॥ राई में सूमेर समझ फिर वो नहिं तन्तर ताया है। वेदचार की सुरतियां हिल मिल ऐसा गाया है ॥ देव नहीं है सेव सजन वां जबर निबर का है नहिं डर ॥ २ ॥ एक दोय कूं० ॥ २ ॥ जांण नहीं पहचांण यार वो नां कोइ भूखा धाया है। जागत सोवत जहां नहिं सूल भूल का दाया है ॥ एक नहीं है दोय जोय वां समज रमज नहिं चाया है। तूं तत दोनूं असी पद कहना नांय समाया है ॥ कहणी बाणी थकी यार सुण दीन बैन भासत नहिं कर ॥ ३ ॥ एक दोय कूं ॥ ३ ॥ नहिं विट्ठी

नीषेध भेद तैं झूठाइ मन में लाया है ॥ जीना ने मरणा, डरणा नहीं काल ने खाया है ॥ गिरधरगणेश यूं भणे कथन थकगया ज्वाब नहिं आया है । ज्ञान विज्ञाना, अज्ञाना बाणी सूं नहिं गाया है ॥ है सोई है आप नाप नहिं ज्यूं धागे मोतियन की लर ॥ ४ ॥ एक दोय कूं० ॥ ४ ॥

पैरी ९ नग ४३लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

३ लावणी आशातृष्णाखंडन ॥

आशा तृष्णा कूं मार लिया दुबद्या कूं रखणा ना चहिये । मन रागी, हुया तो बन कूं जाना ना चहिये ॥ टेर ॥ स्वारथ साथ सब न्यात जात इण में जो घमंडणा ना चहिये । धन जोबन माया, पहर के मद में छिकणा ना चहिये ॥ भला कियां से बुरा होय फिर उण सें लरना ना चहिये । दिन चार का मेला, किसी से बैर बसाणा ना चहिये ॥ हरी कथा, सिंवरण में बैठ के उसमें सोणा ना चहिये ॥ १ ॥ मन वैरागी० ॥ १ ॥ जिसने पैदा किया तेरे कूं उसे बिसरणा ना चहिये । निज ज्ञान पाय के, करम का भरम कूं रखणा ना चहिये ॥ हाण लाभ और माल खजाना खोया तो डरना ना चहिये । शरीर साथ है, दान दे मान कूं रखणा ना चहिये ॥ खोल आंखियां कोई नहीं तब सोग सोचणा ना चहिये ॥२॥ मन बैरागी०॥२॥ अतर अरगजा छांट देह पल पल कूं निरखणा ना चहिये । पाणी का बुदबुदा इसे मलमल कैं धोणा ना चहिये ॥ पाप मैल चढ रया वदन में इनकूं रखणा ना चहिये । सतगुरु की संगत जाय के खाली आणा ना चहिये ॥ जोग जुगत होगई सनम बीयोग खेलणा ना

चहिये ॥ ३ ॥ मन बैरागी० ॥ ३ ॥ देव पूज फल ना मिलिया तो उसे पूजणा ना चहिये । तेरे मांय चिदानन्द देह संसार डुलाना ना चहिये ॥ ज्ञान आंबफल खाय पेड बंबूल पै चढ़ना ना चहिये । अब कैसे बचोगे, दोष करमां में काडणा ना चहिये ॥ गिरधरगणेश यूं भणे हरी रट और जांचणा ना चहिये ॥ ४ ॥ मन बैरागी० ॥ ४ ॥

पैरी ९ नग ४४ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

४ लावणी बियोग की ॥

वियोग मांहे जोग साज सिध उनकी सोभा भारी है । हम ने तो देखा, भेख धर नांव बिना दे हारी है ॥ टेर ॥ सजे जोग बोयोग कबीरा पांचूं इन्द्री मारी है । सुत कुटुम कबीलो, हरिरट ,रखता घर में नारी है ॥ एक रोज की केहूं हकीकत जाणे दुनियां सारी है । श्री कृष्णचंद्र जी, रतन विणजारा बालद भारी है । पूछ काशी के बासी कबीरा जिन के घरकूं ढारी है ॥ १ ॥ हमने तो देखा० ॥ १ ॥ धना धरम कर दिया बीज कूं खाली खेती बाई है । श्रीकृष्णचन्द्र जी खेत कमोद सिटी निपजाई है ॥ सैण भगत का सांसा मेट्या आप बणे हरि नाई है । रबीदास के, घर कूंडी में गंग बहाई है ॥ पीपा गैंद मारी हिरदे में मिल गये कृष्ण मुरारी है ॥ २ ॥ हमने तो० ॥ २ ॥ नरसी महता जूनागड में पूरा ग्रस्थ गुलजारी है । एक रोज की, लिखी वो हुंडी कृष्ण सकारी है ॥ और काज तो कई सुधारे भक्तन के रखवारी है । जिन भरा माहेरा, सो नय्या जरी थान की त्यारी है ॥ धाप गये सब मनुष दिरब सूं उनकी तो लीला न्यारी है ॥ ३ ॥ हमने तो देखा० ॥ ३ ॥ केई वियोगी सजे सजन वो सजगइ करमाबाई है ।

श्री कृष्णचन्द्र जी, खींच और राव हाथ सें पाई है ॥ जिनका ज्ञान हो गया हरी के चरणों में सुरत लगाई है । मीरां मेड़तणी, गुणी जन उनकी गत नहिं पाई है ॥ गिरधरगणेश यूं भणै हरी कूं मेरी बेर क्यूं देरी है ॥ ४ ॥ हमने तो देखा० ॥ ४ ॥

पैरी ९ नग ४५ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

५ लावणी ब्रह्मगुन की ॥

ब्रह्मगुन कूं चीन्हा हमने गिगनमंडल लगगइ डोरी । प्रेम का प्याला, पिया जिन करमां की तोड़ी वेरी ॥ टेर ॥ गिरह रूप या वणी भागसी । पासी इण में पड़ी नागसी । जाणै दु- नियां सबी साची । जागत ही अजाण भई फिर कर रहि है मेरी मेरी ॥ १ ॥ प्रेम का प्याला० ॥ १ ॥ ज्ञान रूप की तन है हाट । सब जिनसीं का इणमें ठाट । मूरख कूं नहिं मिलती बाट । पापां सें देता फेरी ॥ २ ॥ प्रेम का प्याला० ॥ २ ॥ मुगत रूप का ब- णिया ठाट । दिल मंडल की खुली कपाट । धनाभगत से होगये जाट । जिण हरि सूं टेरी टेरी ॥ ३ ॥ प्रेम का प्याला० ॥ ३ ॥ गिर- धरगणेश ने मिलगइ वाट । तब गिरह भागसी सूं गया न्हाट ॥ बं- का मारग ओघट घाट । जिन सतगुरु से पाई सेरी ॥ ४ ॥ प्रेम का प्याला० ॥ ४ ॥

सुरत सुलक्षण पैरी १० नग ४६ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

१ लावणी सुरत सुहागन की ॥

इस काया में सुरत सुहागण प्रेम पवन भररहि पाणी । किसने

जाणी, सोई नर जाणी वो अपने घर आणी ॥ टेर ॥ नारायण ने रची सुरत कू दसों दिसा ओढ़ी सारी । बणी तीजणी, सुरत का नूर सूर सब सें भारी ॥ मही मती की मांग सवॉरी अमरापुर घर भइ नारी । इब छलबारी पहर कूमती सोकनैं की न्यारी ॥ बिन्दी टोटी पहर धीरज की सच्चमुखीं मिरगा नैणी ॥ १ ॥ किसने जाणी० ॥ १ ॥ हियो हार और दुलरी नार हर नांव प्रीत पटिया पहणी । दया धरम का हाथ दोय बाजूबन्द लूंबां ठाणी ॥ चाऊं दिसां को चुरलो सोहे सवद रंग भयो रस्साणी ॥ संतोख सील का, है गजरा छला मूंदरी नख आणी ॥ किरिया को काजल मंहदी मन जल गहणा पहर बण रहि राणी ॥ २ ॥ किसने जाणी० ॥ २ ॥ कथना करी और पग से अरी हरि नेह नेवरी रतनजरी । जतना सांटा दया को लंगर पग में पहर्‌यो परी ॥ जत सत पायल बिछिया सोवै पुन्न पोलरी नख से भिरी । सब पहर कै गहणा, नार बा काल बली से कुस्ती लरी ॥ काल बली कूं जीत गई है सुरग बास बस गइ राणी ॥ ३ ॥ किसने जाणी० ॥ ३ ॥ अमृत नीर की आई सीर तब देहगार गगरी ठाणी । बड़ा पेच से, सूरत कूं बिरला नर कोइ घर आणी ॥ गिरधरगणेश यूं भणै सुरत कूं तूं है सुरगकी निस्साणी । भरलै पाणी, प्रेम पवन की धारा जल आणी ॥ अमृत जल कूं पिये हरी जन वेद साख बोलै बाणी ॥ ४ ॥ किसने जाणी० ॥ ४ ॥

पैरी १० नग ४७ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

२ लावणी सुरत मछलिया की ॥

दिल दरयाव में सुरत मछलिया बण कै डुबकी मारी है । सा-

गर सार को, सुरत ने देखी रचना सारी है ॥ टेर ॥ निर्मल नीर भ-
र्या सुख सागर मीठी धार अति भारी है । दिल मेहरम में बणी
सब अलख खलक की त्यारी है ॥ माया मगर और काया काछवा
नाभ कंवल गुलजारी है । नाना प्रकार की, गुंज भंवरन की सुगंधी
सारी है ॥ कंवल गगन में ओम् सोम् वां ब्रह्मा ने वेद उचारीहै ॥ १ ॥
सागर सार को० ॥ १ ॥ सोहं सिखर है सहर नहर वाँ खुले फूल फुल-
वारी है । तीन लोक का, वास वसर्या ज्यूं बाग में क्यारी है ॥ अ-
नहद बाजा बजे नाद वां सूक्ष्म सेरो न्यारीहै । रवी ससीकी किरण नां
पूगी उदबुद भारी है ॥ झिल मिल ज्योती चुगती मोती सुरत मछलिया
प्यारी है ॥ २ ॥ सागर सार को० ॥ २ ॥ अनन्त कोट गड मांय
सुरत ने देख के सबद विचारी है । एक निरप तो करत है राज बड़ी
हुसियारी है ॥ सागर सीप सीप में मोती यूं माया सहित मुरारी है ।
बिन सतगुरु सें, परा है भेदभंवर संसारी है ॥ सागर एक समझ ले नेक
जग ऊठे तरंग अपारी है ॥ ३ ॥ सागर सार को० ॥ ३ ॥ थावर जंगम
जोय ब्रह्म का शब्द रूप आकारी है । बिना सबद सें, नहीं कोई दोसै
चश्म हमारी है ॥ गिरधरगणेश यूं भणे मिले गुरु पूरा बताई सेरी है।
सुख सागर का, बांधिया घाट लगादी पेरी है ॥ चढ़े सन्त सोहं सि-
खर में होगया आप मुरारी है ॥ ४ ॥ सागर सार को० ॥ ४ ॥

पैरी १० नग ४८ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

२ लावणी सुनमंडल सुरती की ॥

सुन मण्डल गड सहर सुरत परणी जरई प्रीतम प्यारी । सुणो
चित दे, पिया वर लिया प्राण के आधारी ॥ टेर ॥ नवल वनी बणा

गई ओढ कैं चित की चूंदर सतसारी । इत्र छल बारी, गुंथाई प्रेम पटी भइ गुलजारी ॥ मत मोतियन की मांग संवारी अमरा पुर घर भइ नारी । जरा धीरज धारी कान में फूल फिकर कूं दी टारी ॥ दया दावणी अमृत पावणी सांचको सुरमो सूधारी ॥ १ ॥ सुणो चित्त दे० ॥ १ ॥ ओंहार हिरदै में धार कै दत्त की दुलरी झट पहरी । तज- वीज की तिलरी बयां बाजू कंकण बुध सें मिलरी ॥ नेम के नूपुर पायल ऊपर रींज मांज सखियां गारी । तन फुलवारी,रची संग मंहदी मोहन गुल क्यारी ॥ दत्तदावणा प्राणपावणा चढ़ी गगनकी मढ़ारी ॥२॥ सुणो चित्त दे० ॥ २ ॥नारद सारद शिव सनकादिक ब्रह्मा वेद वां ऊचारी । भई जिगकी त्यारी बजे अनहद बाजा मुरली न्यारी ॥ भाणकोट परकास पिया की सोभा बरणी नहिं जारी । भइ पिया की प्यारी,करी है जोग जुगत सुखमण सारी ॥ सखी सहल कर रही महल जिण अपनी काया सूधा- री ॥ ३ ॥ सुणो चित्त दे० ॥ ३ ॥ पुरुषारथ की फेंट बांध ले गुरुज्ञा- न निश्चैधारी । नहीं कछु भारी, टिटोरी लरी सिन्धु कर किलकारी ॥ गिरधरगणेश यूं भणे मेरे सतगुरु श्याम हैं रखवारी । सुरत पीयारी लगन किया बिरला सन्त तन मन वारी ॥ सन्त सुरत हुया एक हरी कूं देख प्रीत निरगुण पारी ॥ ४ ॥ सुणो चित्त दे० ॥ ४ ॥

पैरी १० नग ४१ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

१ लावणी ज्ञान चोपड़की ॥

ज्ञान चोपड़ तूं रमले भाई सत का पासा डार दिया । सुरत की सारी, लगा संसार बाजी कूं जीत लिया ॥ टेर ॥ नारायण ने बणाई चोपड़ तरह तरह रंग डार दिया । नूर उसी का, इसी में फुलवारी

गुलजार किया ॥ सूत सत का रंग नांव का धरमका धागा चलादिया। मन को मगजो, लगाई तार जंतरी खांच लिया । कारीगर ने बणाई चोपड़ नांव हरी पे ख्याल किया ॥ १ ॥ सुरत की सारी० ॥ १ ॥ नारी वहोतर कोठा तिहोतर सुरती सारी हला दिया । तीन लोक का, पासा इसी मांय ने खेल रया ॥ चार दिसा की चार विरतियां अन्तेकरण गुलजार भया । चलो या चोपड़ जगत में जीती बाजी हार रया ॥ पाप पुन्न का दाव लगा है कोइ जीते केई हार गया ॥ २ ॥ सुरत की सारी० ॥ २ ॥ पहला पासा बालपणे का खावण खेलण में खोय दिया । लगा दूसरा, तिरिया के रंग रूपमें सोय रया ॥ तीजा पासा विरधपणे का सिर पे हाथ धर रोय रया । हर नांव की पूंजी, जिनोंने जनम धरा पिण नांय लिया ॥ जब पापांका करज भयाहै दुखी होय यां रोय रया ॥ ३ ॥ सुरत की सारी० ॥ ३ ॥ गिरधरगणेश ने बणाई चोपड़ ब्रह्मज्ञान का सार लिया । चला ख्याल ये कोई सत पुरुषां विरला जीत लिया ॥ सब चोपड़ का एक सार सुण प्रीत नांव हर का जो लिया । नर चोरासी सें बचेला अमरलोक जावेगे जिया ॥ ऐसी बाजी खेल जगत में अमर नांव सुधरै काया ॥ ४ ॥ सुरत की सारी० ॥ ४ ॥

पेरी १० नग ५० लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

५ लावणी भवसागर फुलवाद की ॥

भवसागर पें बाग लगाया वनमाली गिरधारी है । सरगुण निरगुण खेलता करमां के अनुसारी है ॥ टेर ॥ महीं मटी की बणाइ जिसने तरह तरह की क्यारी है । छत्तीस जात की, लगादी फुलवारी

गुलजारी है ॥ अमृत नहर चलाई जिसने पावे बाग बनमारी है । हजार तरह की सुगन्धी कोइ मीठी केई खारी है ॥ लगे लाख चोरासी इस पैं हुया नांव संसारी है ॥ १ ॥ सरगुण निरगुण० ॥ १ ॥ करम कणेर और मन्न मोगरा ज्ञान गुलाब हजारा है । चपल का चंपा फूल ये सुरग बाग में सारा है ॥ दया दाऊदी करुणा केतकी गुण मंहदी गुलजारा है । मति मोर सली ने बनाया हुसन चिमन सब न्यारा है॥ चश्म चमेली खुली बाग में लेवे सुगन्ध बनमारी है ॥ २ ॥ सरगुण निरगुण ॥ २ ॥ नरग नीबू जाखी जांबू सीताफल मतवारा है ॥ मन बेर जोर ने, पाप फल लगा बाग में कारा है ॥ डर की दाखां नार नारङ्गी सेवाप सेव छल मारा है । जरुना ते जमेरी गंडेरी छूटा रस मोधारा है ॥ द्रोह दोब दारम्भ लगी ये नरग़न की फुलवारी है ॥ ३ ॥ सरगुण निरगुण० ॥ ३ ॥ भवसागर पैं बाग लगाया अमरापुर के मन भाया । सुरत निरत सें, ख्याल ये सरगुण निरगुण छन्द गाया ॥ गिरधरगणेश यूं भणै हरी का पार किसीने नहिं पाया । ऋषी मुनी जन, अब लिया केइ बादी गोता खाया ॥ जिनकी किरपा है भगतां पैं जिनकूं भगती प्यारी है॥ ४ ॥ सरगुण निरगुण० ॥ ४ ॥

अमीरस पैरी ११ नग ५१ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

१ लावणी सुरत कलाली की ॥

सुरत कलाली हे मतवारी प्याला पाव मुरारी है । देउं तन मन वारी, जाय दिल की दुर्मत सब मारी है ॥ टेर ॥ काया नगरी जाणूं सगरी, भटक भटक देह हारी है । ज्ञान गुरुने बताई चश्म हवेली थारी है॥

करी चित खुला हिया ॥ लगनो अगनो लोभ लकड़ियां रैन दिवस मिल जलादिया । भय का भभका, रसाणी देह देग सूं लगादिया ॥ दुख की जिनसां छोड़ इसी में खुसी का खुसबो डारा है ॥ १ ॥ इसी नसे में ॥ १ ॥ जरना जल भर लिया इसी में मन्न मझूरा डारा है । इसी नसे का सजन सुणा तोल मोल सब न्यारा है ॥ कपट की केसर डर की दाखां ग्यान गुलाब छुवारा है । किरिया किस्तूरी गुरगुण इलायची वेपारा है ॥ इसी का जंतर खैंच इसी में हुया ग्यान बुधियारा है ॥ २ ॥ इसी नसे में ॥ २ ॥ धरम धवण हो रही खिवण सतगुरु की सीख जिन धारा है । करम कलस पैं, टूंटी अमृत पररहि धारा है ॥ मांयें रंगतर खैंच्या अंतर खिमा का छिलका मारा है । चढ़ गया अमीरस, मैल मलकें में उतारा सारा है ॥ ऐसा प्याला पियै हरीजन घूमै गज मतवारा है ॥ ३ ॥ इसी नसे में ॥ ३ ॥ करम मिटया है पीणा कठया हर नाव रटया नहिं धारा है । मन मदमाता ताता फिरत जनम नर हारा है ॥ गिरधरगणेश यूं भणै सजन फिर उनकूं नहिं बुचकारा है । कहत कविसुर समझ नर बात काल का चारा है ॥ ऐसा प्याला पीले रेभाई हर से करले यारा है ॥ ४ ॥ इसी नसे में ॥ ४ ॥

पैरी ११ नग ५३ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

३ लावणी भांग का खंडन ॥

भांग मारतो भांग पिये नर नैण घुरायां सोता है । सुध बुध भूला भटक काया कंचन कूं खोता है ॥ टेर ॥ मिले यार दो चार चोहटे ले बूटी कांही धाया है । घोट छाणके, पिवो बेहाल नसा बो: छाया है॥

पड़तागुड़ता गनीम वस होय हलवाई पैं आया है। पास अंगूठी अडाणी मार माल कूं खाया है॥ औगुण ऊगा घर पैं पूगा ले तिरिया सङ्ग सोता है॥ १॥ सुध बुध भूला०॥ १॥ बिरज बिगड़िया शरीर सोफी अब अम्मल मन भाया है। भांग अमल सें, उपजिया जरदा बीरी खाया है॥ तनक तमाखू सूंघ उडाई ऊंग नसा गरणाया है। काया नगरी अंधेरा भया जीव दुख पाया है॥ राजा भया बलहीण पुना में खोया ख्याल ये होता है॥ २॥ सुध बुध भूला०॥ २॥ खाय जिनस ताजी रणडी-बाजी कर चोरी ले आया है। चीज बिरानी लगी हत्या लारैं जस गाया है॥ और अफयड उपने हैं कोई सायर ने समझाया है। सबी नसां को, भवानी भांग ने जान खपाया है॥ नसा लिया सो प्राण दि-या नर हाण लाभ नहिं जोता है॥ ३॥ सुध बुध भूला०॥ ३॥ नर लानत देदिवी नसै कूं किया काम मन चाया है। बियोग भोगी, कोई जोगी सुधारी अपनी काया है॥ गिरधरगणेश यूं भणे भांग का सांग कया इकराया है। सज्जन समझ कै, त्याग दी तुरत मुरख पछ-ताया है॥ ज्ञानी तो राजी ने लरता पाजी खोय दुरमत फिर रोता है॥ ४॥ सुध बुध भूला०॥ ४॥

पैरी ११ नग ५४ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो॥

४ लावणी भांग का मंडन॥

औगण हरणी आनन्द करणी भांग भली शिव पाई है। ऋषी मुनी जन छके वके ज्ञान गुणी गुण आई है॥ टेर॥ शिवजी ने सुख किया दिया है दान नसां को माई है। सब जीवन को, हरै दुख ताप आप फुरमाई है॥ देखत दुरमत जाय पाय पीछे लहरां बरताई है।

ऊगी अलबेली। हेली हरख निरख सुखदाई है ॥ हरकत हाणी भगी लगी अपणे आनन्द में छाई है ॥ १ ॥ ऋषी मुनी जन० ॥ १॥ दिया बदन कूं जोर हुया दिल और शक्ति उठ आई है। भोग जोग होय, लगत है स्वाद् चणा रुचखाई है ॥ करवा नहिं परवा है किन को राजा रंक इकराई है। घूमै गेंवर, देवल महलमंडो सो जाई है ।। प्रपंच भूला होय रया दूला देख दसा मनभाई है ॥ २॥ ऋषीमुनी जन० ॥२॥ ताकत टूटी तो पीलै बूटी होय सूरा बतलाई है। रंग दे वाकूं, जाकूं जोग जुगत गत पाई है ॥ प्याला पीना होय रंगभीना विरह लगाई घाई है। पुरब पुन के, आसरै सुरत निरत संग धाई है ॥ ऐसे होय रहे मगन लगो चाहे अगन भूल भरमाई है ॥ ३ ॥ ऋषी मुनी जन० ॥ ३ ॥ नसा लेवै नर नार थार बालक बुड्ढा सरसाई है। रोगी ने भोगी, जोगी नसे में नैण घुराई है ॥ गिरधरगणेश यूं भणे भांग पीया हरि सुरत लगाई है। नर दोष नहीं है, सही है लेख लिख्या हो जाई है ॥ जां तां तेरे हाथ समझ एक बात वेद यूं गाई है ॥ ४ ॥ ऋषी मुनीजन० ॥ ४ ॥

पैरी ११ नग ५५ लावणी लंगरी रंगत ताल खेरवो ॥

५ लावणी गुरुगम गुटकी ॥

गुरुगम घूंटी लेके बूंटी पी प्याला होय गुलजारी। पांच जोध का, काडिया मोद पटक कुस्ती मारी ॥ टेर ॥ कहूं ख्याल सुण हाल हकीकत सत्त सिला बूंटी डारी। प्रेम नेम का, पिस्ता बिदाम मिरचां है कारी॥ दया मया केसर किस्तूरी इलायची अंतस चारी। लगनी लोडी गोडी वार छोड़ जिनसां सारी ॥ तन मन दोनूं मिला इसी पे दिया जोड़

फिक्र सत रज तम पैं दोनो धूरा । मन का मेहरम, मारता मान तान उड़ गइ दूरा ॥ करणी कलम किताब देखकै पाप पुन्न लेखा पूरा । भांडा भरम का, खोलकैं देख लिया निरगुण नूरा ॥ कहतां बरण बयान सजन बो गौर श्याम नहिं है भूरा ॥ १ ॥ मुकर महल में० ॥ १ ॥ चित की चसम खुल गई चन्द्र सोहं प्रकाश तपता सूरा। सुखमण सेज में, सुंदरी रमै पहर निरगुण चूरा ॥ सुन में सबद सबद में सुरता दिल दरयाव देख्या मूरा। पिण्ड ब्रह्मण्ड का, भेद यह जल से तरङ्ग नहिं है दूरा ॥ उलटे पन्थ चढ़ गये सन्त वे घर अम्बर का खुर बूरा ॥ २ ॥ मुकर महल में० ॥ २ ॥ जहां पाप नहिं है पुन्न सजन वां सच्च नहीं दीवै कूरा ॥ दिष्टा दरशण दिर्श यह नहीं दृष्ट में मंजूरा ॥ इश्वर नहिं है जीव जुगत और मुगत नहीं कण नहिं डूरा । हाली माली, नगारा नहीं समजणा हजूरा ॥ सहूकार नहिं चोर चसम सूं देख भगे क्यूं सैंपूरा ॥ ३ ॥ मुकर महल में० ॥ ३ ॥ सब का किया निषेध भेद है आपहि आप वसता सूरा । घिरत छाछ से निकाला सो विज्ञानी है पूरा ॥ गिरधर गणेश यूं भणे यार वो बसत नहीं दूरा ऊरा । ऊंचा ने नीचा, देख ले सब सृष्टी का है मूरा ॥ ऐसे ही वेद पुराण पंडित करते हैं कथन निरगुण नूरा ॥ ४ ॥ मुकर महल में० ॥ ४ ॥

पैरी १२ नग ५८ लावणी लंगरी रंगत ताल खैरवो ॥

३ लावणी ब्रह्मचोले की ॥

कारीगर करतार इसी में दरज मरज वोले वाणी । देह थानकूं खैंच के नाप छांट कर ले आणी ॥ टेर ॥ सूत सत का परम दत्त का गर्भ वास ताणा ताणी । पुन्न पाण है, बणाई कारीगर ने रसराणी ॥

पवन तार दिया मांयें डार हरनाम रंग सब ने जाणी। नारायण ने बणाई हिकमत ठग मत सब ठाणी ॥ मास नऊ दस लगे सूत पें भई थान की निस्साणी ॥ १ ॥ देह थान कूं० ॥ १ ॥ करुना करता-णी भई ज़तरणी सास गज्ज ग्रह पैठाणी। करमां की कलियां, छांट ये ब्रह्म चोले का सब जाणी। सुई सनम की तार मरम की दरज मरज चोला आणी। कारीगर ने चुका दी अपनी देनगी सब मांणी ॥ कारीगर के घर सें छूटा बोल रया उलटी बाणी ॥ २ ॥ देह थानकूं ॥ २ ॥ उलटा चोला ततत्व रोला माया मोह का घर खोला। हुया मन सें मैला भया है काम क्रोध के संग गोला ॥ मैं लियां माले बडा कुसाले दिल में जाणत नहिं चाले। चोरां की संगत, यार सुण बडा २ ओधा हाले ॥ रैन दिवस लग गये ऊंदरे होय गई अब इन की हाणी ॥ ३ ॥ देह थान कूं ॥ ३ ॥ चोरासो का फेरा झाला कुट-म घर छूटा बाला। हरिनाम बिना नर, देख ले नहिं तेरे होगा उजियाला ॥ गिरधरगणेश यूं भणे सजन धोय सत साबू झट पट लाला। भवसागर सूं उतर जावो पार होयजा निरयाला ॥ ब्रह्म चोला तैं पाया जुगत सें वेद पुराण की पढ बाणी ॥ ४ ॥ देह थान कूं० ॥ ४ ॥

पैरी १२ नग ५९ लावणी खरी रंगत ख्याल ॥

ताल खैरवो ॥

४ लावणी ख्याल ॥

राजरीत सब हाल हकीकत समझ सजन करणा फिर काम। रहो जत मतमें अपणा सत में चित में चाहो हर का नाम ॥ टेर ॥ चाहे राज कंगाल काज मतरखो लाज रहणा निस्काम। पिछलो रात

कर हरसूं बात देह मिटे घात सिंवरो नी शाम ॥ त्याग भरम रख सत धरम मत होना गरम भूठा धन धाम । जाय अकेलो लोग देखेलो आग सिकै लो जलतो चाम ॥ बडे पीर मरगये मोर थे हुसनहोर नहिं पाई थाम ॥ १ ॥ रहो जतमत में० ॥ १ ॥ काया भूटी पल पल खूटी नहिं बूंटी मर जावै दाम । घरी हाल कोइ आज काल जग छोड़ चाल पोंचो उस गाम ॥ विषय भोग तूं त्याग सोग है सभी रोग होय जावे आम । कंचन काया, पाईरे भाया अवसर आया खोले नी खाम ॥ तनके ओले साहेव वोले तूं क्यूं डोले चाहूं धाम ॥ २ ॥ रहो जतमत ॥ २ ॥ स्वारथ साथ सब न्यात जात मत करणा बात लग जावे डाम । करदे त्याग सब दिल की राग अब तुर्त भाग भज लोजे राम ॥ मोह फुलवारी सन्तां वारी चोंदो फारी जग वेकाम । धर के ध्यानी होगये ज्ञानी सुधरी श्यानी मिल गये श्याम ॥ लगी लगन होगये मगन मिट गई दगन सब दिल की घाम ॥ ३ ॥ रहो जतमत में० ॥ ३ ॥ वो है राजा अनहद बाजा कर लिये काजा जिन का नाम । जो नर जपता कभी न खपता वो नहिं नपता जग का थाम । गिरधरगणेश यूं भणे जणे नहिं जिसे प्रार्थना मेरी प्रणाम ॥ जिन से पाया मुदा वोही है खुदा जुदा नहिं रहीम राम ॥ यह पढ़ जावे सोख मिटे सब होक तोख होय जावे नाम ॥ ४ ॥ रहो जतमत में ० ॥ ४ ॥

पैरी १२ नग ६० लावणी लंगरी रंगत भूलती तालखैरवो ॥

५ लावणी सन्त स्त्रीत्याग की ॥

सन्त सिरी कूं त्याग भागके भजन किया एकण सासे । मगन

हुवा महाराज, इरीने मेट दियो जम को तासै ॥ टेर ॥ जग कूं झूंटा जाय छाया कीना दीना। दिल के धारी, ज्ञान ध्यान की चली अरगती काट दिया जम का पासै ॥ सन्त सुवा कर जोर पींजरा तोर चले बन कूं नासै। रया जगत का जीव भूल गया पीव अन्त हो गया नासै ॥ ये हुया सन्त कोई सूरा, दिया कनक कामणी धूरा, हुये ज्ञान ध्यान भरपूरा, वाने गुरू बताई निज आसै ॥१॥ मगन हुया महाराज०॥ १ ॥ सन्त सोधना करी खबर सब परी प्राण पाया जासै। खुला घट्ट का पाट निरख लिया ठाट हुया दिल उजियासै ॥ जीव सीव भये एक समझ ले नेक पिंड नहिं है सासै। मिटा जगत का भरम रया नहिं करम क्रोट कंचत मासै ॥ घट खुल गया अमृत कूंपा, है रूप थका अरूपा, वे सन्त सृष्टि का भूपा, देवत दांनू सबही दासै ॥ २ ॥ मगन हुया० ॥ २ ॥ सन्त रमै वे खंड ब्रह्मंड पूरण परमानन्द सब भासै। कीरी कुंजर काग बाघ में दीस रही अपनी आसै ॥ हुया एक में एक निरन्तर देख लिया सोहं सासै। अब त्याग नहीं है राग फटी गुदरी पहरण मुल मुल कासै ॥ वे हुया एक रस स्वामी, वे सब घट अन्तर्यामी, नहिं रही कामना कामी, दरसण कीना होय जिज्ञासै ॥३॥ मगन हुया० ॥ ३ ॥ अष्ट सिद्ध नव निद्ध सन्त के संग चलै रहती पासै। लहर महर कर देवे लेवे जिज्ञासू होत दिल हूलासै ॥ गिरधरगणेश यूं भणे मिले जिज्ञासू मिटै जम की तासै। मुक्त महल करै सहल शिष्य सोहं पद होय जा परकासै ॥ वे सब घट पूरण सांई, देख क्रोर लाख के मांई, मिले एक दोय फिर कांई, मिलणा मुश्कल कर तल्लासै ॥ ४ ॥ मगन हुया० ॥ ४ ॥

---

१ हरीजस पचीसी ॥

इस पचीसी के पचीसूं हरजस पांचू रागणी अर्थात् राग देस १ आसावरी २ सोरठ ३ झंझोटी ४ और कालिंगरा ५ में गाये जाते हैं ॥

ज्ञान चेतावणी पैरी १३ नग ३१ राग देस ॥

ताल होरी ॥

१ हरीजस गृहस्थ त्याग ॥

जग मांयें स्वारथ तणी रे सगाई। अब मोंहे मालम परी छै ठ- गाई ॥ टेर।। मूरख पच पच करत कमाई। राजी बहुनर माई।। तिरिया ठगणी अधिक सवाई। सो पटकैला ऊंडी खाई ॥१॥ जगमांयें।।१।। भूल भंवर पर्‍यो मत कोई क्यूं बूर का लाडू खाई। कंटां मांयें रोग होय जाई यो मोटो दुख छै भाई ।। २ ।। जगमांयें० ॥ २ ॥ दादा बाबा मर्‍या है जंवाई तैं कांई पदवी पाई। तातैं स्वारथ तोड़ सगाई थनूं सतगुरु नींद जगाई ।।३।। जगमांयें० ।।३।। कुटुम कबीलो करत बड़ाई पकरत चूहा रे बिलाई । गिरधरगणेश निगे दे गाई यापें ज्ञान की खरग चलाई ॥ ४ ॥ जगमांयें० ॥ ४ ॥

पैरी १३ नग ६२ राग देस ताल होरी ॥

२ हरीजस चेतावणी ॥

प्राणिया कह समझाऊं तोय। तूं तो मोह निद्रा मति सोय ।।टेर ॥

सुकरत करले राम सिंवर ले खालो सास मत खोय । देखत भूली ख्याल मच्यो है खलक बहै सब कोय ॥ १ ॥ प्राणियां० ॥ १ ॥ जावे सो दिन फेर नहिं आवे तूं उलट अफूटो जोय । कोण है तेरो तूं है किनको कर निरणो सुख होय ॥ २ ॥ प्राणियां० ॥ २ ॥ झट पट सोदा करले सांईं दा सन्त सूरमा जोय । सिंवरण साबू सुरत सिला पर दिल का तूं दागा धोय ॥ ३ ॥ प्राणियां० ॥ ३ ॥ दुरलभ मिल्यो रे मान को भाईं रा इन की तो पारख मोय । गिरधरगणेश भणै पद ऊंचो नहिं पूगै तो रोय ॥ ४ ॥ प्राणियां० ॥ ४ ॥

पैरी १३ नग ६३ राग देस ताल होरी ॥

३ हरिजस चेतावणी ॥

समझ कैं भंवर भरम कूं पटको । मिटजाय जगत को खटको ॥ टेर ॥ मकरी ज्यूं मनुष बणायो जारो ताल मेल घट घट को । मूरख मकरी पसं मरै दोड़ो पैर कुटुम मांयें अटको ॥ १ ॥ समझ कैं० ॥ १ ॥ यां नहिं तेरो तूं नहिं याको तातैं तूं करलै सटको । झूंटी बाजी दीसै रे भाई ख्याल बणयो छै नट को ॥ २ ॥ समझ कैं० ॥ २ ॥ मूरख मोह माया मांयें फूल्यो बणयो छै मोह को मटको । ठेस लगे तब फूट जायगा चार दिना को चटको ॥ ३ ॥ समझ कैं० ॥ ३ ॥ समझै तो सैन बता देऊं भाई नहिंतो काल करे थारो गटको । गिरधरगणेश बचै नर बिरला खायो है ज्ञान को झटको ॥ ४ ॥ समझ कैं० ॥ ४ ॥

पैरी १३ नग ६४ राग देस ताल होरी ॥

४ हरिजस चेतावणी ॥

समझ लिया ज्ञान सन्त गुरुगम का । यां तो नहीं है भरोसा दम

का ॥ टेर ॥ पाणी का महल सहल बादल ज्यूं बदन बणया आदम का । कबहूं अरध उरध नर भटकत काल करत सिर घम का ॥ १ ॥ समझ लिया० ॥ १ ॥ सात द्वीप नव खंड ब्रह्मंड में पेच पऱ्या छै जम का । ब्रह्मा शेष महेश मुरारी मरे पांचमी अंबका ॥ २॥ समझ लिया० ॥ २ ॥ रचना झूंठी खाली मूंठी जग बिजली सा चमका । दीसत भलक पलक थिर नाहीं बाजीगर का झमका ॥ ३ ॥ समझ लिया० ॥३॥ साधू समझ रमझ लिया मेहरम मन मुरशद ने छमका । गिरधरगणेश भणे भवसागर पार हुया दिल हम का ॥४॥ समझलिया० ॥४॥

पैरी १३ नग ६५ राग देस ताल होरी ॥

५ हरीजस चेतावणी ॥

जंवरी सन्त ज्ञान दे गठरी । खोलो जर जेवर की हटरी ॥ टेर ॥ ब्रह्म बिचार अचार बदन में दूर करी घट पट री। सोहं सेट भेट हुये जंवरी सत चित आनंद झट री ॥ १ ॥ वे जंवरी सन्त० ॥ १ ॥ भव जल देस सेस सिर ऊपर खुली हाट झमकट री । क्रोरां लाख झांक कर जावे आवे जावे पिणघट री ॥ २ ॥ वे जंवरी सन्त ॥ २ ॥ बोली सूं मोल अमोल रतन दे लेना बिदामी फट री । निरगुण नूर हूर नग चमकत शिप पहरे झट पट री ॥ ३ ॥ वे जंवरी सन्त० ॥ ३ ॥ भूला पीव जीव जग भटकत बात करत नटखट री । गिरधरगणेश भणे अमरापुर देस हमारा मठ री ॥ ४ ॥ वे जंवरी सन्त० ॥ ४ ॥

भक्त पैरी १४ नग ६६ राग देस ताल होरी ॥

१ हरीजस भक्तों के भीरू भगवत का ॥

भगतां रे भगवत भीरू भाई । जाके कमी तो रही नहिं काई ॥

टेर ॥ जे कोई कष्ट परै भगतां में तुरत सुणै रघुराई । भोजन करतो भांणो छोड़े आप दुखी होय जाई ॥ १ ॥ भगतां रै० ॥ १ ॥ करता भजन भगत भगवत का गिणता नहिं बादसाही । सात दीप नव खंड में खेलै जिन कूं तो डर है नांही ॥ २ ॥ भगतां रै० ॥ २ जांचे नांय और कूं बंदा ऐसी अदल चलाई । जो मांगै जिस कूं धन देता पास नहीं छै पाई ॥ ३ ॥ भगतां रै० ॥ ३ ॥ ऐसा भगत रमै भगवत सूं धन थाकी है माई । गिरधरगणेश भणै ब्रह्मज्ञानी हूं भगतां की महिमा गाई ॥ ४ ॥ भगतां रै० ॥ ४ ॥

पैरी १४ नग ६७ राग देस ताल होरी ॥

२ हरीजस जवाब भगवत का ॥

कहै भगवत जस भक्तांरो गाऊं । म्हारा भक्त बुलावै जां जाऊं॥ टेर ॥ आठूं पहर भजूं भगतां नें और कहीं ना जाऊं । दरसन परसन कर भगतां नें पीछे भोजन पाऊं ॥ १ ॥ कहै भगवत० ॥ १ ॥ नहिं कोई सुरग बैकुंठ सुहावै सजन सुरत कूं चाऊं । बछरो फिरै रे गाय के पीछे हूं भगतां सङ्ग धाऊं ॥ २ ॥ कहे भगवत० ॥ २ ॥ तीन लोक को नाथ निरंजन बिना बुलावै आऊं । ठण्डो ने बासी काची ने कोरी झूट भगत की खाऊं ॥ ३ ॥ कहै भगवत० ॥ ३ ॥ मैं हूं भगत मेरा वो भगवत उण बेच्यो बिक जाऊं । गिरधरगणेश भणै ब्रह्मज्ञानी मैं इधकी का दरसाऊं ॥ ४ ॥ कहै भगवत० ॥ ४ ॥

पैरी १४ नग ६८ राग देस ताल होरी ॥

३ हरीजस जवाव भगवत को ॥

समझ कोई दुख भगतां नें देता । जाका प्राण तुरत हर लेता॥

टेर ॥ रोगी होय तो वैद बण जाऊं पीर भगत की सहता । निरधन होय तो धन ले जाऊं कलम चलावै महता ॥ १ ॥ समझ कोई० ॥ १ ॥ गूंगा होय तो मैं गुरु गम देऊं करुं वेद को वेता । चश्म खोल दूं अंदर बाहर अगलो पिछलो वो कहता ॥ २ ॥ समझ कोई० ॥ २ ॥ गादो राज महाराज कराऊं और भूप सङ्ग बहता । ध्रुबछल नाम अमर है जाका धर अम्बर तक रहता ॥ ३ ॥ समझ कोई० ॥ ३ ॥ कीना यज्ञ भक्त भगती का फिर्‌या है कीरती नहता । गिरधरगणेश भणै ब्रह्मज्ञानी कृष्ण सिरी मुख कहता ॥ ४ ॥ समझ कोई० ॥ ४ ॥

पैरी १४ नग ६९ राग देस ताल होरी ॥

४ हरीजस जवाब भगवत को ॥

हरीजन परवा काऊ नहिं राखै । श्री कृष्ण वेद यूं भाखै ॥ टेर ॥ मगन हुया घूमत मतवारा अमृत सींकां चाखै । खमा खमा संसार करत है जरा रे निजर नहिं झांकै ॥ १ ॥ हरीजन० ॥ १ ॥ शिवजी तो सिनान करावे ब्रह्मा ग्रास दे वाकै । विष्णू सेज संवार पोढावो भैरव जकतो झाकै ॥ २ ॥ हरीजन० ॥ २ ॥ चन्द सुरज दीपक कर देता शेष गणेश ताकै । वरुण कुवेर इन्द्र धर्मराजा तो मूंडै सामा झांकै ॥ ३ ॥ हरीजन० ॥ ३ ॥ सब देवत करता असतूती वे गोविन्द गुरु म्हाकै ॥ गिरधरगणेश भणै ब्रह्मज्ञानी कृष्ण सिरी मुख भाखै ॥ ४ ॥ हरीजन० ॥ ४ ॥

पैरी १४ नग ७० राग देस ताल होरी ॥

५ हरीजस जवाब भगवत को ॥

सन्त वे निरगुण का अवतारा । जाका नहिं है आरम पारा

॥ टेर ॥ सागर सन्त तरंग सब देवत चक्र फिरत संसारा । फैन बुद बुदा थावर जंगम जल सूं उपज्या सारा ॥ १ ॥ सन्त वे निरगुण० ॥ १ ॥ ब्रह्मंड क्रोर कोट गिणती ना उपज खपै कोइ वारा । ज्यूं का त्यूं सन्त वे चेतन नहिं जाणै रुद्र विचारा ॥ २ ॥ संत वे निरगुण० ॥ २ ॥ चींटी चिड़ी रे सिंह हसती में आप बसै इकतारा । सरवर तरवर परबत पंछी अपने अंग पैं धारा ॥ ३ ॥ सन्त वे० ॥ ३ ॥ ऐसा संत सकल सृष्टी में एक मिलै कोइ प्यारा । गिरधरगणेश भणै ब्रह्मज्ञानी कृष्ण धणी कहै म्हारा ॥ ४ ॥ संत वे० ॥ ४ ॥

ज्ञानइश्क पैरी १५ नग ७१ राग देस ताल होरी ॥

१ हरीजस प्रीत को ॥

लगी मोरे माधो जी सूं प्रीत । हूं आसक्र मासुक्र के ऊपर त्याग दिवी विपरीत ॥ टेर ॥ सुपने में तसबीर तिहारी देखी मैं सज-न सुचीत । जैसे भंवर लोभाय पुष्प पैं गावै सजन का गीत ॥ १ ॥ लगी मोरे माधो जी० ॥१॥ प्यारा प्रीत लगी है तुम पें त्यागी है तुरत अ-नीत । प्याला प्रेम पिया मासुक्र पैं उष्ण सहै वे सिर सीत ॥ २ ॥ लगी मोरे० ॥ २ ॥ मिलणें की मन में मासुक पें आसक इश्क अती-त । अलख जगावै आस इश्कों दो बाजी लेवेंगे जीत ॥ ३ ॥ मासुक्र मिलेरे इश्क कर आसक भांगी भरम की भीत । गिरधरगणेश भणै ब्रह्म-ज्ञानी करी है इश्क की जीत ॥ ४ ॥ लगी मोरे० ॥ ४ ॥

पैरी १५ नग ७२ राग देस ताल होरी ॥

२ हरीजस प्रेमपत्रिका को ॥

इश्क की आसक लिखता पाती । मोरी लगन लगी दिन राती

॥ टेर ॥ भक्त भजे भगवान मिले सुण ऊंच नीच हुवो जातो । भगवत भजे रे भगत भगवत कूं ज्यूं दिवलो है बातो ॥ १ ॥ इश्क को० ॥ १ ॥ तेरे मिलण की खातर मासुक हियो उमंग आई छातो । प्रेम फुंवारा चलत नैनन में ज्यूं कामण मदमातो ॥ २ ॥ इश्क को० ॥ २ ॥ जां तां देखूं सुरत तिहारो नकल निगे में आतो । सोहं सजन मिले मासुक तब दिल की दुरमत जातो ॥ ३ ॥ इश्क को० ॥ ३ ॥ थोड़ा हरफ हकीकत समझो लिखी है प्रेम की पातो ॥ गिरधरगणेश भणे ब्रह्मज्ञानी सुरत श्याम कूं चातो ॥ ४ ॥ इश्क को० ॥ ४ ॥

पेरी १५ नग ७३ राग देस ताल होरी ॥
३ हरीजस आसक आंटी को ॥

इश्क की आसक पकरी छै आंटो । अब तूं मासा मैं कांटो ॥ टेर ॥ चाहे मिलो रे आज अब जुग में कमर कसो दे गांटो । सूक्षम इश्क किया मन सूरे मैं तुरत काट देऊं घांटो ॥ १ ॥ इश्क को० ॥ १ ॥ रांना रोवत फिर्या रे रांड पैं हम कायर नहिं टांटो । हम ने इश्क किया इश्वर सें सुरत जगत सूं फांटो ॥ २ ॥ इश्क को० ॥ २ ॥ तन मे तीर लग्या मासुक पैं प्रीत बधाई बांटो । चाखै सन्त सूरमा सुगण यण सहे तुलसी कांटो ॥ ३ ॥ इश्क को० ॥ ३ ॥ आगे पैर धरे ना पीछे चूंको है सेखदी सांटो । गिरधरगणेश भणे ब्रह्मज्ञानी ऐ सुंदर तू मांटो ॥ ४ ॥ इश्क को० ॥ ४ ॥

पेरी १५ नग ७४ राग देस ताल होरी ॥
४ हरीजस मासुक मिलाप ॥

इश्क में अनाग मिल्या रे अवधूता । मैं ने किया है जगत का

कूंता ॥ टेर ॥ सीस उतार हाथ धर लीना दीना है दिर्श पर जूता । सोहं शब्द बजी इक टंकी मिल गया सन्त सपूता ॥ १ ॥ इश्क में अलख० ॥ १ ॥ समझ मांयें ने सजन बसत है ज्यूं तन्तू पट सूता । कारण देख तज्यो मैं ने कारज एक पिता बो पूता ॥ २ ॥ इश्क में॥ २॥ अलपज्ञो आसक मासुक मिल ज्ञान पिलङ्ग पैं सूता । होगया एक मिटी दोय दृष्टी कीना छे इश्क अछूता ॥ ३ ॥ इश्क में ॥ ३ ॥ मुष्टी में मासुक नहिं मावै या दृष्टी करत नहिं कूंता । गिरधरगणेश भयो ब्रह्मज्ञानी मैं ने दिया छे इश्क दानू ता ॥ ४ ॥ इश्क में ॥ ४ ॥

पैरी १५ नग ७५ राग देस ताल होरी ॥

५ हरीजस आसक का ॥

इश्क कर सन्त हुया बे दरदी । जा ने लोक लाज सब धरदी ॥ टेर ॥ मगन हुया आसक मासुक ने आसा पूरण करदी । मासुक पैं आसक अलबेला हो गया जोरा मरदी ॥ १ ॥ इश्क कर० ॥ १ ॥ ज्ञान गुदरिया आसक ओडी उश्न लगे ना सरदी । भूख प्यास व्यापै नहिं पिंड में काया प्रेम सूं भरदी ॥ २ ॥ इश्क कर० ॥ २ ॥ आसक ऐस करै ब्रह्मंड में मनुष देव सब दरदी । राजा रंक फकीर दीन होय मांगत अरदी अरदी ॥३॥ इश्ककर०॥३॥ ऐसा इश्क करै सो इश्वर चित की चाबी जरदी । गिरधगणेश भयो ब्रह्मज्ञानी बिना इश्क सब गरदी ॥ ४ ॥ इश्क कर० ॥ ४ ॥

सन्त बधावा पैरी १६ नग ७६ राग देस ताल होरी ॥

१ हरीजस प्रीति लगी ॥

सैयां सत गुरु जी सूं लागी हे । पूरब पुन्न पर सिया मैं देवा या

दुरमत भागी हे ॥ टेर ॥ भूली भवन भरम के मांई हूं बिछरी आगी हे। धर धर जनम जुरी जग मांई बंध रहि रागी हे ॥ १ ॥ सैयां सतगुरु० ॥ १ ॥ सत गुरु शब्द दिया गुरुगम सुण सरवन लागी हे। देवल मांहे देव बताया गुरु है बड़ भागी हे ॥ २ ॥ सैयां सत गुरु० ॥ २ ॥ सुंदर ऊठ चली सतगुरु जी रे चरणां में लागी हे। सरिता सुरत सिंधू सत गुरु मिल ममता कूं त्यागी हे ॥ ३ ॥ सैयां सतगुरु० ॥ ३ ॥ मिलगइ सुरत सजन इक रंगा होय अनुरागी हे। गिरधरगणेश भणै उस भोमी का मैं हूं पागी हे ॥ ४ ॥ सैयां सतगुरु० ॥ ४ ॥

पैरी १६ नग ७७ राग देस ताल होरी ॥

२ हरीजस फागरो ॥

खेलूं सत गुरु जी सूं होरी हे। फेंट गुलाल अबीर अरगचा उड़ाऊं मैं रोरी हे ॥ टेर ॥ लगनी लंहगो ने चित की चूंदर ओढी गोरी हे। करणी कछनी हिवरै पहरी बांधी रेशम डोरी हे ॥ १ ॥ खेलूं सत० ॥ १ ॥ शील सिणगार ज्ञान का गहणा हूं नख चख कोरी हे। मत की तो मंहदी ने संगत सुरमा दिल केसर घोरी हे ॥ २ ॥ खेलूं सत गुरु० ॥ २ ॥ प्रेम पिचरकी प्यारी छोड़े प्रीतम पेरी हे। सुरता ने सजन रमै अमरापुर कर रिमझोरी हे ॥ ३ ॥ खेलूं सत० ॥ ३ ॥ ऐसा फाग रमै रोजीना खेलत होरी हे। गिरधरगणेश भई सुरता वा नन्दकिशोरी हे ॥ ४ ॥ खेलूं सतगुरु० ॥ ४ ॥

पैरी १६ नग ७८ राग देस ताल होरी ॥

३ हरीजस जोगी राजा को ॥

सैयां सतगुरु जोगी राजा हे। नाम निसाण घुरै अनुभव बाजे

अनहद बाजा हे ॥ टेर ॥ हरिजस हाथी आनन्द अंबा री रा उलटा छाजा हे ॥ निरगुण कटक काया नगरी मांयें अंबर गाजा हे ॥ १ ॥ सैयां सतगुरु० ॥ १ ॥ नवसो नार तीन पटराणी रा जोबन ताजा हे । इंगला ने पिंगला प्रीती करती या सुख मन लाजा हे ॥ २ ॥ सैयां सतगुरु० ॥ २ ॥ सोवन सिखर महल तिरकूटी मैं प्याला तूं पाजा हे । सुखमण सेज संवार सूंदरी ले अमृत आजा हे ॥ ३ ॥ सैयां सतगुरु ॥ ३ ॥ रमता राज जोग होय जोगी कर सब साजा हे । गिरधरगणेश भणे वे भोगी है जोगी राजा हे ॥ ४ ॥ सैयां सत गुरु० ॥ ४ ॥

पैरी १६ नग ७९ राग देस ताल होरी ॥

४ हरीजस सतगुरु जी की वाणी उलटी ॥

सैयां सतगुरु जी री वाणी हे । उलटा पंथ कीरी मुख कुंजर रेसी मैं जाणी हे ॥ टेर ॥ बाग लग्यो बिन पृथवी ऊगी भूंजी धांणी हे । जल के जीव नीर बिना सुखिया दुखिया पांणी हे ॥ १ ॥ सैयां सत० ॥ १ ॥ चार चकोर पांख बिन उड गया उलटी तांणी हे । हंसी के काग काग हंसा होय अंतस छांणी हे ॥२॥ सैयां सतगुरु० ॥ २ ॥ मोती में महल महल मांयें मोती किन की हांणी हे । सज सिणगार वदन बिन सुंदर साजन मांणी हे ॥ ३ ॥ सैयां सत० ॥ ३ ॥ बस रया सहर दीसता ऊजर कुण वां डांणी हे । गिरधरगणेश भणे भाइ सन्तां थे कांईं जांणी हे ॥ ४ ॥ सैयां सत० ॥ ४ ॥

पैरी १६ नग ८० राग देस ताल होरी ॥

५ हरीजस सुरतसन्त की एकता ॥

सैयां सतगुरु रंग राची हे । अब नहिं बिछरूं प्राण पिया जी

सूं प्रीती सांची हे ॥ टेर ॥ सत गुरु संग किया करणी सूं जनमूं ना पाछी हे । सुंदर ब्रह्म बर्‌यो पिव प्यारी हिवरै में जाची हे ॥ १ ॥ सैयां सतगुरु० ॥ १ ॥ पिव का रूप अरूप एक नहिं कहणी या काची हे । आगो ने न्यारो ऊंचो ने नीचो भूठो ना साची हे ॥ २ ॥ सैयां सतगुरु० ॥ २ ॥ पिव उनमान बणै नहिं कहणो टीका हूं बाचो हे । ब्रह्मा का वेद चार बक थक गइ सुरतियां पाछी हे ॥ ३ ॥ सैयां सतगुरु० ॥ ३ ॥ सुरती सत्त चित आनन्द भई भूंडी ना आछी हे । गिरधरगणेश सुरत सतगुरु दूजी गिनका वां नाची हे ॥ ४ ॥ सैयां सत० ॥ ४ ॥

खुसाली पैरी १७ नग ८१ राग देस ताल होरी ॥

५ हरीजस भीतर खुसाली को मंडन ॥

साधू भाई भीतर भईछै खुसाली । जिन का तूं चैन बैन सुण अब-दू बात करत हूं काली ॥ टेर ॥ दिल दरपण उलटा कर देख्या ख्याल खतम हूं ख्याली । ख्याली में ख्याल ख्याल मांयें ख्याली रम रयो दे दे ताली ॥ १ ॥ साधू भाई० ॥ १ ॥ सरवर मैं तरवर रच दीना मूल डाल बिन डाली । सुंदर पुष्प लता फल बेली लागत नहिं काउ बाली ॥ २ ॥ साधू भाई० ॥ २ ॥ रज्जू में सर्प सीप में रूपो भाव बंध्यो छै खाली । गंधर्व नगर सुपन की सृष्टी आंख खुली तब हाली ॥ ३ ॥ साधू भाई० ॥ ३ ॥ कर निरणा तिरपत होय बैठा चुप मुख-द्वारे लाली । गिरधरगणेश भणै घट भीतर पकर सुरत ने घाली ॥ ४ ॥ साधू भाई० ॥ ४ ॥

पैरी १७ नग ८२ राग देस ताल होरी ॥

२ हरीजस दुखखंडन ॥

साधू हम दुख से दुखी नहिं होवैं । और सुख संपत नहिं जो-वैं ॥ टेर ॥ मोहबी कुटम धाम धन बिछरे भूखाही भोमी सोवैं । चाहे पीड़ पिण्ड आय व्यापे आंख भरी नहिं रोवैं ॥ १ ॥ साधू० ॥ १ ॥ चाहे गिगन गिरै धरणी पैं परवत उड़ते टोवैं । चाहे सात समुन्दर उलटे खण्ड पृथवी का खोवैं ॥ २ ॥ साधू हम० ॥ २ ॥ ब्रह्मा विसनू कोप कर रुद्दर धनुष बाण ले पोवैं । इन्दर चन्द्र सुरज धर्मराजा ब हवा अग्नी ढोवैं ॥ ३ ॥ साधू हम० ॥ ३ ॥ और विघन करते मा परला हम खण्डन नहिं होवैं । गिरधरगणेश भणै ब्रह्मज्ञानी सुख दुख कूं नहिं जोवैं ॥ ४ ॥ साधू० ॥ ४ ॥

पैरी १७ नग ८३ राग देस ताल होरी ॥

३ हरीजस सुखखंडन ॥

साधू हम सुख नें तो सुख नहिं जांणैं । और दुख अंतस नहिं आंणैं ॥ टेर ॥ बो परवार भवन घर लछमी हस्ती बंधते ठांणैं । करता राज पृथवी ऊपर पहरण मोती दांणैं ॥ १ ॥ साधू हम० ॥ १ ॥ मिल गइ सुरग इन्द्र की गादी रतन जरत के व्याणैं । सब मिल देवत देत हाजरी रती तो हरख नहिं आंणैं ॥२॥ साधू हम०॥२॥ ब्रह्मा विष्णू शेष महेशा बंध्या हमारै ताणैं । भैरव शक्ती आदि अनादी जिन सें लेवत डाणैं ॥ ३ ॥ साधू हम० ॥ ३ ॥ है वडभाग हमारा ऐसा हम माया नहिं माणैं । गिरधरगणेश भणै ब्रह्मज्ञानी भूवै कूं नहिं छांणैं ॥ ४ ॥ साधू हम० ॥ ४ ॥

पैरी १७ नग ८४ राग देस ताल होरी ॥
४ हरीजस सुख दुख खंडन ॥

साधू भाई सुख दुख दोनूं झूंटा । ये तो होय मिटै सुपन घूटा ॥ टेर ॥ पन्थी बहै रे पन्थ के मांई दीसै चोर है टूंटा । पन्थीं सोच कियो सब रजनी भोर भई तब खूंटा ॥ १ ॥ साधू भाई० ॥ १ ॥ भोमी खार समुंदर दीसै प्राणी पिरते घूटा। निकट गया विरला बडभागी जिन का सांसा टूटा ॥ २ ॥ साधू भाई० ॥ २ ॥ कर लिवी निगैनैण दे भीतर यां तो ओस नहिं भूटा । मारी हाक समुंदर नांहीं जिन का पैंडा खूटा ॥ ३ ॥ साधू भाई० ॥ ३ ॥ पूगा परम धाम सुण ध्यानी पिया है ज्ञान का घूंटा । गिरधरगणेश भयो ब्रह्मज्ञानी वां सुख दुख का नहिं बूंटा ॥ ४ ॥ साधू भाई० ॥ ४ ॥

पैरी १७ नग ८५ राग देस ताल होरी ॥
५ हरीजस अलख निरंजन स्वामी मंडन ॥

साधू है अलख निरंजन स्वामी । रवै घट मठ अंतरजामी ॥टेर॥ अलख अगोचर गम नहिं काऊ गाम नहीं छे गामी । नहिं कोई गवर श्याम पुनि पीला नाम नहीं छे नामी ॥ १ ॥ साधू है० ॥ १ ॥ खिण मांयें खलक उपाय खपावे काम नहीं छे कामी । उपजो नांय खपे पुनि कैसे राम नहीं छे रामी ॥ २ ॥ साधू है० ॥ २ ॥ है निरालंब दंभ नहिं जामें दाम नहीं छे दामी । सोहं सरब सकल घट व्यापक खाम नहीं छे खामी ॥ ३ ॥ साधू है० ॥ ३ ॥ ऐसा सन्त सकल घट व्यापक धाम नहीं छे धामी । गिरधरगणेश भयो ब्रह्मज्ञानी चाम नहीं छे चामी ॥ ४ ॥ साधू है० ॥ ४ ॥

२ भजन पचीसी ॥

इस पचीसी के पचीसूं हरीजस पांचों रागणी अर्थात् राग देस सोरठ कालिंगरा झंझोटी और आसावरी में गाये जाते हैं ॥

श्री सम्वाद पैरी १८ नग ८६ राग आसावरी सिंदूरिया ताल होरी ॥

१ हरीजस जवाब सून्दरी का ॥

हूं अबला अगताई । रे जोगिया मैं दरसण करबा आई ॥ टेर ॥ सरवर तरवर तीरथ साधू घन बादल बरसाई । दुख कूं हरैं करैं सुख संपत चाहूं वेद दरसाई ॥ १ ॥ रे जोगिया० ॥ १ ॥ लालच लग्यो भग्यो दिल मेरो सुरत श्याम की चाई । तज दियो साथ गात गह्यो की सुध बुध भूली मैं आई ॥ २ ॥ रे जोगिया० ॥ २ ॥ दरशण कर परसण चित मेरो सन्त सदा सुखदाई । अमृत बैण सैण मुख धारा ग्यान नीर दो पाई ॥ ३ ॥ रे जोगिया० ॥ ३ ॥ बोलो नी स्वामी अंतरजामी अबला ने अरथ बताई । गिरधरगणेश भणै यूं सुन्दर भिन भिन देवो नी जताई ॥ ४ ॥ रे जोगिया० ॥ ४ ॥

पैरी १८ नग ८७ राग आसावरी ताल होरी ॥

२ हरीजस जवाब जोगी को ॥

हे सुन्दर तूं छल बल की धाई । क्या हम कूं तूं छलने आई छै ॥ टेर ॥ तिरिया चिरत किरत वो करती मेरे मन नहिं भाई ॥

मैं अब धूत कूंत कर लीनों तूं मूंडो ले जा बाई ॥ १ ॥ हे सुन्दर० ॥ १ ॥ दीसत सती पती बरता सी बायर खोर खुराई। भीतर बात घात दिल मांही बुगले ने मछली खाई ॥ २ ॥ हे सुन्दर० ॥ २ ॥ दीसत नैण बैण कर कबजी करती विषय कमाई। सुन्दर चुन्दर ओड सूमरणी हाथ फेरती आई ॥ ३ ॥ हे सुन्दर० ॥ ३ ॥ अवला ओरत खोटे मोरत सावत क्यूंकर जाई। ठग कूं ठगी लगै ना दीसन लोक वेद यूं गाई ॥ ४॥ हे सुन्दर० ॥४॥ जोगी जुगत मुगत होय बैठा सेटा सुमेरू द्राई। गिरधरगणेश भणै सुण सुंदर कर छल बल तूं माई ॥ ५ ॥ हे सुंदर० ॥ ५ ॥

पैरी १८नग ८८ राग आसावरी ताल होरी ॥

३ हरीजस जुवाब सुन्दर को ॥

हे जोगिया मैं देखत दिल कूं मोऊं। मेरा नैण बाण दे पोऊं रे ॥ टेर ॥ सिंगी रिख भिंगी रिख नारद बड़ा ठिकाणा जोऊं। अमृत असुर देवसुर दोनूं शिव ब्रह्मादिक बोऊं ॥ १ ॥ रे जोगिया० ॥ १ ॥ इंदर चंद्र सुरज सिध मूनी सब की हुरमत खोऊं। सूरबीर मीर मद जोगी जुगत कलेजे पोऊं ॥ २ ॥ रे जोगिया० ॥ २ ॥ पंडित चतुर पुतर राजा के दे टोला धन खोऊं। करती सहल महल ब्रहमंड में सब जीवन कूं सोऊं ॥ ३ ॥ रे जोगिया० ॥ ३ ॥ भूषण बसतर असतर ससतर उन के शिर पर ढोऊं ॥ जंतर मंतर तन्तर तन में फैंक सजन कूं धोऊं ॥ ४ ॥ रे जोगिया० ॥ ४ ॥ रम अबधूता सुघड़ निपूता तेरे संग में सोऊं। नहिं तर पेच पटक शिर तेरे डेरे हम तुम दोऊं ॥ ५ ॥ रे जोगिया० ॥ ५ ॥ प्यारी पेच खैंच कर मारे जोगी जपत है ओऊं। गिरधरगणेश भणै सुण सुंदर मैं सत चित आनंद सोऊं ॥ ६ ॥ रे जोगिया० ॥ ६ ॥

पैरी १८ नग ८९ राग आसावरी ताल होरी ॥

४ हरीजस जवाब जोगी को ॥

हे सुंदर पच पच कैं मरजावे । जोगिया का भेद नहिं पावे ॥ टेर ॥ हाव भाव कटाक्ष केस क्यूं नागन से लटकावे । रूप चूंप है चोली चुस्त शिर चुंदर पट भटकावे ॥ १ ॥ हे सुंदर० ॥ १ ॥ भूषण बसतर ससतर सुंदर नैण बाण करवावे । नाचे ठमक धमक पायल की मूरख कलेजे में खावे ॥ २ ॥ हे सुंदर० ॥ २ ॥ मिन की माखण तकती डाकण दूध चाटती मावे । यां नहिं पोल डोलतो भूंटो लगत नहीं तेरा दावे ॥ ३ ॥ हे सुंदर० ॥ ३ ॥ तुझे देख भरमत कोई मूरख सूरख सुंदर चावे । हम निर अवयव देव दे मांही हम पैं किस बिध धावे ॥ ४ ॥ हे सुंदर० ॥ ४ ॥ उद्र मांयें थारे रुद्र भर्यो है भ्रष्ट बदन बतलावे । छाती मांस बांस हाथन में हाड़ मांस सत लावे ॥५॥ हे सुंदर० ॥ ५ ॥ सुंदर स्वान कागला खावे उन पै क्यूं नहिं जावे । तेरा तो मांस पशू कूं मीठा हम कूं तो सुग्या आवे ॥ ६ ॥ हे सुंदर०॥६॥ पटक्यो सीस बीस बिसवां पै सुंदर बो गगतावे । गिरधरगणेश बचे नर बिरला आ डाकण फिर २ खावे ॥ ७ ॥ हे सुंदर० ॥ ७ ॥

पैरी १८ नग ९० राग आसावरी ताल होरी ॥

५ हरीजस जवाब दोनूं का ॥

हे सुंदर देख कहुं हरि भगती । रे जोगिया मैं बिना रे लाय सें लगती ॥ टेर ॥ हिरदे हरी धरी ना विसरूं सोहं सिरी तो म्हारी सगती । सत चित आनंद अखंड आतमा मेरा रूप सुण मगती ॥ १ ॥

हे सुंदर ॥१॥ करी है माफ आप तकसीरा ज्वाला जूनो में जगती। अंग मांयें अगनी जल रहि भगनी हूं अबला बो अगती। २॥ रे जोगिया० ॥ २ ॥ कां तेरी असतर ससतर विद्या जंतर मंतर छकती। कां तेरा नैण बैण मुख हुसन भूल गई कहीं गगती ॥ ३ ॥ हे सुंदर० ॥ ३ ॥ सात दीप नवखंड ब्रह्मंड में है जीतण की सकती। तुम तो स्वामी अंतरजामी मैं निराकार सूं थकती ॥ ४ ॥ रे जोगिया० ॥ ४ ॥ सोहं में दोहं नहिं पावे वेद सुरतियां बकती। चंद्र सूर नूर सब सोहं अलख अलग हैं तकती ॥५॥ हे सुंदर० ॥ ५ ॥ हूं खोटी तुम समझो मोटी चरण कमल शिर नगती। चाहे मार तार सरणागत परी सन्त के पगती ॥६॥ रे जोगिया० ॥ ६ ॥ सुंदर समज रमज तज पाणो हरी भगत नहिं ठगती। धन मद माता भोजन ताता उण जीवन जाय खगती ॥ ७ ॥ हे सुंदर० ॥ ७ ॥ जोर्‌या हाथ नाथ सुण मोरी भक्त छोड़ जाय लगती। गिरधर-गणेश भणै जा सुंदर कीजे सन्त की भगती ॥ ८ ॥

ज्ञान गरीबी पैरी १९ नग ९१ राग देस ताल होरी ॥

१ हरीजस ज्ञान गरीबी को ॥

जोगिया मैं ज्ञान गरीबी धारी। करड़ाई लगती खारी रे ॥टेर॥ धरणी-धूर नूर शिर ऊपर चढ़ बैठी लाचारी। पारस पत्थर चतुर नर करड़े तो सब नर ठोकर मारी ॥ १ ॥ रे जोगिया० ॥ १ ॥ कीमत ऊंचो है संगत नीची परखत नहिं व्योपारी। पारस जूत कूंत पुत्तर की कनक करत सब यारी ॥ २ ॥ रे जोगिया० ॥ २ ॥ ओगण एक देख गुण गहरा सब कूं लगते खारी। मोती चूर नूर तज मैला बूर खात संसारी ॥ ३ ॥ रे जोगिया० ॥ ३ ॥ करड़ाई

खोटी सुण मोटी ज्ञानगरीबी म्हारी । गिरधरगणेश भयो भवसागर सब कूं खाय लाचारी ॥ ४ ॥ रे जोगिया० ॥ ४ ॥

पैरी १९ नग ९२ राग देस ताल होरी ॥

२ हरीजस बोलणेरी जुगती को मंडण ॥

समझ नर बोल हरिरस बाणी । दिल लाभ पिछाणो हाणी ॥ टेर ॥ बन मांयें मोरशोर कोयल को स्वाद लगत सुद पाणी । कारज का-गा बोलण लागा खैंच कबाणी ताणी ॥ १ ॥ समझ० ॥ १ ॥ कोयल कांइ दीनीं हर लीनीं काग करी नहिं हाणी । कागा कोयल एक देख रंग बोली सूं दुतिया जांणी ॥ २ ॥ समझ० ॥ २ ॥ करवा बोल खोल मत मुख सूं बंद करलीजे बांणी । अमृत बैण सैण कह सब कूं करले या कनक रसाणी ॥ ३ ॥ समझ० ॥ ३ ॥ सुध भाका धन्य जीतव वाका नीर खीर पिया छांणी । गिरधरगणेश भयो भवसागर उलटी मैं राह पिछांणी ॥ ४ ॥ समझ नर० ॥ ४ ॥

पैरी १९ नग ९३ राग देस ताल होरी ॥

३ हरीजस जिद खंडन को ॥

छोड जिद होय निचोता मूनो । क्यूं करता है जिक्कर सूनो ॥ टेर ॥ कहता साचो ने सुणता पाछो दोनां की बात अबूनो । खैंचा तांण हांण आपस में लाय लगी छै ऊनो ॥ १ ॥ छोड जिद० ॥ १ ॥ झूंटा भोर ओर सूं करता दोनां की बात मकूनो । मूरख लरैं मरैं आ-पस में खोय समझ भये खूनो ॥ २ ॥ छोड जिद० ॥ २ ॥ तीजा कहै

गम खावो रे जावो अपणे गैले धूनी । धीरज धरता वे लाजां मरता आखर बात कछूनी ॥ ३ ॥ छोड जिद० ॥ ३॥ मूरख मकोरा मरता घोरा छोडत नहिं मुख खूनी । गिरधरगणेश भणै भवसागर छोड जिद्द भये मूनी ॥ ४ ॥ छोड जिद० ॥ ४ ॥

पैरी १९ नग ९४ राग देस ताल होरी ॥

४ हरीजस रीस खंडन को ॥

रीस कूं मार मगन होय भाई । या हरकत करती है वाई ॥टेर॥ आई रीस चीस दिल मांही चली वदन में छाई । नर चंदा अंदा होय लड़ता डूब मरे जल खाई ॥ १ ॥ रीस कूं० ॥ १ ॥ रावण रीस पीस दांतां कूं कंस कुमोती आई । सिसुपालो भालो ले भलकत भारत खप गये भाई ॥ २ ॥ रीस कूं ॥ २ ॥ रीस सीस लेवत है सब का सन्त पकरकै ताई । धीरज धारा ज्ञान फुंवारा छांट कै भस्म रमाई ॥ ३ ॥ रीस कूं ॥ ३ ॥ वे सूरा पूरा है पंडित वेद सुरतियां गाई । गिरधरगणेश भणै भवसागर रीस तजी सुण भाई ॥ ४ ॥ रीसकूं० ॥ ४ ॥

पैरी १९ नग ९५ राग देस ताल होरी ॥

५ हरीजस राग द्वेष खंडन को ॥

समझ नर राग द्वेष कूं तजिये । हरि नाम अमोलक भजिये ॥ टेर ॥ औरां को साय कियां होय अपणी सुरत निर्मली रजिये ॥ तूं दुसमण मत देख और कूं सब मित्तर दिल मंजिये ॥ १ ॥ समझ नर० ॥ १ ॥ अपणा ओगण डार और में दोष काढ करे कजिये । पत्थर फैंक हाथ गिर अपणे लगी चोट दिल दजिये॥ २ ॥ समझ

नर० ॥ २ ॥ राग द्वेष राखे नर घट में जिण शिर जूता बजिये । राजा रंक देव चाहे दानव बिना पेच सूं पजिये ॥ ३ ॥ समझ नर० ॥ ३ ॥ परतख परचा देख हरी का सिंह कूं जीते अजिये । गिरधरगणेश भयो भवसागर राड़ करत आवे लजिये ॥ ४ ॥ समझ नर० ॥ ४ ॥

मनखंडन पैरी २० नग ९६ राग आसावरी जोगिया ॥

ताल होरी ॥

१ हरीजस मनखंडन को ॥

मन रे जांणी सबी चतुराई । थारी करमन किरिया पाई ॥ टेर ॥ चोर को चोर जोधे को जोधो चूहा तकत बिलाई । ऐसे तूं मन घर घर डोले नेक लाज नहिं आई ॥ १ ॥ मन रे० ॥ १ ॥ छिन मांये राव रंक बण बैठो छिन मांये चंवर ढुलाई । छिन मांये दानत दुरबल कर कें छिन मांयें भीख उगाई ॥ २ ॥ मन रे० ॥ २ ॥ तीन लोक ततपद के मांहीं तूं सब के बीच गुसांई । तैंने तो अन्त लिया है सब का मैं छिन में समझ लेऊं भाई ॥ ३ ॥ मन रे० ॥ ३ ॥ गिरधरगणेश पकर लिया मन कूं दिया प्याला प्रेम पिलाई । बांध लिया जंजीर ज्ञान सें कोस लियो ठकुराई ॥ ४ ॥ मन रे० ॥ ४ ॥

पैरी २० नग ९७ राग आसावरी ताल होरी ॥

२ हरीजस पिंड खंडन को ॥

साधू भाई शरीर सूं नांहीं काम । मन मिल गया आतम राम ॥ टेर ॥ ओहं सोहं आप भया है जपणा किस का नाम । किरिया

करतब नहिं कछु बाकी सोई तो हमारो धाम ॥ २ ॥ साधू भाई० ॥ १ ॥ हाड मांस मलोच मिलायो गीर दृग किया श्याम । दसूं द्वार दालिद्दर भरता शीत परो चाहे घाम ॥ २ ॥ साधू भाई० ॥ २ ॥ नहीं कछु खाना नहीं कछु पीना नहीं कछु करणा है दाम । उतरा भांडा भांड कूं दीजे मैं तो खोल देखलो खाम ॥ ३ ॥ साधू भाई० ॥ ३ ॥ नहीं कोइ जीना मरणा भासै नहिं कछु काया ठाम । गिरधरगणेश ज्ञान ले गाया सोहं आतम राम ॥ ४ ॥ साधू भाई० ॥ ४ ॥

पैरी २० नग ९८ राग आसावरी ताल होरी ॥

३ हरीजस ब्रह्मंड खंडन को ॥

साधू भाई किन की करिये आस । ये तो सब मुरदां का बास ॥ टेर ॥ चंदा ने सूर देव सब दानव काल बली का दास । राजा रंक काल रण भोमी कोई घरी पलक कोई मास ॥ १ ॥ साधू भाई० ॥ १ ॥ ब्रह्म विष्णू महेश सारदा वो नहिं धरती ज्यास । दिष्टा दरसण दिरस ये भूंटा सब को निकसैला सास ॥२॥ साधू भाई० ॥ २ ॥ सात दीप नव खण्ड ब्रह्मण्ड में परी छै काल की पास । नाम गाम काऊ ना रहसी सब को होसी नास ॥३ ॥ साधू भाई० ॥ ३ ॥ ना काऊ खण्ड ब्रह्मण्ड भया है भूंटाई भरम बिलास । गिरधरगणेश है अलख निरंजन नहीं दूसरा पास ॥ ४ ॥ साधू भाई० ॥ ४ ॥

पैरी २० नग ९९ राग आसावरी ताल होरी ॥

४ हरीजस विद्या पक्ष खंडन ॥

अज्ञानी सुन मुगत करमांनी। आतम पद की तो सेरी है छांनी

॥ टेर ॥ वेद में भेद भंवर भवसागर केइ भगवाई धरत निसानी। केइ सैंस किरत भाषा मन मानी पाई नहीं वे श्यानी ॥ १ ॥ अज्ञानी० ॥ १ ॥ केई उलट सास ब्रह्मण्ड चडावे जोवै ज्योती क्वांनी। सठ खोई खट चक्कर जांनो वे करी है काया की हांनी ॥ २ ॥ अज्ञानी० ॥ २ ॥ केई उनमुन ध्यान धरत हैं ध्यानी पड गया वेद की बानी। सायब सेरी तो रह गई छांनी पच पच मरो रे अज्ञानी ॥ ३ ॥ अज्ञानी० ॥ ३ ॥ पच्चापच्च पकर कर बैठे कैसे छूटे नर प्रानी। ज्यूं दरपण पैं चढ रहि बानी कैसे दीसत मुख श्यानी ॥ ४ ॥ अज्ञानी ॥ ४ ॥ वां थक जावे ध्यान सबद की धुनी अनहद भी थक जानी। थक जावे कहणी और सुणणी वां आप हि आप लखानी ॥ ५ ॥ अज्ञानी० ॥ ५ ॥ वो हैं निरबन्द बन्द नहिं वाके नहिं पवना नहिं पानी। गिरधरगणेश सायब की श्यानी तो गुरु बताई सो जानी ॥ ६ ॥ अज्ञानी० ॥ ६ ॥

पैरी २० नग १०० राग आसावरी ताल होरी ॥

५ हरीजस सच्चिदानन्द मंडन को ॥

साधू सकल सृष्टि परकासै। जाके प्राण नहीं छै सासै ॥ टेर ॥ धर अम्बर पवना नहिं पाणी भूख नहीं छै प्यासै। निगम निरंतर साधू खेले कर रयो ब्रह्म बिलासै ॥ १ ॥ साधू सकल० ॥ १ ॥ ब्रह्मा विष्णू महेश सारदा रो छिवरो करत हुलासै। निरगुण नूर मूल है सब को पाई नहीं कोई आसै ॥ २ ॥ साधू सकल० ॥ २ ॥ करता करै ना धरता धरै ना निरगुण गुण लियां पासै। सो साधू सत जाण गुसाईं जाकै चवदे लोक भया दासै ॥ ३ ॥ साधू सकल० ॥ ३ ॥ ज्ञान तें

गूंगा श्यान तें सूंगा नहीं पदारथ भासै। गिरधरगणेश साधू सम जाणी जाके भरम नहीं छै मासै ॥ ४ ॥ साधू सकल० ॥ ४ ॥

ज्ञान चेतावणी पैरी२१ नग १०१ राग आसावरी जोगिया ॥

ताल होरी ॥

१ हरीजस सन्त अमीरी को ॥

फकीरी मांयें अमीरी राखै। वे तो जस सांईंदा भाखै ॥ टेर ॥ फाका फिकर दा कर लिया अवधू झूट हरफ नहिं हांकै। बत्तीस भोजन त्याग तखत कूं सूखा टुकड़ा चाखै ॥ १ ॥ फकीरी० ॥ १ ॥ शिर पैं टोप विवेक झिलकता ज्ञान गुदरिया जाकै। करणी की कोपिन्द कसी है करम कमंडल वाकै ॥ २ ॥ फकीरी० ॥ २ ॥ कंचन महल कनक सी काया जाली झरोकां में झांकै। सुखमण सेज सुंदरी रमती देवत चौकी नाकै ॥ ३ ॥ फकीरी० ॥ ३ ॥ या करता अमीरी कोई सन्त समझ कै समत नहीं है साकै। गिरधरगणेश अमीरी उपजी तब कोन फकीरी राखै ॥ ४ ॥ फकीरी० ॥ ४ ॥

पैरी २१ नग १०२ राग आसावरी ताल होरी ॥

२ हरीजस कंगाली खंडन ।

सबी पैं धन तांहो। निरधन होवै राजा रंक पेट शिर धोंसै ॥ टेर ॥ मरणो मर्द भूलिया सब ही मगर पचीसी तोसै। सत संतोष अडाणा धरिया मैं ममता शिर धोंसै ॥ १ ॥ सबी पैं० ॥ १ ॥ तृष्णा अन्त लिया घट घट का जाचत बिस्वा बीसै। अपणे पद कूं

वेच दिया है मोहमद पी गया सोसै ॥ २ ॥ सखी पै० ॥ २ ॥ हरक्यो यार फिरै जग मांही स्वान बावरो दोसै । ग्रह की गांठ भई गरदन पैं डर में चल रहि चोसै ॥ ३ ॥ सखी पैं० ॥ ३ ॥ जग के जीव भ्रमै भवसागर शिर धूनत करघोसै । गिरधरगणेश मस्त कोइ उड़िया जिन घर लछमी पोसै ॥ ४ ॥ सखी पैं० ॥ ४ ॥

पैरी २१ नग १०३ राग आसावरी ताल होरी ॥

३ हरिजस ज्ञान धन मंडन ॥

गृस्ती ज्ञान बिना दुख पावे । सो नर जनम मरण में आवे ॥ टेर ॥ बैल भयो विणजारै रो प्राणिया मुलक मुलक लद जावे । गृह की गूण धरी धर ऊपर अरध उरध में धावे ॥ १ ॥ गृस्ती० ॥ १ ॥ बूढो बैल भरमतो डोलै घर घेर चक्कर खावे । हाण लाभ को हार पहरियो मरतक मंगल गावे ॥ २ ॥ गृस्ती० ॥ २ ॥ मीडक मनुष भुजंग जिह्वा पैं बैठो ही सुख ने चावे । छण भंग देह दीसती प्राणी रे मरतक मन नहिं भावे ॥ ३ ॥ गृस्ती० ॥ ३ ॥ गृस्ती रो ग्रास हुयो करणी बिन लग्यो नहिं कछु दावे । गिरधरगणेश भणै बो गृस्ती डूबो छै पत्थर की नावे ॥ ४ ॥ गृस्ती० ॥ ४ ॥

पैरी २१ नग १०४ राग आसावरी ताल होरी ॥

४ हरीजस विना ज्ञान का भगवा खंडन ॥

भगवा भूंडा लगै मेरा भाई । गुरु सें गुरुगम नहिं पाई ॥ टेर ॥ त्याग कियो धन धाम कबीलो हस्ती हुकम ठकुराई । शिर

को पेच पगरखी तज दी तांई गुरुगम निजर न आई ।। १ ।। भगवा० ।। १ ।। तब साज्यो जोग जुगत बो कीनी स्वासा ने सीस चडाई । इङ्गला पिङ्गला सुखमणा सोधी रे गुरुगम गेला तो नाई ।। २ ।। भगवा० ।। २।। जब पढ गयो पुराण पुस्तकां बांची काया कनक ज्यूं ताई । लीन्हा भेख भजन बो कीना तांई गुरुगम गुपत बताई ।। ३ ।। भगवा० ।। ३ ।। अब और उपाव अफाण्ड कर थकियो जद गुरुगम कूं पाई । गिरधरगणेश पाई सो तो पीचे और डूबे सब खाई ।। ४ ।। भगवा० ।। ४ ।।

पैरी २१ नग १०५ राग आसावरी ताल होरी ॥
५ हरीजस गुरूगम मंडन ॥

जोगिया घर खोय ने घर हेरो । है वो जोगी गुरू मेरो ॥ टेर ॥ वो घर गुपत प्रगट हूं कहतो मन में दे लीजे फेरो । वो फेरो देते कूं देखो सोइ तो ज्ञान घर तेरो ॥ १ ॥ जोगिया घर ॥ १ ॥ वोही जोग जुगत पुनि वोही वोही देव भयो चेरो । वोही जीव सीव पुनि वोही माया ने ब्रह्म बिखेरो ॥ २ ॥ जोगिया० ॥ २ ॥ वोही राव रंक पुनि वोही साह सिपाही ने पहरो । वोही काग कुंजर पुनि वोही सब आपहि आप को डेरो ॥ ३ ॥ जोगिया० ॥ ३ ॥ वोही वेद सिधान्त भयो सब उण बिन नहिं कछु न्यारो । गिरधरगणेश भयो भवसागर दुतिया भरम कूं गेरो ॥ ४ ॥ जोगिया० ॥ ४ ॥

गुरू चेला सम्बाद पैरी २२ नग १०६ राग झंझोटी ताल खैरवो ॥
१ हरीजस शिष्य प्रश्न को ॥

हूं शरणागत आयो श्याम । अब करदीजे मेरो जलदी काम

॥ टेर ॥ ओ जुग भासै, कंई गुरु आसै धर लेउं जासै, बतलाय दीजे नाम ॥ हूं शरणा० ॥ १ ॥ इण जुग जाया, हूं कां सूं आया, पाया ना भेद, बतलाय दीजे धाम ॥ २ ॥ हूं शरणा० ॥ २ ॥ काया जो धरता, कुण यां मरता, करता कोण बसरया किण गाम ॥ ३ ॥ हूं शरणा० ॥ ३ ॥ गिरधरगणेश भणै गुरु मुझ कूं खोल बताय दीजे, अंतरखाम ॥ ४ ॥ हूं शरणा० ॥ ४ ॥

पैरी २२ नग १०७ राग झंझोटी ताल खेरवो ॥

२हरीजस गुरू उपदेश को ॥

सुण शिष केहुं गीता को सार । भवसागर से होय जा पार ॥ टेर ॥ सत वो स्वामी, अंतरजामी, जग बे कामी, तूं छोड़ असार ॥ १ ॥ भवसागर० ॥ १ ॥ काया जो मरती, ने इच्छा बरती, फुरणा करती जग संसार ॥ २ ॥ भवसागर० ॥ २ ॥ तू निज सोहं नहिं कोइ दोहं, भीतर जोहं, करो रे बिचार ॥ ३॥ भवसागर ॥३॥ गिरधरगणेश, भणे ब्रह्म वस्तू, और ना दुरस्तू, धरम अचार ॥४॥ भवसागर० ॥ ४ ॥

पैरी २२ नग १०८ राग झंझोटी ताल खेरवो ॥

३ हरीजस शिष्य का प्रश्न ॥

हूं तो दुरबल दुखियो जगजीव । किस बिध पाऊं सोहं पद पीव ॥ टेर ॥ छिन २ दुखिया, मैं होय रया सुखिया जग मांयें झुकिया, रहता जीव ॥ १ ॥ किस बिध० ॥ १ ॥ जग की आसा ने पर रया पासा, होय रया नासा, मैं तो ऊंडो धरूं नीव ॥ २ ॥ किस बिध० ॥ २ ॥ काया का घोबी मैं, माया का लोभी, मोय लिया मोभी, उर

जम रया फीव ॥ ३ ॥ किस बिध० ॥ ३ ॥ गिरधरगणेश भणै भ्रम-भारी गुरु जीव का, क्यूं कर होऊं सीव ॥ ४ ॥ किस बिध० ॥ ४ ॥

पैरी २२ नग १०९ राग झंझोटी ताल खैरवो ॥

४ हरीजस गुरूपदेश ॥

सुण शिष केहुं सब सन्तन साख । वेद बचन ब्रह्मा का वाक ॥ टेर ॥ काया ने उलट, पुलट उण घर में, सुख सागर की तूं सोकां चाख ॥ १ ॥ वेद वचन० ॥ १ ॥ सूक्ष्म थूल, फूल ज्यूं मसलो कारण कोटड़ी सूं तुरिया झांक ॥ २ ॥ वेद वचन ॥ २ ॥ तुरिया तखत जगत नहिं भासै, तूं सात भोम, कारो पैंडो डाक ॥ ३ ॥ वेद वचन० ॥ ३ ॥ गिरधरगणेश भणै शिष समझ्यो, गुरु के चरण शिर धर दियो नाक ॥ ४ ॥ वेद वचन० ॥ ४ ॥

पैरी २२ नग ११० राग झंझोटी ताल खैरवो ॥

५ हरीजस शिष्य का अनुभव को ॥

सुणो गुरु अजनेस्वर आप । भवसागर की मेटी ताप ॥ टेर ॥ शिष सुण आया ने, दरसण पाया, गुरु ने बताया, अजपा जाप ॥ १ ॥ भवसागर० ॥ १ ॥ दीना जोग, रोग हर लीना, हर हिरदा कर, दीना साफ ॥ २ ॥ भवसागर० ॥ २ ॥ सूक्ष्म थूल मूल कारण, मनु तुरि-या को बतलाय दियो नाप ॥ ३ ॥ भवसागर० ॥ ३ ॥ गिरधरगणेश भणै गुरु मुझ कूं, कर दीना सोहं निज आप ॥ ४ ॥ भव-सागर० ॥ ४ ॥

तिरंगीपैरी २३ नग १११

१ हरीजस जंवरी रो राग आसावरी जोगिया तमाशे की ढार ताल खैरवो ॥

हरि नांव का हीरा । जंवरी परख्या छै काया हाट में ॥ टेर ॥ हीरा नांव हरी का कहिये जीवन का व्योपार । अलख अखारा जग हटवारा समझै तो लाभ अपार ॥ १ ॥ जो हरि नांव० ॥ १ ॥ ज्ञान की गादी तन का तकिया करणी कलम ले हात । दसूं दिसा में हूंडी लिखता सत संगत सुभ बात ॥ २ ॥ जो हरि नांव ॥ २ ॥ सुरत निरत दलाल दोय है सत सोदा गुलजार । बैराग त्याग संतोष शील ये कंकर ब्रह्म बजार ॥ ३ ॥ जो हरि नांव० ॥ ३ ॥ सतगुरु जी सोदा कर दीना सत ले तज्यो असार । गिरधरगयोश भयो भव-सागर सहजहि हो गया पार ॥ ४ ॥ जो हरि० ॥ ४ ॥

पैरी २३ नग ११२

२हरीजस राग जोगिया आसावरी तमाशे की ढार ताल खैरवो ॥

मिले मानसरोवर । हंसा बस रया रे सोहं सैर में ॥ टेर ॥ सोहं शहर बसत है दूरा सूरा पूगे सन्त । परबत भारी बे नदियां भारी कोइ बिरलाइज पावे पन्थ ॥ १ ॥ जो मिले० ॥ १ ॥ सागर कूद सहर में जावे आवे नहिं फेर कन्त । वांकी रीत प्रीत सुण पंछी हो गया एकी दन्त ॥ २ ॥ जो मिले० ॥ २ ॥ राह बारीक पडै सोइ थाका जाका नहिं है अन्त । गुरुगम डेरो चढ़ गया पैरी जिस ने पाया

तन्त ॥ ३ ॥ जो मिले० ॥ ३ ॥ शिर दे धाया अनुभव गाया उण सागर का सन्त । गिरधरगणेश भणै उस भेमो वेद नहिं सिद्धन्त ॥ ४ ॥ जो मिले० ॥ ४ ॥

पैरी २३ नग ११३

३ हरीजस सन्त फाग राग काफी ताल होरी ॥

तन काया में रास रच्यो री । ख्याल उर मांयें मच्यो री ॥ टेर ॥ मन मोहन गुण ग्वाल गोप सब, नख चख साज सज्योरी । सुरता प्यारी के धोरज साड़ो ताल मृदङ्ग बज्यो री । मुरलिया पै नाच नच्यो री ॥१॥ तन काया में ॥१॥ अधुर अधुर और मधुर मधुर सुण मन सुख बीण बज्यो री । तत थइ तत थइ ठमक ठमक ठम, प्रेम को तार खंच्यो री । सुरत पैं निरत नच्यो री ॥ २ ॥ तन काया में० ॥ २ ॥ खेलत फाग सजन फुलवारी अंग रंग कीच किच्यो री । नव सो नारी, तो गावत गारी, वां प्रीतम प्रेम पच्यो री । वेद ब्रह्मा को बच्यो री ॥ ३ ॥ तन काया० ॥ ३ ॥ उद बुद ख्याल खेलतां देखो ऋषि मुनि झुंड मच्यो री । गिरधरगणेश भणै सरगुण में ने निरगुण ब्रह्म भज्यो री । और सब भरम नच्यो री ॥ ४ ॥ तन काया० ॥ ४ ॥

पैरी २३ नग ११४

४ हरीजस सन्त फाग राग काफी ताल होरी ॥

ऐसी खेले सन्त जन होरी । सुरत सज रहि है गोरी ॥ टेर ॥ ज्ञान गुलाल की बदली छाई ओड बसन्ती सारी । परम ज्योति झिलकत है न्यारी काच महल रंग त्यारी । पिया और प्यारी प्यारी

॥ १ ॥ ऐसी खेलै० ॥ १ ॥ गिगन मंडल में कीच मच्योरी करणा केसर घोरी । चरचा चन्दन अंतस रोरी अबीर उडाई दिल भोरी । सजन और गोरी गोरी ॥ २ ॥ ऐसी खेलै० ॥२॥ सुन मंडल मांयें बाजा बाजे नाभ कंवल मांयें डोरी । सन्त सुरत खेलत दोय होरी तां सुखमण पांवन ढोरी । गगन घन घोरी घोरी ॥ ३ ॥ ऐसी खेलै० ॥३॥ दया की दौलत धीरप दैरी सोई सन्त उपगारी । जाके लछमी चरणां में देत बुहारी कहै गिरधरगणेश विचारी । शरण गिरधारी में थारी ॥ ४ ॥ ऐसी खेलै० ॥ ४ ॥

पैरी २३ नग ११५

५ हरीजस रेखूता ताल होरी राग तिलंग ॥

अगम की गम्म कूं पाई । सुद्ध निज सरूप की आई रे ॥ टेर ॥ ज्ञान का इश्क है हमरा । मूरख क्यूं रीभ रयो चमरा । हाड और मांस की देहिया । करै मत तूं इण सैं नेहया ॥ १ ॥ रे अगम की १ ॥ हुये मत देह संग मैला । देह तो अशुद्ध है थैला । देह अभिमान नहीं करणा । निश्चय शुध सरूप को धरणा ॥ २ ॥ रे अगम० ॥ २ ॥ शुद्ध ये सरूप है तेरा । देह तेरे सङ्ग नहीं थेरा । देह जड़ कलेश की खानी । तेरा निज सरूप दिलजांनी ॥ ३ ॥ रे अगम० ॥ ३ ॥ सरवा तीत हैं सांई । गुणी गुणज्ञान सबी मांई । मूढां की दृष्ट दुंद छाई । जिनों के ये इश्क दूर भाई ॥ ४ ॥ रे अगम० ॥ ४ ॥ असत सत रहित कूं जांना । तूं, तत भेद नहीं नाना । चिदानन्द प्रकाश है सारा । द्वैत अद्वैत सूं न्यारा ॥ ५ ॥ रे अगम० ॥ ५ ॥ गुरु श्री राम इश्क बकसा । सुनत शिष भवसागर निकसा । ज्ञान देअज्ञ-नेश्वर माता । ये गिरधरगणेश जस गाता ॥ ६ ॥ रे अगम० ॥ ६ ॥

तिरंगी पैरी २४ नग ११६ राग तिलंग ताल होरी ॥

१ हरीजस राग रेखता ॥

देखिया ख्याल उर भारी । अधर ब्रह्मंड सृष्टसारी ॥ टेर ॥ सुरज दश क्रोर कोट कोड़ी । तपे दिन रैन चन्द्र जोडी । विष्णु लख संहस धरी खोरी । शेष महेश लैन डोरी ॥ १ ॥ देखिया० ॥ १ ॥ असंख्यां इंद्र मिंद्र त्यारी । गिणत ब्रह्माको नहीं आरी । खुले वां बाग फुलवारी । करैं वां काल किनकारी ॥ २ ॥ देखिया० ॥ २ ॥ असुर सुर क्रोरां व्योपारी । सुये सुख धाम गुनजारी । धरण असमान बीच त्यारी । कहोरे कवि किनकी वा टंगसारी ॥ ३ ॥ देखिया० ॥ ३ ॥ पिंड ब्रह्मायड गये मारी । यार नहिं रया पुरुष नारी । यह गिरधरगणेश कर जोरी । कोण वां रया सजन कहो री ॥ ४ ॥ देखिया० ॥ ४ ॥

पैरी २४ नग ११७ राग झंझोटी ताल कबाली ॥

२ हरीजस रंगत ठुमरी की ॥

जिन की सुरत लगी हर सैं । फिर काम कछू ना रया घर से रे ॥ टेर ॥ सुख में दुख है दुख में सुख है । मैं दोनां को पटक दिया कर सैं रे ॥ १ ॥ जिनकी० ॥ १ ॥ जिन्हा स्वाद स्वाद में जिन्हा मेरा दोनों में अन्तम नां तरसै रे ॥ २ ॥ जिनकी० ॥ २ ॥ जीणे में मरणा मरणे में जीणा । मैं दोनां कूं अंग पैं ना परसैं रे ॥ ३ ॥ जिन की० ॥ ३ ॥ ईश्वर जीव जीव में ईश्वर । मैं दोनां कूं छोड दिया करसैं रे ॥ ४ ॥ जिन की० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश भयो जिज्ञासू । आपहि आप हुया हरसैं रे ॥ ५ ॥ जिन की० ॥ ५ ॥

पैरी २४ नग ११८ शब्द तंदूरैरा ॥

३ हरीजस उलटा शब्द ॥

अमरापुर री या वारता कैवे सन्त सुजाना । उलटा मेहरम साधू जब लखे धर निरगुण बाना ॥ टेर ॥ आंधले कर आरसो मुख निरखत नैना । राग छतीसूंई वज रही सुण रयो बिन काना ॥ १ ॥ अमरापुर० ॥ १ ॥ पांगला परवत चढ़े गूंगा गाय रया ताना । नैन बैन बिन सुन्दरी मुख चमकत स्याना ॥ २ ॥ अमरा पुर० ॥ २ ॥ कुंजर कूं कुतिया गिले भंवरा ढक दिया भांना । सिंहा कूं बकरी भखे परवत छिप रया पांना ॥ ३ ॥ अमरापुर री० ॥ ३ ॥ जल मांयेंने अगनी जलै देखे मस्त दिवाना । पंडित पड मूरख रया टांटी घूमत ज्ञाना ॥ ४ ॥ अमरापुर री ॥ ४ ॥ देवत कूं देवल ढक्यो देवल देव मांयें जाना । गिरधरगणेश उलटी पडै सन्ता करियो पहचाना॥ ५ ॥ अमरापुर री० ॥ ५॥

पैरी २४ नग ११९ राग बिलावल ताल धेम्माल ॥

४ हरीजस शबद तंदूरैरो ॥

सुण साधू विवेक सूं दरसण उर पाया ॥ टेर ॥ चरम दृष्ट का ख्याल हाल सब सरगुण माया । आतम अगोचर दूर नूर सब में है छाया ॥ १ ॥ सुण साधू० ॥ १ ॥ काच महल की सहल सजन सुण सुदर काया । माहें परमानन्द चन्द मेरे मन भाया ॥ २ ॥ सुण साधू० ॥ २ ॥ तीन लोक का बास सास एक मांयें समाया । हूं घर बैठा ठेट भेट गुरु जोग कमाया ॥ ३ ॥ सुण साधू० ॥ ३ ॥ ओघट गैला घाट

बाट कोइ हरिजन आया । तब मिट गइ दुरमत दोय जोय गुरु घर कूं लाया ॥ ४ ॥ सुण साधू० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश कथ कया रया आतम उर धाया । साधू जोइयो मांयं तांयं सब भरम विलाया ॥ ५ ॥ सुण साधू० ॥ ५ ॥

पैरी २४ नग १२० राग बिलावल ताल धम्माल ॥

५ हरीजस शबद तंदूरैरो ॥

दरसण परसण भया रे नहीं रंग रूपन काया ॥ टेर ॥ गवर नहीं है श्याम श्वेत कछु । नजर न आया । अकार रहित निराकार सजन गुरु मांयं बताया ॥ १ ॥ दरसण० ॥ १ ॥ सूक्षम नहिं है थूल फूल ज्यूं सुगंध समाया । जल थल मांयें एकदेख हम दृश्य गमाया ॥२ ॥ दरसण० ॥ २॥ जागत सोवत नांय नहीं वो भूखा नां धाया । सनका कर रया अहार सार अपणे मुख खाया ॥ ३ ॥ दरसण० ॥ ३ ॥ ब्रह्मंड लाख किरोर कोट देह मांहें दिखाया । वो पद है निरबाण जाण कोइ बिरलाई पाया ॥ ४ ॥ दरसण० ॥ ४ ॥ गिरधरगणेश कथ कया देव होय शब्द सुणाया । इस मिसलत का वरण वेद सुरती यूं गाया ॥ ५ ॥ दरसण० ॥ ५ ॥

शिक्षासागर ॥

रेख्ता, कवित्त, कुंडलिया । चौपाई छंद ॥

पैरी १६ नग ८० ।

उपदेश रेख्ता पैरी १ नग १ ।

१ रेख्ता भरम खंडन ॥

उस ब्रह्म के लिये भटकते हो । उस ब्रह्म के नहिं कछु ज़ाबता है । नाचता पूछता देखता भारता धर अंबर क्यूं नापता है । यह तो ओस का पाणी भरम की बाजी भूट कूं सांच क्यूं थापता है । ले गोद में लरका ढंढोरा शहर में तेरा ही भरम तुझे दाबता है । भाई बात कछू नहिं समझ अरी यापै जोगी जंगम तापता है । गिरधरगणेश अनुभव बाणी कर वेद का भेद यूं छापता है ॥ १ ॥

२ रेख्ता इष्ट मंडन ॥

देख ले तूं ही आपे में उलट कें, कर ले देव दीदारा है । मका मदीना गंगा जमुना मंदिर महल मदारा है ॥ जां बजते बेनु मृदंग झांझ डफ मुरली मुकट अधारा है । चढ सुखमणा घाटी तोर की टाटी माटी मुवास निदारा है । होय सर्क रंगा निरमल चंगा भिंगा भंवर सुधारा है । गिरधरगणेश कर निरगुण भेस परस्या बद्री केंदारा है ॥ २ ॥

३ रेख्ता वाचक ज्ञानी का खंडन ॥

वाचक ज्ञानी ना सुधरी ध्यानी विषयन की ओर धावता है। सागर सत संगत करता पंछी कपट का रूप बणावता है। बुगले का सांग बणा होय मूनी मीन कूं मुख गटकावता है। कहता आप और चलता नांही या करणी क्यूं दिखलावता है। गिरधरगणेश भणै भाई सागर संगत नहिं न्हावता है। नर समझ रखै और झूंट भखै सो जम का जूता खावता है ॥ ३ ॥

४ रेख्ता वाचकज्ञानी का खंडन ॥

वे भूलगये अपने घर गुरु कूं दृष्ट नजर नहिं आवता है। ये सूंना सहर अंधा अगवानी लेकै गोता खावता है। कोइ कहता सहर समझता ऊजर आपस में पछतावताहै। घूघू कूं ज्ञान नहीं है दिन का वो सुरज सजन नहिं ध्यावता है। यां क्रोध कागले मांस मजे से चुन चुन कै तन पावता है। गिरधरगणेश भणै भाई क्यूं विरथा जनम गमावता है ॥ ४ ॥

५ रेख्ता कपट ध्यानी का खंडन ॥

राम राम दिन रैण पुकारो राम कांह पैं रैवता है। तुम तो उस पैं मूंड मुंडाई पिया वो पोछा कुछ कैवता है। या उन के कान नहीं सुनने कूं कै तूं बैरा नहिं भेवता है। यह तो भूल पड़ी दोनां विच दास झूंटा कै देवता है। भाई उन के घर में भूल नहीं तूं नांव कपट सेलेवता है। गिरधरगणेश भणै भाई वो तो करणी मुजब फल देवता है ॥ ५ ॥

पांचों विषय के दृष्टान्त का खण्डन पैरी २ नग १०

चाल कवित्त की ॥

१ कवित्त चन्द्रमणि स्पर्श का, दृष्टान्त हस्ती का, त्वचा इन्द्री का विषय खंडन ॥

केहुं कजली बन्न जामें मस्त हाती फिरत हैं। घूमतो गजराज, आवै और को न लाज, खावै फल फूल भाज, द्रोब हरी हरी चरत हैं॥ खेलै गंगाजी के घाट, सङ्ग हथनियां को ठाट, यार बहै उलटी बाट, भोग घरी २ करत हैं। एक दिन को जोग, हुयो हथनियां बिजोग, यार कीनो अति सोग, आंखां भरी भरी भरत हैं। बिणजारै खोदी खाड, अंदर पोल छाई आड, भूंटी हथनियां कूं चाड, भोग, भारी भारी धरत हैं। हथनियां कूं देख, हिरदै हाथी गयो बेक, भगियो आयो एकै बेग, सपरस करी करी परत हैं। हथनियां का रूप देख, हाथी गयो डूब, था वो कजली बन का भूप, भूखो मरी मरी मरत हैं। जाके पैर परिया फन्द, ऐसा जगत भया अंध, छाई आंखियां पैं धन्द, नहीं हरी हरी करत हैं। गज छोड्यो घरगाम, नहीं कुटम आयो काम, मावत बैठ लायो धाम, सो तो गली गली फिरत हैं। कैत गिरधरगणेश, यार भूंठा जगदेश, करलिया निरगुण भेस, नारी नारी बोह चिरत हैं। केहुं, कजली बन्न जामें मस्त हाथी फिरत हैं ॥ १ ॥

२ कवित्त चन्द्रमणि, दृष्टान्त भंवरे का, सुगन्धी का, घ्राण इन्द्री का विषय खंडन ॥

रांड की तो, जात पैं, हजार लात मारी हैं। ऊपर से रंग रूप, रीझ गये बेद भूप। चूंपकी चमेली या पैं भंवर गुलजारी हैं। मारता फणा कार मूरख पंख दोनो डार, नार की सुगंधी मानो बेली विष खारी हैं। पस मरे भंवर यार। झूट प्यारो करत प्यार, यार कूं पकर बेरी पैर मांय डारी हैं। दीनता सूं भयो स्वान। खोय दीनो सर्व मान, श्रान कूं गमाय नान, हिरदै यार धारी है। ऐसी देखो जक्त रीत। पईसे सूं कर्त प्रीत, जीत की तो बाजी वजीर प्यादी साथ हारी है। हार गये साधू सन्त। बचे नहिं कोई भेख पन्थ। दन्त कूं दबाय रांड मारी किलकारी हैं। जब दोन भये दानव देव। रांड की सब कर्त सेव। भेव कूं नहिं पाये देव। सो करता लाचारी हैं। रांड का मैं कया ख्याल। सुणले मूरख सबी हाल। चाल कूं तो छोड सन्त कोइ धूर यापे डारी हैं। कहत कवित गिरधरगणेश। रांड जीत हम हुये महेश, तब शेष के शिर बैठ ऊपर ज्ञान गादी ढारी हैं। रांड कों तो जात पैं हजार लात मारी हैं॥ २॥

३ कवित चंद्रमणि। पतंग दीपक का दृष्टान्त, चक्षुइंद्री का विषय खंडन ॥

दोस्ती में, दुक्ख यार। देख प्रीत कीजिये। पहली करता प्यार। पीछे दुःख पावे यार। रोस भरी देवे गार। पहली प्रेम क्यूं भीजिये। पतंग

कीनी प्रीत, दीपक देख। बिगड़ी नीत, जाय अंधा परिया भीत, रूप। साथ डोल सीजिये । ऐसी जक्त की है चाल, तामें धूर दीजे डाल। बेगो समझ लीजे हाल, काया छिनक छिनक छीजिये । तातेंहो निषकाम, एक अखंड भजले राम। सोहं ब्रह्म पावे धाम। काया सफल कर लीजिये । अब है तेरो वेर, मूरख करणा मत तूं देर। वेगा समझ दिल कूं फेर, प्याला प्रेम रस पीजिये । यार सब का एक, आ तूं समझ लीजे नेक, खोलो चश्म अंदर देख। वासूं भली भांत धीजिये । दूजो दोसती की लाग, लगी थोर मांहे आग। जल जाय बेगो भाग नहीं जक्त साथ खीजिये । सन्त दीनी सीख। थूकी दोस्ती को पीक। खेंचो जोरदार लीक। जोर खाय धक्का दीजिये । कहत गिरधरगणेश, कर लिया निरगुण भेश। कीना दोस्ती सूं धेस। ज्ञान खर्ग हात लीजिये । दोस्ती में दुक्ख यार। देख प्रीत कीजिये ॥ ३ ॥

४ कवित्त चंद्रमणि, दृष्टान्त हिरण रागणी को, श्रवण इंद्री को विषय खंडन ॥

जक्त झूंठा जाण यार खलक खरियां। जात है । आगे अब की बाट। नदी ओघट गैला घाट। बह रया दोनूं पाट, यार समझ नीकी बात है । तूं होय बैठो कुंवर। परिया भवसागर में भंवर, बेगो काड दिल की जवर। यार आई तोपें घात है । व्याधी कीनी राग, सुण हिरण ऊठ्यो जाग। दोर पशु आयो भाग, व्याधो मार लीनो हाथ है । कीन्हो रागणी को संग। हेरण खोय दीनो अंग। ऐसो जक्त है खिण भंग। दीसे ठाट स्वारथ साथ है । यां नहिं तेरो एख, समझ ज्ञान चक्षु देख, कुटम कर्ते तोसूं धेख, धिरकार न्यात जात है । सन्त को

ले ज्ञान, एक अखंड धर ले ध्यान। तेरी सुधर जावे श्यान। मिट जाय उत्पात हैं। भूल मति राम, नहीं कौडी लागे दाम। मिल जाय घट में श्याम। सासो सास सोहं साथ हैं। भूल यां सूं बीर। लागै काल जे में तीर। मारै काल बलो मीर, पकर जीव, सबी खात हैं। कहत गिरधरगणेश। काम कीना सब पेश। सिंवर सोहं रया शेष सुरतो वेद यूं गात हैं। जक्त झूंठा जाणा यार, खलक खरियां जात हैं॥ ५॥

५ कवित्त चन्द्रमणि। दृष्टान्त मीन और मांस का।

रसना इंद्रिय विषय खण्डन॥

खावणा, खराब खैन होय मरै मूरका। तोता मैना दोय। पसी खावणे में जोय। गज घमंड दीनो खोय। सिंह पींजर पड़्या सूरका। मीन खायो। मांस,जीभ सार फंस गइ धांस। मीन भूल गयो होस। जारी पकर किया चूरका। पसू भोग्यो विषय एक, जिके प्राण दिया देक। नर के पांच लागा लेक। स्वाद जैसे लड्डू बूरका। खायां बिगरै श्यान। विष खाया चढ़ता जान। गयो चोरासी की खान, नर नरग को मंजूर का। विष, दिया त्याग,जिके पुर्ष है बड़ भाग।रया ज्ञान ध्यान जाग। घट ब्रह्म खुलिया नूरका। वे हैं स्वामी सन्त, उलट पुग गया पन्त। ज्यांरा आद नहीं अन्त। परी ब्रह्म वे हजूर का। घट मठ मांयें रैह। स्वामी ओत पेत कैह। किया करम फल दैह। कथ आप और डूरका। कहत गिरधरगणेश। मेरा रूप सोहं शेष। जगत भूत का है भेस जगभ्रम विषय, कूप का। कवित कथा पांच, काडी मन मुरसद की बांच। पड जाय रै नहिं लांच। सिस समझ न्हांकी धूरका॥ खावणा खराब खैन होय मरे मूरका॥ ५॥

पैरी ३ नग १५ भरतरी सुलतानी रे सतसंग मंडन ॥

१ कुण्डलिया तिफूली ॥

मुलक बुखारे बादशा दिया तखत कूं त्याग। उजीण त्यागी भरतरी जाके जरा नहीं है राग॥ जरा नहीं है राग जोग की बांधी सेली। रथ घोडे गजराज पिङ्गला त्यागी हेली॥ कह गिरधरगणेश गूदड़ी सिर पर मेली॥ जिन लिया ठीकरा हाथ फकीरी चहुं दिस फैली॥ १

२ कुंण्डलिया गोरख उपदेश ॥

भली विचारी भरतरी ले गोरख का उपदेश। तिण ज्यूं त्यागा राज ने तैं करलिया भगवां भेस॥ २॥ छोड दो माया घर कूं। धृक्क धृक्क संसार भूलगया गोबिंद हर कूं॥ कह गिरधरगणेश भजन बिन नर है खरकू। इसी भरतरी समझ अगम के पौंचे घर कूं॥ २॥

३ कुण्डलिया सुलतानी बादशारो ॥

चेरी को चाबक लगो जगो जान सुलतान। रैत राज नहिं आपणा झूठ बडाई मान॥ २॥ तुरत तज मुफलस होई। इस कीचर सूं निकल बदन का दागा धोई॥ कह गिरधरगणेश भिस्त में निरभै सोई। इसो समझ सुलतान कालजे भीतर पोई॥ ३॥

४ कुंडलिया सुलतानी बादशा को ॥

ज्ञान गुदरिया ओड के तन तहमंग कूं मार। सांई मीन होय बोछरे ताकी मंडी न जल में धार॥ २॥ पोडते धीरज सिङ्का। वा

फुलवां की सेज हुरम त्यागे मुख किल्ला । कह गिरधरगणेश ज्ञान भूटो जप अल्ला । अनल हक्क का हरफ पडे सुलतान रसुल्ला ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया भरतरी सुलतानी रा संग का ॥

भूप भरतरी बादशा सुलतानी सुखमाल । केइ दिन भोमी वीछरे हुई मोच कया सुंण हाल ॥ २ ॥ फकीरी ऐसी होई । विना ज्ञान वैराग गृस्थ त्यागो मत कोई ॥ कह गिरधरगणेश वडी निरयै कर जोई । ऐसे मिले सो मित्र और जिंदगाणी खोई ॥ ५ ॥

पैरी ४ नग २० फकीरी का मंडन कुंडलिया तिफूली ॥

१ सोदे फरक फकीर है, नहिं प्रपंच की लाग । कनक कामणी तिरगा पै धरी ज्ञान की आग । धरी ज्ञान की आग अगम का गैला लीना । नित तिरपत निरद्वन्द सदा ब्रह्मानंद भीना ॥ कहै गिरधरगणेश सफल है जिन का जीना । वे फकीर साहब सन्त आतमा सब घट चीना ॥ १ ॥

२ कुंडलिया तिफूली फकीरी का ॥

फिकर फकीरां फाकिया फर्ज रया नहिं कोय । तन दिवलो तत्व तेल में सुर्त वत्ती ली जोय ॥ २ ॥ उड्या अज्ञान अंधेरा । सोहं सत परकाश खुल्या चित चसम चंदेरा ॥ कह गिरधरगणेश हुया उपराम धंधेरा । उमीर उटत नांय काल का कट्या फंदेरा ॥ २ ॥

३ कुंडलिया तिफूली फकीरी का ॥

फकीर फारम फाड़िया कर हिमाव अकसीर । काया कागद गार कै हुया पीर का पीर ॥२॥ मीर दोसत नहिं दूजा । वे उमीर अकसीर करै

सब उनकी पूजा ॥ कहै गिरधरगणेश बीज जगत नहिं भूंजा । सदा साहबी संग फकीरी मिश्री कुंजा ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया तिफूली फकीरी का ॥

फकीर फुलड़ा पैंपका ब्रह्म बाग के बीच । काया क्यारी कोरकैं दिया ज्ञाननीरकूं सींच ॥२॥ सुंगधी फैली वाकी । पैंप देख परसन्न हुवा नर करतां-इ झांकी ॥ कहै गिरधरगणेश छिब्ब कह सकै न वाकी । नहिं दृष्टांत जो लगै फकीरी पूरण पाकी ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया तिफूली फकीरी का ॥

फकम फका फकीर कर दिवी फकीरां सैन । सिस समज्या कोइ सूरमा हुई मोच्च कया सुण चैन ॥२॥ मुक्ख सूं कया न जावै । कहत कहत थक जाय कवी ब्रह्मादिक गावै । कहै गिरधरगणेश फकीरी मेहरम पावै । भाई करलो अपणो आप साफ होय हाथ मिलावै ॥ ५ ॥

पैरी ५ नग २५ कुंडलिया तिफूली साधू मत खंडन ॥

१ कुंडलिया छप्पय छंद ॥

साधू का मत एक देख दुनियां नहिं आवे । भया एक से दोय जिनै नहिं मूल ठगावे॥ पांच सात का झुंड बना रुजगार कमावे । वे हैं अंधे अज्ञान भजन सी वस्तु गमावे । कहै गिरधर गणेश कपट की हाट जमावे । मैं ममता भरपूर बस्तु सागे नहिं पावे ॥ १ ॥

२ कुंडलिया तिफूली ॥

दृढ़ आसन साधू सदा वे समय पाय बिचरंत । असाधू आशा जगत में नित कोरी किचरंत ॥ २ ॥ जाचते घर घर हटरी । अपणो तो खुद्या पाव बांधते सिर पर गठरी । कह गिरधरगणेश समझ सब खोई घटरी । किया दिगम्बर सांग भूल की बातां मटरी ॥ २ ॥

३ कुंडलिया तिफूली ॥

छापा तिलक जटा सिर मुंडन, धर लिया साधू सांग । करे कमाई गृस्थ में नर घर घर लावे मांग ॥ २ ॥ मुर्ख बोझा ले लदिया । जैसे धोबी घाट मैल लेजावत गदिया ॥ कह गिरधरगणेश भेक बो ऐसा बदिया । गुणी गुपत रह सन्त गरज़ नहिं एकहि फदिया ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया तिफूली ॥

गृस्थ कराका काडता, सो भगवां कर लिया भांड । खाय खाय माल मुफतरा मचिया जैसे दागल सांड ॥२॥ धढ की खाली मूंडे । तृपतो देखाय एंठ की कूंडी ढूंढे ॥ कह गिरधरगणेश झुंड चेलन का मूंडे । रह जंगल साधू सूर जक्त में दीसे भूंडे ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया तिफूली ॥

इस चाणक का चहरका कोइ खावेगा सूरा सनत । जिन कूं पार करूं भवसागर दिखाऊं दिल में पन्थ ॥२॥ भेक वस्ती वो राजा नित्त करे निरधार वजावे सनमुख बाजा ॥ कह गिरधरगणेश सरण सतगुरु की आजा । वस्तु देऊं अमोल मिले कोइ वरतन साजा ॥ ५ ॥

पैरी ६ नग ३० कुंडलिया तिफूली कनक कामणी खंडन ॥

१ कुंडलिया तिफूली ॥

कनक कामणी सङ्ग रमै सो नर मत के होया । सिंह सरूप कूं भूलके होय भेडर हाके रोया ॥ होय भेडर हाके रोया खोया होवत है भोगी। कनक कलंक कर दिया कामणी पूरा रोगी ॥ कह गिरधरगणेश गृस्थ चाहे होय जोगी । कनक कामणी सङ्ग समझ नर ऐसी होगी ॥ १ ॥

२ कुंडलिया तिफूली ॥

कनक कामणी दोय कूं गृस्थी राखै जोय । गृस्थ धरम की धारणा इन बिन नहिं कछु होय ॥ २ ॥ खोय दुरमत घर बिगरा । करम होया सब कहै कुटम बैरी होय सगरा ॥ कह गिरधरगणेश मच्या घर घर में झगरा । कनक कामणी बिना गृस्थ ठोकर ज्यूं डगरा ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया तिफूली ॥

कनक कामणी सन्त रख आसण लीना मांड । बिरगत बाना दीसता हम निगै करी जब ढांड ॥ २ ॥ भांड ज्यूं खिलवत करता । गृस्थी के घर जाय पेट इस बिध वो भरता ॥ कह गिरधरगणेश सन्त नहिं बाना धरता । है गृस्थी का गुलाम बिना करणी सैं मरता ॥ ३ ॥

४ कुण्डलिया तिफूली ॥

कनक कामणी दोय सूं तूं साधू रहिये दूर । रैण दिवस नहिं मिलसकै ऐसा समझो मूर ॥ २ ॥ कूर बोलो मत बैना । परबरती परपंच करो मत लैणा देणा ॥ कह गिरधरगणेश सन्त मानो ये कहणा । तो बन बस्ती के परे सर्व सोहं होय रहणा ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया तिफूली ॥

सन्त सीख कूं मानली सो नर होगया पार । यां बचनां सूं धेस है सो डूबा काली धार ॥ २ ॥ हार ज्यूं चल्या जुआरी । बिगर गई है ध्यान और की करत खुआरी ॥ कह गिरधरगणेश उलट नर फेर मुहारी । कनक कामणी काड ज्ञान झाडू दे बुहारी ॥ ५ ॥

पैरी ७ नग ३५ कपट भक्ति खंडन कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया तिफूली ॥

भक्त नहीं वो भांड है पूजा लेवे भेट । नाय ग्रस्ती के बारणे कर खिलवत भरते पेट ॥ कर खिलवत भरते पेट सिद्ध साधक ले सोभी । मुक्त मणी कूं वेच पईसा लेते लोभी ॥ कह गिरधरगणेस जगत् का है वो धोबी । प्रतिग्रह की पोट धरी अपणे सिर सोभी ॥ १ ॥

२ कुंडलिया तिफूली ॥

भक्ती करत बिन भाव सूं धर बुगले का सांग । आखां मीचे जगत सूं ऊंची राखे टांग ॥ २ ॥ संगत सागर की तीरा । मछली है पर नार आंख सूं भेगे बीरा ॥ कहै गिरधरगणेस चुगै नहिं सागरहीरा । चुगता मटी मलीच जगत में खाय भचीरा ॥ २ ॥

३ कुंडलिया तिफूली ॥

बाना धर लिया भक्त का भक्ती करता नांहि । जिन का जीना धृक है डूब मरो जल मांहि ॥ २ ॥ यार लज्जा नहिं आवै । भ-

गवत का होय भक्त जाचयो घर घर जावै ॥ कह गिरधरगणेस भजनं परभू का गावै । गजराज ज्ञान को बेच हाथ कवडी ले धावै ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया तिफूली ॥

इण भक्ती सूं आवसी धरमराय का दूत । बांध मस्क ले जावसी पड़ै पड़ा पड़ जूत ॥ २ ॥ भूत को जूणी आवै । भूकां मरतो यार नारदा जोवणा जावै ॥ कह गिरधरगनेस कपट सूं बो दुख पावै । या भक्ती करसी भृष्ट लख चौरासी में धावै ॥ ४ ॥

५ कुंडालिया तिफूली ॥

भक्ती कर लै भाव सूं प्रेम पियारो होय । भक्ती सूं मुक्ती मिलै कह समझाऊं तोय ॥ २ ॥ जोय लै महता नरसी । छप्पन क्रोर को भरमायरो मोहरां बरसी ॥ कह गिरधरगणेस बैठ घंटा भर करसी । तो क्रोड बिघन डल जाय काज सब दिल का सरसी ॥ ५ ॥

पैरी ८ नग १० प्रेमा भक्ति मंडन कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुण्डलिया तिफूली जवाब भगवत का ॥

भगवत् कहता भक्त सूं मुझ कूं भजता यार । मांगे सो वर देत हूं भवसिंधू कर दूं पार ॥ भवसिंधू कर दूं पार भक्त हो जावे मेरा । मैं उन का हो गया दोऊं जो मत है मेरा । कह गिरधरगणेस भक्त घर देता फेरा ॥ बिन मिलियां वे चैन मिल्या सूं सुख होय गैरा ॥१॥

२ कुण्डलिया तिफूली ॥

भगवत कहता भक्त घर रहता दिन और रात । खरा टैलवा

द्वार पैं जां जावै जहां साथ ॥ २ ॥ हाथ सस्तर ले चाहूं । कोई करै भक्त सूं द्रोह पटक गुरजन सूं मारूं ॥ कह गिरधरगणेस फेर नरगां में डारूं हूं भक्तां को भीर चढूं शत्रू पैं बहारूं ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया तिफूली ॥

चाये राजा रंक होय देव यच्च पुनि सुर । एक चक्र तैं मारता शीस अलग धर दूर ॥ २ ॥ हूर मिट जावे दिल की । बिगर जाय सब हाल सुरत दीखत है बिलकी ॥ कहै गिरधरगणेस उड़ो मुखरे की चिलकी । सहस हाथ सूं कोप कियो हरि देके किलकी ॥ ३ ॥

४ कुण्डलिया तिफूली ॥

भक्त मेरा भगवान है हूं भगतां को दास । हर कर हिरदै राख· तो भजतो सासो सास ॥ २ ॥ भगत कूं भूलूं कोकर । भूल्यां भूंडी होय माजनो जावे बोकर ॥ कह गिरधरगणेस चढ्यो भक्तो को सोकर । कहता भगवत आप लिख्यो गीता में जोकर ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया तिफूली ॥

भक्ती में वो विघ्न है कोई जय शिरला सूं होय । लाखां मांय है नहीं पुनि क्रोड़ां मध्ये जोय ॥ २ ॥ मिले कोई एक अनामी । जिन कूं परवा नाहिं हरी त्रिलोकी धामी ॥ कह गिरधरगणेश भणै हरि वे हैं स्वामी । मैं उन का शिष्य हुआ और माया का डामी ॥ ५ ॥

पैरी ९ नग ४५ द्रव्यमंडन कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुण्डलिया तिफूली कवड़ी को ॥

कवड़ी बिन कङ्गाल है नर बोलत नहिं कोय । जिन के कवड़ी

है नहीं देख बिकता हस्ती जोय ॥ बिकता हस्ती जोय । सो कवड़ी के मांहिं ॥ कवड़ी बिन बुद्धिहीन ठौर मिलती नहिं कांहीं । कह गिरधरगणेस मिले कवड़ो में सांई ॥ समझै नहीं तो यार लै जावे जमपुर तांई ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया तिफूली पईसे को ॥

पईसे जुग प्यारा भयाज्यां खारा भयाज पूत । मात पिता यूं कहत हैं तूं मेरो पूत कपूत ॥ २ ॥ खेलता पइसा बाजी । सब पइसे का दास समझ लो पिंडत काजी ॥ कह गिरधरगणेस सेठ पइसा है साजी । करो विवेकी छाया मिले न पैसे बिन भाजी ॥ ३ ॥

३ कुण्डलिया तिफूली रुपिया को ॥

रुपिया तूं है राम जी जगत भगत बस होय । जिन के रुपिया है नहीं जिन की बिगरी जोय ॥ २ ॥ मिनख मिनखां में नांहीं । सुन रुपिये की रीत प्रीत दुनियां के मांहीं । कह गिरधरगणेस भखै संतन के तांहीं । साधू होय रुपिया रखै तो ठौर मिलै सी नहीं कांहीं ॥ १ ॥

४ कुंडलिया तिफूली सन्त भजन द्रव्य को ॥

सन्तां रै रुपिया रामजी प्रेम परत टङ्क सार । ज्ञान मूस में गारणी सत सिक्के व्योपार ॥ २ ॥ द्रव्य ये खाय न खूटै । सब पइसा है पास नहीं कोइ चोर न लूटै । कह गिरधरगणेश डडावै भर भर मूटै । कुवेर का भंडार हाथ किस बिध अब टूटै ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया तिफूली ज्ञानलक्ष्मी को ॥

माया मरजी में खरी रहती दिन और रात। पाऊं हुकम हजूर का बोले ऐसी बात ॥ २ ॥ हात हाजर हूं साधू। मुझ पैं अज्ञा करो शरण तुम्हरी हूं माधू। कह गिरधरगणेश सन्त पैं चले न जादू। जिन माया ने बस करी बजे अनुभव का नादू ॥ ५ ॥

पैरी १० नग ५० ज्ञान चेतावणी मण्डन ॥

१ कुंडलिया तिफूली गृहस्थ का ॥

मात पिता परवार सुत सब मतलब का यार। अन्त समै तू जावसी ऐ आडी देसी कार ॥ ऐ आडी देसी कार बार जंगल के मांई। बांध पोटली खाक बहावे जल के तांई ॥ कह गिरधरगणेश सजन सिवरै नीं सांई। बिना भजन मर जाय तो ठौर मिलसी नहिं कांई ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया तिफूली संसार का ॥

मतलब करते मनुष सब मित्तर काज बिगार। मिलबे कूं चित ना चाहै हम परख लिया संसार ॥ २ ॥ बजे गुणी औगुण गारा। करैं मितसूं प्यार फेर लड़ता है खारा ॥ कहै गिरधरगणेश असल है कथन हमारा। मित्तर अपणा आप और का तो मूंडा बारा ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया तिफूली इष्ट का ॥

कृपा करत गोपालजी जब निरधंन करदेत। मोह माया दरयाव सूं तुरत काड कर लेत ॥ २ ॥ हरी के सिंवरण लागे। बिन माया पर-

वार माखियां उलटी भागी ॥ कह गिरधरगणेश मेहर बिरलां पैं होई। धन वाको दीदार माया छुवत नहिं कोई ॥ ३ ॥

४ कुण्डलिया तिफूली गुरुदेव का ॥

कृपा करी गुरुदेवजी मिटगया दिलका दोस । अहंकार कूं मारतां हुया हरीका जोस ॥ २ ॥ कोस पांचूं गुण तीनूं । सब घट लिया पहचान बजे अनुभव का बीनूं ॥ कहै गीरधरगणेश ब्रह्म हिरदे में चीनूं । लगी लगन इकतार मिटाया दिल का दीनूं ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया तिफूली अनुभव का ॥

हवा ती हरिनांव की अंदर चलता सास । पवन पाणी पथरया तीनूं हो ऊबा पास ॥ सखी सुंदर अस्थाना । रीझ मांज मोहताज उहै वां दे दे ताना ॥ कह गिरधरगणेश शौक हम करते छाना । परतख करता यार जिसी घर पड़तो छाना ॥ ५ ॥

पैरी ११ नग ५५ दृष्टान्त भारत संज्ञा अर्जुन मंडन ॥

१ कुंडलिया तिफूली दृष्टान्त भारत रो ॥

आख्यान केहुं आगलो कौरव पांडव दोय । और जमी को चालियो तूं जिनके जुध कूं जोय ॥ जिन के जुध कूं जोय दुशासन हो गया मोटा । पांडव पीरा सही राज बिन दीसत छोटा ॥ कह गिरधरगणेश भिर्‌या दल पांडव खोटा । कौरव मरे कुमौत समझ इस विध का ओटा ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया तिफूली कृष्ण का जवाब ॥

अरजुन सुण कहै कृष्ण जी इस विध लड़णा वीर । करणी कवाणी

हाथ ले अनुभव बावो तीर ॥ २ ॥ मीरमर जावे रण में । शूरवीर भगजाय भिले नहिं ससतर कर में ॥ कह गिरधरगणेश लरो अनुभव के घर में । भारत कितोक बात जीत जावो एकहि शर में ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया तिफूली शत्रु का ॥

शत्रु कूं मित्तर रखो भखो न दिलकी राग। वो दुश्मन दग्ध होय जावसी ज्यूं लगी सोर में आग॥ २ ॥ भाग कितनी भां जाई । पीठ पिछारी कुआ खिणीजे सन्मुख खाई ॥ कह गिरधरगणेश कृष्ण या जुगत बताई । अरजुन कहणा मान इसी विध लड़ना रे भाई ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया तिफूली बुराई का ॥

बुरा चाहे नर और का तो अपणा बुराज होय । बिना गुनै शूलो चढ़े उण दुसमण दुख नहिं कोय ॥ २ ॥ जोय ले घर में लेखो । जिन कूं नहिं आकीन हकीकत करके देखो ॥ कह गिरधरगणेश मूंड मीठो ले सेको । यह सतपुरुषां का वाक यार राखीजे एको ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया तिफूली शत्रुमिल सांसे का ॥

शत्रु मिल सांसो कियो के मेरो तो बिगर्यो नांय । तब सांईं सगती भेज दी खाय गई मम्माय ॥ २ ॥ आय भूमी के ऊपर अदीठ चक्कर चले दुशासन गिरगये भूपर ॥ कहे गिरधरगणेश बच्या अनुभव का नूपर । भारत भैरवी खाय हाथ खांडा ले खूपर ॥५॥

पैरी १२ नग ६० ज्ञानोपदेश मंडन ॥

१ कुंडलिया तिफूली निंदक का ॥

निंदक नरक निचोवता जिन का मोटा भाग । बलिहारी उस

निन्द की रींज मांज कर आग । रींज मांज कर आग राग की क-तरी चोटी । निन्दक नेहचे जीम दिवी निन्दा की रोटी ॥ कह गि-रधरगणेश बात करता है खोटी । विना लाय लग जाय मिले नहिं पाणी लोटी ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया तिफूली निंदक का ॥

निंदक नेहचा राखिये तेरा बिगरै हाल । जीभ कटै मोभी मरै बिना कजा खाय काल ॥ २ ॥ चाल ते ड्योडी खांदी । पेट पी-लिया रोग पीठके अदीठ चांदी ॥ कह गिरधरगणेश आंखियां होय जावे आंधी । ये निंदक का निरधार खैंचिया अंतर गांधी ॥१॥

३ कुण्डलिया तिफूली चुगल का ॥

चुगल भटकता चून बिन भूखां मरता होय । सुबै शाम अन ना मिले जिन कूं लग गइ दोय ॥२॥ सोय ऊठत यूं फिरता । चुगली खाय चंडाल पेट इस विध वो भरता ॥ कह गिरधरगणेश और की चुगली करता । जिस पर साहब को कोप बिना अन बसतर मरता ॥

४ कुण्डलिया तिफूली सांसै का ॥

देख संपदा और की मतकर सांसा यार । घर की पूंजी खोवसी परै गजब की मार ॥ २ ॥ मिले ना घर में रोटी बिया जारै को बैल होय सिर लदसी पोटी ॥ कह गिरधरगणेश बड़ो हरगत है मोटी । मतकर सांसा यार और के धन हुरी कोटी ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया तिफूली अहंकार का ॥

अहंकार क्यूं करत है नर थोड़ेसो दिनको बात । रावण के दश

सीस थे बीसूंही कटगये हात ॥ २ ॥ जात कुल कही न जाही । जु-रासन्ध शिशुपाल कंस की जमा गमाई ॥ कह गिरधरगणेश कृष्ण गीता यूं गाई । तेरी इच्छा है ज्यूं करो जैसी भुगतोला भाई ॥ ५ ॥

कुरीतिनिवारण पैरी १३ नग ६५ कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया दगाबाज का ॥

दगाबाज दंड भुगतसी हाथां कीनी हाण । गया डुबाणे और कूं आप डूबिया जाण ॥ आप डूबिया जाण ताण चल रहि उस तन में । मिरगी आय मरगया बासना रह गइ मन में ॥ कह गिरधरगणेश हुया मरकट रह बन में । दगा सगा नहि यार धूर दीजे इण धन में॥१॥

२ कुंडलिया तिफूली चोर का ॥

चोर चोरासी भुगतसी होय गुघ्घू बिचरै रात । दुखी होत दिन ऊगतां कागा चुण २ खात ॥ २ ॥ हाथ सूं करी कमाई । यां बन्ध मरै मलीच रतन सो जान गमाई ॥ कह गिरधरगणेश सजा जमराज ज-माई । तूं भूखोई भेमो पोड इसो मत करोरे कमाई ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया तिफूली जारपुरुष का ॥

सब नीचन तें नीच है जार पुरुष भर सूगड । जोवै नारदा नित नवा घर घर लीना ढूंड ॥ २ ॥ मूढ मर न्याव करावै । धरमराय के द्वार आग खंब बाथ भरावै ॥ कह गिरधरगणेश बांध जंजीर मरावै । जार पुरुष कूं पकड़ नरक के मांय गिरावै ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया तिफूली कृतघ्नी का ॥

कृतघ्नी होय कोडिया बिगड़ जाय सब डील । रुधिर राध

झरणा झरै होय होय फूटै खील ॥ २ ॥ चीस दे रोवत रोगी । कष्ट परया कहर दुखी होय काया भोगी ॥ कह गिरधरगणेश जीवता हो- गया सोगी । मुआं मिल्या है जनम सरप बिछुवा या बोगी ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया तिफूली धर्महार का ॥

धर्महार सो धाणा का जनम जनम में होय । परभू सें बेमुख भया धरम करम दिया खोय ॥ २ ॥ ख्याल रख कोरा परसी । ऐसी बिगरै यार लूण ज्यूं काया गरसी ॥ कह गिरधरगणेश साहब बारैला करसी । लख चोरासी मांय यार अंधा होय फिरसी ॥ ५ ॥

कुकर्म खंडन पैरी १४ नग ७० ॥

१ कुंडलिया तिफूली द्रोह क ॥

द्रोह करै नर और की सो डूबे काली धार । सिरड़ी होय कै बिचरसी झूठा करत विचार ॥ झूठा करत बिचार फार वस्तर होय नागा । फिरै स्वान ज्यूं यार टूक तांई घर घर भागा ॥ कह गिरध- रगणेश सबी धुरकारै आगा । लगी द्रोह की चोट मुआं फिर होसी कागा ॥ १ ॥

२ कुंडलिया तिफूली धोखावाज का ॥

धोखा दे धन हर लिया दिया कौरव कुल कूं खोय । तूं नर फूल्यो फिरत है पिण या बिध बीतै तोय ॥ २ ॥ जोय लै भारत सं- ग्या । करण दुशासन,आद मिलो नहिं अंग में अंग्या ॥ कह गिरधर- गणेश रुधिर सूं शरीर रंगिया । तेरी तो कितीक बात यार क्यूं फिरै तो फंगिया ॥ २ ॥

३ कुंडलिया तिफूली पाप उत्पत्ती का ॥

कहूं पाप की उत्पती झूंठ वचन सूं होय। चाहे गृस्थी साधू भको दे सब पूरव पुन खोय ॥ २ ॥ जोय ब्राह्मण की हत्या। झूट वचन सूं लगी निकल गई पिंड की सत्या ॥ कह गिरधरगणेश वचन मत बोलो मिथ्या। सांचा भाखो वैण सैण समझो नित नित्या ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया तिफूली मनसा पाप का ॥

मनसा पाप नर करत है जिन को सुण ले ताप। या संकलप सूली पैं चढ्यो डस गयो कालो साप ॥ २ ॥ सजा पाई है नामी। जिके जनमिया आय जगत में गधिया कामी। कह गिरधरगणेश घीसता भाटा भोमी। हुया पीठ पर रोग कागला खावत चामी ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया तिफूली स्वप्नभोग का ॥

शरीर सूतो भवन में मन भोगत है भोग। शरीर सुपरस ना कियो भुगते व्याधीरोग ॥२॥ जोग मन मोहन करता। हुया सच्चिदानंद फेर नहिं काया धरता ॥ कह गिरधरगणेश बिचरता मन वो फिरता। भुगते दुख त्रीताप जनम धर धर के मरता ॥ ४ ॥

पैरी १५ नग ७५ पण्डित काजी का वर्णन ॥

१ कुंडलिया तिफूली पंडित का ॥

पंडित पढ़े पुराण कूं षट शासतर वेद। तोता पढ़के बोलता समझ्या नहिं कछु भेद ॥ समझ्या नहिं कछु भेद खेद मिटती नहिं दिल को। काजी कुरान पढ़गया मारता आंछे किलकी ॥ कह गिरधरगणेश

ज्ञानकी है नहिं चिलकी। धनवारा होगया सुरत दीसंत है विलकी ॥ १॥

२ कुंडलिया तिफूली पंडित काजी का ॥

पंडित पिंड खोज्या नहीं मुल्लां मेहरम दिया खोया दोनूं वेद कुरान में रहे नींद भर सोय ॥ २ सभा कर ज्ञान सुणावे । है बन्ध्यो रा आप और का बंध छुडावे ॥ कह गिरधरगणेश दीनता भीक उगावे । तब लग है अज्ञान मर्म सच्चा नहिं पावे ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया काजी का ॥

काजी कलमा साथ पूकारै ऊंचा मुख कर जोय । कान फूट बोले भये खबर न पाई कोय ॥ २ ॥ कोन गत गूंगा होई । तब पावेगा निज सार देवै असार कूं खोई ॥ कह गिरधरगणेश निवेरा कर दो दोई । जल के मांहिं मीन मीन के मुखमें भोई ॥ ३ ॥

४ कुण्डलिया तिफूली पंडित का ॥

पुस्तक बांच पंडित भया जोग जुगत कर खेद । वेद बाच निरफल रया पाया नहिं कछु भेद ॥ २ ॥ भंवर होय भ्रमिया भारी । अरध उरधके मांय सूगंधी लेता खारी । कहगिरधरगणेश ज्ञान बिन बिगरी सारी ॥ कृपा करत करतार पढ़े चिन हुवे मुरारी ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया तिफूली पंडित काजी दोनों का ॥

तेरी मेरी लग रही पंडित काजी दोय । तेरी सें मेरी भई जब दीपक दिवला जोय ॥ २ ॥ सो किनकूं समझावे । गुरू शिष्य का भाव केवतां बश नहिं आवे ॥ कह गिरधरगणेश मिले गुरुगम पद पावे तब पंडित काजी एक भेद दृष्टी क्यूं लावे ॥ ५ ॥

पैरी १६ नग ८० कुण्डलिया तिफूली मुसलमीन का ॥

१ कुंडलिया निवांज का ॥

तन का तो तकिया किया मन मुरशद कूं जोय । अला नांव

उस्तावा लेके पैर हांत लिये धोय ॥ पैर हात लिये धोय निगम नीवाज गुजारी । नीचे शिर कूं झुका देख ली भिश्त खुदारी॥ कहगिरधरगणेश जान कूं तुरत सुधारी । हमही राम रहीम भये हैं पीर मदारी ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया जारत का ॥

जगिया सो जारत करैं जावै मक्के मीर । निवाज गुजारैं गम बिना खुद पीरन का पीर ॥ २ ॥ पैगम्बर पत्थर माना । वे मुसलमीन हैं नांय कपट का धर लिया बाना ॥ कह गिरधरगणेश पीर बसता है छाना । दम दम बोलै यार बोलावै सोहै खाना ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया साईं मिलाप का ॥

श्वासा में सांई मिलै मन सूं मोला होय । खोरी सूं खुदा भया तब सांसा रया न कोय ॥ २ ॥ कुराना कलमा वोई । मक्का मदीना पीर पैगम्बर उण बिन कोई ॥ कह गिरधरगणेश पढ़े हम कलमा दोई । कुल सूं कलमा नांय कलम सूं कुल सब होई ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया मस्तों का ॥

खुदा सूं जुदा भया जुदा सूं खुदा होय । मेहरम तज मुल्लां हुया दिया कुरान कलमा खोय॥ २ ॥ सतम गुजारो प्यारा । या मसीद मस्तां मांय इसी निश्चय कूं धारा ॥ कह गिरधरगणेश रसी बिन बांध्या भारा । खेलत ऊली तीर पहुंच गया पैली पारा ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया अनलहक का ॥

अला अला अलपच्च कहै जितने अला न होय । मोला मोला कहै मूढ वो ये लिखो न कलमा कोय ॥ २ ॥ जोय ले कुरान तुम्हारा । दिल में रख आकीन धारले हरफ हमारा ॥ कह गिरधरगणेश यार क्यूं खोत जमारा । कुरान कह सब फना पढ़े हम सबी समारा॥५॥

सिद्धान्तयोग ॥

कुंडलिया तिफूली पैरी ४ नग २०

पैरी १ नग ५ कुंडलिया तिफूली योगारंभ घड़ियावर का ॥

१ कुंडलिया प्रश्न का ॥

शिखर सरोवण सामने सात दीप नव खण्ड । तिरपोली टङ्कसार में घडिया है ब्रह्मण्ड ॥ घड़िया है ब्रह्मण्ड चालती सुलटी घंटा । नवसे है नव मांय किसी काल गिणती मिंटा ॥ कह गिरधरगणेश कहां पर बजता टंटा । तूं साधू सुरत लगाय सुया किया घर सें छंटा ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया उत्तर का ॥

मेरू शिखर के मोरचे मन पवना कूं रोक । तन में तार गुपत में गम है सुरत निरत पैं झोक ॥ २ ॥ चले उलटी घरियाना । सुगम सुई है दोय जोय जिन को हरियाना ॥ कह गिरधरगणेश कुलप कांटा फिरियांना बैठत ऊठत तां जांहो चाबी भरियाना ॥ ३ ॥

३ कुण्डलिया प्रश्न का ॥

बंक नाल की निसरणी चढणा उलटे पैर । पवना में पाणी भर्या जिन को निरखो लैर ॥ २ ॥ घरी का चक्कर फिरता । खीली खूणा चार चक्र देखत ही गिरता ॥ कह गिरधरगणेश सुया वो सब में फिरता । पिण तीनूं घंटा पहर बजाई सोही किरता ॥ ३ ॥

४ कुण्डलिया उत्तर का ॥

सांकर सार घड़ियावल टिरती तार नार को जोर । हिया हिरकणी चित को चक्कर देवो मिसतरी मोर ॥ २ ॥ रोक दे खीली खटको ।

तब चक्कर चूरण हो नहीं पावैगा खटको ॥ कह गिरधरगणेश डाबड़ी तोनूं पटको । ये यहियावर का तोड़ जोड़ दीनो हम चटको ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया योगभेद ॥

मूने सहर सुरंग लगाई इकीस गांठी तोर । नांव निसाण घुर रया गगन में सन्तां सुणियो सोर ॥ २ ॥ घड़ी का मेहरम पाया । तां ब्रह्मंड लाख किरोर अधर थिर थान जमाया ॥ कह गिरधरगणेश देखतां दृष्टि आया । हम चित की चाबी जरी नहीं रङ्ग रूपन पाया ॥ ५ ॥

पैरी २ नग १० कुण्डलिया तिफूली ज्ञान जुआ का ॥

१ कुंडलिया लंका दुवा का प्रश्न ॥

लंका को तो लोक है दुआ मूं दूजा होय । तीया में तिरभङ्ग पड़ी चौकै रया न कोय ॥ चोकै रया न कोय तोय हम पूछत साधू । हार जीत का दाव कोण मूं चल्या विवादू ॥ कह गिरधरगणेश खिलारी चारूंही आदू । लंका दुआ तिया चौक का चल रया जादू ॥१॥

२ कुण्डलिया उत्तर ॥

लङ्का तो निरलङ्क है जिस में कलङ्क नांय । दुआ तिया का ख्याल ये दोनू लङ्का मांय ॥ २ ॥ जीत और हार की बाजी । कर दिया विवेकी छाण समझलो पिण्डत काजी ॥ कह गिरधरगणेश चली लङ्कासूं बाजी । दुआ में तो दुरमत नांय तिया सो होगया पाजी ॥२॥

३ कुण्डलिया उत्तर ॥

दुआ दोपख मेटिया लङ्क लंप ले हाथ । दाव परा था द्रव्य का जिन को भरली बाथ ॥ २ ॥ दाव दुवे कूं सूझा । तब तिया खिलारो हार करै सब उन की पूजा ॥ कह गिरधरगणेश अरथ हम करदिया दूजा । तिया गया है हार भाड़ झोकत है भूंजा ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया उत्तर का ॥

तिया तन्त सब हारके होगया फक्कर भूप । और तिये पै खेलते सो डूबे अंधे कूप ॥ २ ॥ दाव की पर रहि आटी । घर का घर दिया खोय घीसते शिर पर माटी ॥ कह गिरधरगणेश कमर कोई बांधी काटी । वो सब धन लीया जीत अरथ हम लिखदिया पाटी ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया उत्तर का ॥

चोक का सब चानणा खेलत तीनूं वीर । तिया तन्त कूं समभिया मैं दुआ में पहुंचयां मीर ॥ २ ॥ मिले लंका के मांई । जब चोक तो चाहुं लूट भरा है पूरण साईं ॥ कह गिरधरगणेश भरम की काडी बांई । जुआ जीत हम यार भयो सन्तन के ताई ॥ ५ ॥

गूढार्थ दैरी १९ नग ९५ कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया प्रश्न का ॥

सन्तां साखो हूं पढूं पण्डित करो विचार । देस देखिया दृष्टि बिन जाने धर्म अचार ॥ जाने धर्म अचार ब्रह्म माया नहिं कहना । दिष्टा दरसण दोय जोय जिन का नहिं रहना ॥ कह गिरधरगणेश जहां नहिं लैना देना । उस नगरी का नांव निरप बतला दो बैना ॥ १ ॥

२ कुंडलिया उत्तर का ॥

नांव बतायां नांवगा घर का खोवे आप । वाणी सूं नहिं कह सकै कहतां नें आवे ब्याप ॥ २ ॥ बाफ पावे नहिं तन में । सुध बुध भूला यार फिरै बस्ती या बन में ॥ कह गिरधरगणेश सन्त समझया कोई मन में । फेर कोई समझै यार दिवाना होय जाय छिन में ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया ज्ञान गैले का।

दिर्श दिवाना दीसता वे सब सूं स्याणा जोय। वे स्याणा संसार में सब हुरमत दी खोय ॥ २ ॥ सो तनहार जमारा। बिगरी वातां करै मिले, कोइ यार हमारा ॥ कह गिरधरगणेश आग धर भाग सम्हारा। जिन मांय बस्तू मिली सोई धन धाम तुम्हरा ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया अद्वैत का ॥

तुम हम कहणा दिर्श में वां कहणा नहिं होय। सुन में सृष्टी भासती रया समाधी सोय ॥ २ ॥ तोय समझाऊं उण घर में। ब्रह्मा विष्णु महेश शेष देवत तां भरमें ॥ कह गिरधरगणेश देस नहिं अम्बर धर में। वां कोइ पूगे सन्त सृष्टि यां भासत पर में ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया ब्रह्म दरयाव का ॥

पांख बिना उड़ जावता वे हंसा हर हीर। उण सागर कूं देखिया कोइ बिरलाही साधू वीर ॥ २॥ तीर लेवत सुख चैना। वे अनुभव को आनन्द नहीं कह सक्ती वैना ॥ कह गिरधरगणेश सन्त समझ्या कोइ सैना। सैनी में सोगया सोई घट पाया मैना ॥ ५ ॥

तिरिया तेरह पती की पैरी २० नग १०० कुंडलिया तिफूली॥

१ कुण्डलिया तिरिया का ॥

तिरिया तेरह बर किया खेलै एकण साथ। सतीं बाजै संसार में सब सूं घालै बाथ ॥ सब सूं घालै बाथ हाथ सूं खाया फेरै। पुत्र प्रगटिया एक पिता वाजत नहिं तेरै ॥ कह गिरधरगणेश वड़ा अचरज है मेरे। स्त्री सुत जणा दिया पुरुष सूतो नहीं भेरै ॥ १ ॥

२ कुंडलिया पुत्र का ॥

पुत्र झूलता पालणा मा का मांटी होय। तेरहीं तात जणा विया एकण समचै जोय ॥ २ ॥ मोय बतला दे नांवा। रूप है कै अरूप कौण अस्थाना गांवा ॥ कह गिरधरगणेश अर्थ कर दीजे सांवा। आगी नैरी बाठ बता दे कितनी भांवा ॥ २ ॥

३ कुंडलिया तेरह तीन का ॥

तीनां सूं तेरह हुया तेरह सूं है तीन। सांचो मेटो सत गुरू इणमें कुण है बीन ॥ २ ॥ भाग कर दीजो बांटो। सांचो भूंठो होय निरूपण कर कै छांटो ॥ कह गिरधरगणेश अर्थ अनुभव सूं घोटो। भूंटो करो विचार तो ज्ञान को मारूं सोटो ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया तेरह का विचार का ॥

तेरहि तन्त विचारिया कहो अपणी २ बात। एकण समचै दौरियें किण को लारै साथ ॥ २ ॥ सजन सुणतांईं भागे। एक रया उण ठौर सोईं नर सब के आगे ॥ कह गिरधरगणेश उलटिया एकण सागे ॥ ऊर दूर सिरदार सोईं नर है बड भागे ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया ब्रह्मज्ञान का ॥

बड भागी हाकम हुवा दे बारह कूं दण्ड। स्त्री सुत छुडायकै लाया अपणे खंड ॥ २ ॥ ख्याल कथिया हूं पूरा। इनको करै विचार सोईं साधू है सूरा ॥ कह गिरधरगणेश अरथ कर देवो मूरा ॥ स्त्री सुत सिरदार बारह चाकर कुण कूरा ॥ ५ ॥

निर्वाणनिसरणी

टेर । निरवाण निसरणी लागीरे सन्तां चडतांई दुरमत भागी ॥ राग देस तालखैरवे ॥ टेर ॥

पैरी १ नग ५ मंगलाचार । कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुण्डलिया ॥

पच वार गोपाल का दिन चाहे सो होय । श्रीकृष्ण अरपण करै तो विघन न व्यापै कोय ॥ विघन न व्यापै कोय भावना चहिये सैंटी। छाली जायके सिंह भगावै मारै भैंटी ॥ कह गिरधरगणेश काल की पकरै चोटी । मदद खरा गोपाल बात कछु नहिं है मोटी ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया इष्ट का ॥

इष्ट आसरै ऊबरूं गोकुल के गोपाल । गिरधारण गिरराज है सुर के सिर भोपाल ॥ २ ॥ लाल की लीला भारी । सोलह सहंस हजार खेलती सङ्ग व्रजनारी ॥ कह गिरधरगणेश श्याम सूं सुधरी सारी । बलवंत पकड़ी बांह काल की कुस्ती मारी ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया मानसी सेवा का ॥

सेवा मेरे श्याम की सिंवरण की सोनान । चित का चन्दन चरचिया प्रेम पुष्प परमान ॥ २ ॥ ज्ञान का गहणा सोवै । श्रोरा पिताम्बर पहर लहर मूं सामा जोवै ॥ कह गिरधरगणेश छिव्व देखत मनमोवै ॥ करुना भोग कपूर आरती हित चित जोवै ॥ ३ ॥

४ कुंडालिया भक्त करुणा ॥

टेर फेर लिखदेत हैं सुणा गोवरधन नाथ । लक्ष्मी त्याग पधारिये

नहिं तर हुरमत जात ॥ २ ॥ घात भगतन सिर आई । ऊठ चलो वृं-जराज देर करणा मत भाई ॥ कह गिरधरगणेश कुरम सब के दुख-दाई । लाज काज तां जाय पईसा जां है पाई ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया इष्ट मिलाप का ॥

मिले मुझे गोपालजी ग्वाल बाल ले साथ । मोर मुकट कट का-छनी मुख मुरली ले हाथ ॥ २ ॥ हरी जी दीनी झांकी । भेद बतायो श्याम समज के कविता भाकी ॥ कह गिरधरगणेश भरम की तोड़ी नाकी । अनुभव को आनन्द हुयो छंद गावत साकी ॥ ५ ॥

मंगलाचार पैरी २ नर्ग १० कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया गुरुप्रार्थना का ॥

गुरू ज्ञान की बीनंती दंडवत और परणाम । भूलो भंवर संसार में बता दियो निज नाम ॥ २ ॥ बतां दियो निज नाम काम औरन सूं नांही । जग की तोड़ी रीत प्रीत परमानन्द मांही ॥ कह गिरधरगणेश मिले जिन घट में सांई । गुरुदेवन के देव भरम की काडी बांई ॥ १॥

२ कुण्डलिया गनपती का ॥

गनपत बेग मनावियै मंगलमुखो कर काज । गुण विद्या बखसो धणी रखी भगत की लाज ॥ २ ॥ कांज करणे को अरजी । रिध सिध लावो संग भगत की सारो गरजी ॥ कह गिरधरगणेश गन्न की पूरण मरजी । हाजर खरा हजूर हांण मिट गइ सब हरजी ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया पांचों देव का ॥

सारदा सायक भलो पायक भलो गणेश । विष्णू की किरपा भली ब्रह्मा पूज महेश ॥ २ ॥ पांच पृथवी का देवा । सात दीप नव खंड

करै तन मन सूं सेवा ॥ कह गिरधरगणेश सुणो देवन का देवा । मन-सा पूजन मान चढ़ाया मन का मेवा ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया सारदा जी का ॥

सारदा सिंवरूं सती मती सुधारो मात। बिघन हरो आनन्द करो ले भैरव कूं साथ ॥ २ ॥ हाथ भगतन सिर ऊपर । भान कोट पर-कास बजे तेरे पग में नूपर ॥ कह गिरधरगणेश बैठ जिह्वा के ऊपर । कथूं वेद का भेद फेर नहिं आऊं भूपर ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया सच्चिदानन्द का ॥

अजर अमर असंग आतमा गुरु गोविन्द गोपाल । दरसण दिर्ष दयाल का घट मठ सिर भोपाल ॥ २ ॥ निरन्तर आप अनामी । नि-राकार निरद्वन्द श्याम ऐसे निष्कामी ॥ कह गिरधरगणेश सकल घट अंतरजामी । या निस्सरणी निरबाण सन्त चढ़तां होय स्वामी ॥ ५ ॥

कुटम खंडन पैरी ३ नग १५ कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया ज्ञानचेतावणी ॥

पाव पलक का नहीं भरोसा करै काल की बात । अंजन आंख फरूकतां बात नहीं कछु हात ॥ बात नहीं कछु हात तात और मात मुरब्बी। जाल बिछाई जान पटकिया पेच उरब्बी ॥ कह गिरधरगणेश त्याग दे तुरत कुरब्बी । ठग नगरी में ठग ठगत है यार मुरब्बी ॥ १ ॥

२ कुंडलिया माता का ॥

माता कहै मेरा पूत सपूता पल पल निरखूं ध्यान । प्यारी कहै प्रीतम है मेरा प्रेम परस्ती जान ॥ २ ॥ पिता कहै पुत्र हमारा । भाई बंध कहै बीर कुटम सब लेत सहारा ॥ कहै गिरधरगणेश सबी ठग ठगत जमारा । करते मीठी बात नहीं कोइ यार तुम्हारा ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया ज्ञानचेतावणी ॥

तूं पंछी परदेश को आयो मूम कमाय । ऊजर देस में उतर्यो भाई जासी गांठ गमाय ॥ २ ॥ केई जनमां सूं आयो । पूरव पुन कूं बांध खांध धर गठरी लायो ॥ कह गिरधरगणेश भेस धर ठगको जायो । पूछ सकै ना कोय सन्त उपाव बतायो ॥ ३ ॥

४ कुण्डलिया ज्ञानचेतावणी ॥

बाहर भेस भोगी भया भीतर जोगी होय । न्यात जात गृह आपणो पूछ सकै ना कोय ॥ २ ॥ दीसती तुरत ठगाई । यां पइसे की प्रीत रीत सूं चली सगाई ॥ कह गिरधरगणेश नींद या सन्त जगाई । गृह घाट सूं निकल जान कूं तुरत भगाई ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया ज्ञानचेतावणी ॥

जग धोखे सब पच मरे पंडित काजी पीर । मोह जाल फंस खोविया जनम अमोलक हीर ॥ २ ॥ भगे कोई साधू सूरा । जग में ज्वाला लगी रया सो हो गया चूरा ॥ कह गिरधरगणेश हुया बैरागी पूरा । बन घर भासत नांय जगत दीसत सब डूरा ॥ ५ ॥

ज्ञानचेतावणी पैरी ४ नग २० कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया ज्ञानविचार का ॥

भवसागर में भंवर है आशा तृषणा धार । दादा बाबा बह गया कीना नांय बिचार ॥ २ ॥ कीनां नांय बिचार मनोरथ मनसा भारी । पर्या गुलेचा खाय जगत में नर और नारी ॥ कह गिरधरगणेश देख औरन की त्यारी । अन्त समै परवार कुटम सुत बदली प्यारी ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया अन्तसमय का ॥

अन्त समय कूं देख के डरियो है दिल मांय । करणा हो कर

लीजिये फिर अवसर है कांय ॥ २ ॥ लख चोरासी धावै । पूरब पुन परताब मनुष मिनखा देह पावै ॥ कह गिरधरगणेश यार छिन छिन में जावै । करिये बेग उपाव सन्त सुरतो यूं गावै ॥ २ ॥

३ कुंडलिया देखत भूली का ॥

देखत भूली ख्याल है खान पान के साथ । बाल अवस्था ज्वान की तिरिया घाले बाथ ॥ २ ॥ ज्ञात मोह निद्रा छाई । कुटम सुत परवार प्यार सूं करत बड़ाई ॥ कह गिरधरगणेश मूरख नर करत कमाई । धरम राय के द्वार आप की बात गमाई ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया ज्ञानचेतावणी का ॥

चेत सकै तो चेतले चित चाहे तो धार । बांध मुस्क ले जावसी और गुर्जन की मार ॥२ ॥ मानजा मूरख मन में । तूं भज लीजे भगवान सुख पावै गा तन में ॥ कह गिरधरगणेश ऋषी मूनी जन बन में । हरी तणे परताप गरजता सिंह ज्यूं रन में ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया उमर व्यतीत का ॥

ऊमर बीती बात में रात पड़ी जग मांय । जक्त जीव सूते सबी सन्त जागते तांय ॥ २ ॥ तांत मकड़ी ज्यूं लागी । गुरु शब्द सुणतांई नींद परले की जागी ॥ कह गिरधरगणेश भरम की भूखज भागी । जब तिरपत होगया भया उस पद का पागी ॥ ५ ॥

गृहस्थखंडन पैसी ५ नग २५ कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया गृहस्थ का ॥

गृहस्थ ग्रास करलेत है दन्त डाड बिन खाय । गृहस्थ ज्ञान कर ऊबरै जिनका चल्या उपाय ॥ २ ॥ जिन का चल्या उपाय जक्त में है नहिं

मेरा । मैं काऊ का नांय सबी सूं रहता न्यारा ॥ कह गिरधरगणेश भया सन्तन का चेरा । जग सुपने कूं समझ सन्त पैं सिर कूं गेरा ॥ १ ॥

२ कुंडलिया पिता का ॥

पिता परम शत्रू भया अपणा हाल पढ़ाय । जग आसा मन ईरखा सुख दुख पूटे चढ़ाय ॥ २ ॥ साह रंग साही करता । परवरती परपंच पढ़ा धोखा दे मरता ॥ कह गिरधरगणेश परया सुत सठ वो सड़ता । पतङ्ग दीपक देख जाय नर उडके पड़ता ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया माता का ॥

माता मोबी जाया पुत्र कूं सिरी साथ करदेत । भंवर बैल भूमी भया लख चोरासी खेत ॥ २ ॥ खांध गृह गाडी जोती । रैण दिवस लियां फिरै तांई घर तिरिया रोती ॥ कह गिरधरगणेश उडी मुखरै की पोती । इस मण्डप मतारी पांच और सब कुतिया होती ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया तिरिया का ॥

तिरिया तन्त सब खैंचिया रग रग नाडी सोद । नरक निसाणी दीसती मन में खावै मोद ॥ २ ॥ बन्दगी करती पूरी । मतलब की मनवार बात करती है कूरी ॥ कह गिरधरगणेश रांड पै लगा दे तूली । या चोरासी लेजाय चडावै सांसै सूली ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया पुत्र का ॥

पुत्र प्रगटिया कूख में घर घर मंगलाचार । सपूत में सुख मानिया कपूत देसी गार ॥ २ ॥ यार चाहूं दुखदाई । स्त्री पुत्र अरु पिता समझ ले चोथो माई ॥ कह गिरधरगणेश मेरे कुण करत कमाई । धनदारा सुत छाड भजन की मिसल जमाई ॥ ५ ॥

काया खंडन पैरी ६ नग ३० कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया काया कुत्ती का दृष्टान्त ॥

काया है तू कूतरी खावत भूखी होय । चार पहर चोहटै चरी धाप धूप रहिसोय ॥२॥ धाप धूप रहि सोय सवेरे ऊठत रीतो । पेट पकड़ियां फिरै करै दुनियां संग पीतो ॥ कह गिरधरगणेश तेरी धापत नहिं नीतो । तू व्यभिचारण रांड तुझे कोई साधू जीतो ॥ १ ॥

२ कुंडलिया गार की गोर का दृष्टान्त ॥

काया खान कलेश की मुख सूं कही न जाय । ऊपर लाली झलकती गौर श्याम तहताय ॥ २ ॥ गार गोरी सिणगारी । भीतर मटी मलीच मांस मूतर की त्यारी ॥ कह गिरधरगणेश मूरख नर करता यारी । साधू सागे होय रांड ने ठोकर मारी ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया व्यभिचारिणी स्त्री का दृष्टान्त ॥

काया असतरी कर्म की छोड़्यो प्रीतम साथ । विषय बासना वास ते जग हट वारे जात ॥ २ ॥ हात आया नहिं कोई । जद क्रोड़ लाख बुध करी बैठ करमां ने रोई ॥ कह गिरधरगणेश सती कोइ विरली होई । काया कर्कशा मनुष राख जिंदगानी खोई ॥ ३ ॥

४ कुण्डलिया विषबेलरी का दृष्टान्त ॥

काया कंटक बेलरी भरम वृच्छ लपटाय । विषय भोग गुच्छे लगे प्रेम पत्र डपटाय ॥ २ ॥ देखे भंवरा उड आया । भंवर करत गुंजार बैठ विषयन फल खाया ॥ कह गिरधरगणेश मुरख भंवरा दुख पाया । विष की वेली बैठ लच्च चौरासी धाया ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया काया कर्म विवाद का ॥

काया कर्म विवाद में लागी खैंचा ताण । बडा बडी का मोद में आखर होसी हाण ॥ २ ॥ जाण दोनूं कूं त्यागी । काया करम का ख्याल देख मैं भया वैरागी । कह गिरधरगणेश लगन परभू सूं लागी। पूरब पुन परताप भली सत संगत जागी ॥ ५ ॥

ज्ञान इंद्रियां खण्डन पैरी ७नग ३५ कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुण्डलिया रसना इंद्रिय का ॥

रसना रसीली चाटणी चाट्यो जुग संसार । स्वरग मृत्यु पाताल कूं दे विषयनमें डार ॥ २ ॥ दे विषयनमें डार हार सब हाणी कीनी । करवा भावे नांय मुरब्बे रस में भीनी ॥ कह गिरधरगणेश यार साधू बस कीनी । जिह्वा इंद्रिय जीत हात चखू नें लीनी ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया नेत्र इंद्रिय का ॥

चखू तूं चंचल घणी निरखे नारी रूप । त्याग क्रिया कूरूप का पड़त विषय भय कूप ॥ २ ॥ रूप सूं होती हाणी । भुगते दुख संताप नहीं कह सकती बांणी ॥ कह गिरधरगणेश मरज कोइ साधू जाणी । चखू इन्द्रिय चूर त्वचा चमड़ी नें तांणी ॥ २ ॥

३ कुंडलिया त्वचा इंद्रिय का ॥

त्वचा तुरत सपरस करें सूती सेज संवार । प्रीतम कूं प्यारी मिली समझ्यो नांय गंवार ॥ २ ॥ गले में घाली बाथां । महा नीच अज्ञान विषय की करता बातां ॥ कह गिरधरगणेश करम फोड़त है हातां । साधू सपरस त्याग घाया पै मारी लातां ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया घ्राण इंद्रिय का ॥

घ्राण सुगंधी सूंघता अतर चंपा फूल। दुरगंध सूं दूरा रवै देखत उपजै सूल ॥ २ ॥ भूल पटकी है भारी। पच रयो जुग संसार सुगंधी ले नर नारी ॥ कह गिरधरगणेश घ्राण इन्द्रिय कूं मारी। प्राण-वायु कूं रोक श्रोत्र इन्द्रिय को त्यारी ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया श्रवण इंद्रिय का ॥

सरवण सांसा ऊपजै सुणत शब्द ले कांन। आछी बात सुहावती नहिं तर बिगरै ध्यान ॥ २ ॥ हुया शोभा सुण मोटा। कु शोभा में कलङ्क परा है घर में टोटा ॥ कह गिरधरगणेश दोही पैं मारा सोटा। विषय पांच कूं जीत ज्ञान का कसा लंगोटा ॥ ५ ॥

कर्म इंद्रिय का खंडन पैरी ८ नग १० कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया बाक इंद्रिय क ॥

वाक इन्द्री बकतो घणी झूंठी साची बात। पर निन्दा पर ईरखा घाले शबद को घात ॥२ ॥ घाले शबद को घात हाथसूं हरकत करतो। हरी भजन कूं त्याग भाग दुनियां सङ्ग लरतो ॥ कह गिरधरगणेश देर नहिं अब तूं मरतो। बाक इन्द्री को बांक काड कर इन्द्री परतो ॥१ ॥

२ कुण्डलिया कर इंद्रिय का ॥

कर इन्द्रिय कुबदण घणी खटपट करंत व्योहार। लेणा देणा जगत का लेना हाथ संवार ॥ २ ॥ भोग बिषयन की भाजी। हरफ हाथ सूं करम करत सब पंडित काजी ॥ कह गिरधरगणेश हाथ सूं हारो बाजी। कर इन्द्रो कूं कांट पैर इंद्री आय बाजी ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया पैर इंद्री का ॥

पैर इन्द्री भर पांवडा मन चाये जां जात । देव दर्श आटी परै माया मद के साथ ॥२॥ रात दिन संग में जावै । पेट वास्तै फिरै यार काया दुख पावै ॥ कह गिरधरगणेश पैर थक थक वां जावै । पैर इन्द्री कूं पार गुदा इन्द्री पैं धावै ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया गुदा इन्द्री का ॥

इन्द्री गुदा मल त्यागती पेटपाखाना जाय । नरककुंड संग खेलता आखर होसी छाय ॥ २ ॥ जाया पटकी है भाई । चतुराई कां रही मलामत काया पाई ॥ कह गिरधरगणेश नीच नीचन की नाई । गुदा गली कूं भार उपस्थ इन्द्री पैं आई ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया उपस्थ इंद्री का ॥

उपस्थ इन्द्री ऊपजै बड़ा भयानक वीर । काम क्रोध मद लोभ मोह पांचों ही मारै तीर ॥ २ ॥ हीर हाथन सूं खोवै । सन्त सूरमा लरै कचा वैरागी रोवै ॥ कह गिरधरगणेश ज्ञान ससतर ले पोवै । दश इन्द्री कूं मार ज्ञान दीपक ले जोवै ॥ ५ ॥

अवस्था का खंडन पैरी ९ नग ४५ कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया बाल अवस्था का ॥

बाल अवस्था बाल को अत्यंत दुख हो जाय । छिनक २ में रोवता भूख प्यास कछु खाय ॥ भूख प्यास कछु खाय लार सेडे को साती । चंचल वो थिर नांय शिखा दीपक ज्यूं बाती ॥ कह गिरधरगणेश कहां तक बांचूं पाती । बाल अवस्था गई जवानी चड के आती ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया जवान अवस्था का ॥

जवान अवस्था जूंभता मद मच्छर जूंजार । विषय भोग में रत हुआ जैसे फिरत मंजार ॥ २ ॥ मोद हिरदै नहिं मावे । दोसत राव कंगाल अंवर कछु निजर न आवे ॥ कह गिरधरगणेश जवानी ज्वाला तावै । चार दिना में चलो बुडापे बो दुख पावे ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया वृद्ध अवस्था का ॥

वृद्ध अवस्था बालमा थके पैर शिर हात । बिछी खटोली पेर बिच कोइ नहीं सुणता बात ॥ २ ॥ बात दिल में उपजावे । अंदर बाहर अंध भया काया दुख पावै ॥ कह गिरधरगणेश कुटुम देवै सो खावे । वृद्ध अवस्था बिगर लखचोरासी धावे ॥ ३ ॥

४ कुण्डलिया तीनों अवस्थाओं का ॥

बाल जवानी वृद्ध ये तीनों ही दुख की खान । आधी व्याधी तपत है रैन दिवस ले जान ॥ २ ॥ मोह की चढ़ी कढ़ाई । सजन सीजता जाय पूत फिर करत बड़ाई ॥ कह गिरधरगणेश अवस्था तीन गढ़ाई । तत्व ज्ञान कूं समझ संत कोइ करत चढ़ाई ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया अन्तःकरण का ॥

चढ़िया नाम निशान ले मन बुद चित अहंकार । भुजंग चार विष सूं भऱ्या मारत बड़ी फुंकार ॥ २ ॥ सिस मिन्तर ले साचा । करणी कांकरी मार बस कर लीन्हा बाचा ॥ कह गिरधरगणेश भगे बैरागी काचा । साचा साधू होय नहीं तो जन्मे पाछा ॥ ५ ॥

अन्तःकरण खंडन पैरी १० नग ५० कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया मन का ॥

हे मन मूरख वावला कह समझाऊं तोय । सिमरण में बिवरण

करे निपट निरलजो होय ॥ निपट निरलजो होय काग कुत्ते ज्यों डोलै । दुर दुर दुरकारा खाय टेक रख अपनी बोले ॥ कह गिरधर-गणेश सजा देऊं अणमोले । ज्यों लोहा घणतार, मारकांटीतनतोले॥१॥

२ कुण्डलिया रीस का ॥

रीस मार रसाण करी हम जतणा जरी मिलाय । काया तन कंचन किया दिया चक्कर ज्ञान हिलाय ॥ २॥ द्रव्य भर लीन्हा कोटी । कोई जाचक जाचे आय मोक्ष की देता रोटी ॥ कह गिरधरगणेश संत काया ने घोटी । जिन के भई रसाण और होते सब खोटी ॥ २॥

३ कुण्डलिया आसा तृष्णा का ॥

आसा तृष्णा सर्पणी संत मोर होय खाय । सत संगत के वृक्ष पै करें किलोलें आय ॥ २ ॥ हर्फ जोरते है हर सें । शब्द बूंद फूंवार प्रेम की धारा बरसे ॥ कह गिरधरगणेश अमर फल खावत कर सें । अमरापुर में बास नहीं कारज या घर सें ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया लोभ मोह का ॥

लोभ मोह मलीच हैं काम क्रोध चंडार । गुमान गर्व चौका दियो तू सुण ले धर्म अचार ॥ २ ॥ ध्यान की पहरी धोती । अनभव को उपदेश सुणाई मन कूं पोथी ॥ कह गिरधरगणेश जागती हिरदे जोती । साधू सरवर तीर हंस होय चुगता मोती ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया अहंकार का ॥

अहंकार कूं हनन किया है बिरला संत हजूर । चमकत दम दम बदन पैं बरसत निरगुण नूर ॥२॥ मूर मैरम सब लीन्हो । चौरासी को जीव जिन्होंने ईश्वर कीन्हो ॥ कह गिरधरगणेश रह्यो आतमरंग भीनो । सो साधू परवाण जगत में जिन को चीनो ॥ ५ ॥

काया मंडन वैरी ११ नग ५५ कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया काया कटोरे का ॥

काया कटोरा कनक का अमृत पीवत संत । अमर लोक कूं जावया तो ले सत सङ्गत का पंथ ॥ ले सत सङ्गत का पंथ धार खांडे की बहया । काजल के घर मांहि ऊजला कपड़ा रहया ॥ कह गिरधरगणेश मान जा मूरख कहया । काया कलम कूं भेज चुका चौरासी देया॥१॥

२ कुंडलिया काया कुन्नण का ॥

काया सङ्ग कुन्नण भया उतरे सन्त अनेक । तिन काया कां उतरया संतां समझो नेक ॥ २ ॥ देखता नित उठ काया तो रती फर्क है नांय । मुगत मैरम पद पाया ॥ कह गिरधरगणेश भेद काया का भाया । तूं शिष उतार धर सीस गुरु तत्र खोल बताया ॥ २ ॥

३ कुंडलिया काया कोटड़ी का ॥

काया कंकर धन कोटडो सरवण सुणले हाल । सुर्ग मृत्यु पताल का धन दोसत नहीं माल ॥ २ ॥ मुख सूं कहा न जावे । सत सङ्गत परताप समझ अनभव सूं आवे । कह गिरधरगणेश थाग कांया का लावे । वे जीतां ही मरजाय मोक्ष मैरम सब पावे ॥ ३ ॥

४ कुण्डलिया काम धेनु कल्पवृक्ष काया का ॥

कामधेनु काया कलप दूहत अमृत धार । बैराग ज्ञान विचार ले विवेक हांचल चार ॥ २ ॥ सार हृदय में धारे । सन्त सूरमा होय काल की कुस्ती मारे ॥ कह गिरधरगणेश सजे वे सततर सारे । कामधेनु कलवृक्ष करत भवसिंधू पारे ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया कलप वृच्छ काया का ॥

काया तू कल वृच्छ है मन चाहे फल देत । अर्थ धर्म अरु काम मोच्छ ये जिज्ञासू सब लेत ॥ २ ॥ वृच्छ की बैठा छाया । सब ही कामना पूरण करी तू छिन में काया ॥ कह गिरधरगणेश तेरे घर में सुख पाया । जब निरभय होगया मिटा चौरासी दाया ॥ ५ ॥

भक्ती मंडन पैरी १२ नग ६० कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया भगती भवन का ॥

भगती या भोमी भली महलायत की नीव । वो मुकान नहीं गिर सकै ज्यूं गांव पिछाड़ी सीव ॥ गांव पिछाडी सीव भगती सूं मुगती पावे । इस विन और उपाय यार सबही थक जावे ॥ कह गिरधरगणेश मेरे भगती मन भावे । इनसे मेरी नमो संत सुरती यों गावे ॥ १ ॥

२ कुंडलिया प्रेमा भगती का ॥

भगती भगत बिचारता प्रेम पियारा होय । गद् गद् कंठ धारा ज्यों धस के सुध बुध रहै न कोय ॥ २ ॥ मतङ्ग मतवारा डोले खावे पीवे नांय । कांई ना अंतस खोले ॥ कह गिरधरगणेश हरी तब तकड़ी तोले । भगती सूं भगवान मिले मालक अणमोले ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया भ्रम भंजन भगती का ॥

भगती भ्रम कूं भांगती भगत भगती में होय । तो भवसागर का भय मिटे सांसा रहै न कोय ॥ २ ॥ भगत भगती रंग भीना । मोरध्वज सिर काट पुतर का हाता दीन्हा ॥ कह गिरधरगनेश सत कोरां का लीन्हा । सूरवीर सिर गेर लरत, तब कारज कीन्हा ॥ ३ ॥

४ कुंण्डलिया भगती पुत्र का ॥

भगती के दोय पुत्र हैं बैराग ज्ञान दोय बीर । चौदह लोक कूं चूरिया मार शब्द का तीर ॥ २ ॥ भीर भगती है माई । द्वारपाल है तीन रखे सो मुक्ती पाई ॥ कह गिरधरगणेश और जुगती नहीं भाई । इन बिन साधू पीर मार जूतन की खाई ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया भगती भाव का ॥

भगती मेरे भाव सूं आई दिल के देश । जगत जाल कूं काट के काम किया सब पेश ॥ २ ॥ शेष में रही न बाकी । भगती भगवती रूप दृश की मारी फाकी ॥ कह गिरधरगणेश वेद भगती ने भाखी । भगती भगवती रूप करत है आतम साखी ॥ ५ ॥

दुख मंडन पैरी १३ नग ६५ कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया सुख का ॥

सुख आयां सूली मिले दुख सूं दुरमत जाय । को साधू किनकूं रखे दीजे अर्थ बताय ॥२॥ दीजे अर्थ बताय भला किणसें कर होई । परमार्थ घर स्वार्थ सुधरीया चहिये दोई ॥ कह गिरधरगणेश गिनत बैठा दो कोई । सो मेरे संत सुजान और जिंदगानी खोई ॥ १ ॥

२ कुंडलिया सुख का ॥

सूल भई सुख ऊपजा दीसत दुरमत नांय । परमारथ घर ऊबरी आपो आप के मांय ॥ २ ॥ मोहनी सूरत वाकी । जल थल मांही एक देख वो देवत साकी ॥ कह गिरधरगणेश वेद सुरती यों भाकी । संतां करो हिसाब जोड़ दे तोड़ो बाकी ॥ २ ॥

३ कुंडलिया दुख दीनता का ॥

दया करी दुख दीनता कंथ कंगाली साथ । जग जूना हीसाब था समझ लिवी एक बात ॥ २ ॥ खात सुख के संग जूता । बलिहारी दुख देव जगाया मुरदा सूता ॥ कह गिरधरगणेश दुखी होय हर कूं जोता । सुख में सूतो यार सोहं पद दुख से होता ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया दीनता का ॥

दीनता दुरमत हरी जग हटवारे जात । दया करी दिल ऊपरे कीन्हा हरजी साथ ॥ २ ॥ मात की मरजी मोटी । कर दिया शिष्य कूं सेर काल की पकड़ी चोटी ॥ कह गिरधरगणेश दीनता दीन्ही रोटी । तिलोकी को राज काज कर घर कूं लोटी ॥ ४ ॥

५ छप्पाई छंद कंगाली का ॥

कंगाली सूं कंत मिले मैरम सुखदाई । तजी कंगाली यार सोई नर नरगां जाई ॥ २ ॥ मेरी करुणा कंत कंगाली को सुण पाई । वो अपनो बिंरद बिचार सजन सूरत दिखलाई ॥ कह गिरधरगणेश मुगत को तूं है माई । लछमी तजी कंगाल कुंमी रही नहीं काई ॥ ५ ॥

ज्ञान बैराग मंडन पैरी १४ नग ७० कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुण्डलिया ज्ञानका ॥

ज्ञान तू गोबिन्द है, गुण विद्या के ईश । दया करी दिल ऊपरे पूरण बिस्वा बीस ॥ पूरण बिस्वा बीस ज्ञानसूं गोबिन्द होता । ज्ञान बिना सुण यार फिरै चौरासी रोता ॥ कह गिरधरगणेश उतम मिनखा देह खोता । जिन के हिरदे ज्ञान सोई ईश्वर है पोता ॥ १ ॥

२ कुण्डलिया बैराग का ॥

बैराग तू भगवन्त है सब की काडो राग । पांच पचीसो मारतां भई स्वरूप की जाग ॥ २ ॥ बाघ गरजत है बन में । श्यार गया है भाग समझ लो काया रन में ॥ कह गिरधरगणेश विषय भावत नहीं मन में । वैराग तू भगवन्त राग काढ़ो एक छिन में ॥ २ ॥

३ कुडणलिया शील वर्त्त का ॥

शील तू सरदार है देवत दानव सिर मोर । शील सिंगार दिया है शिष्य कूं नहीं कोई भूषण और ॥ २ ॥ लछमी गवरां चावे । मानकं मोती त्याग शील सब के मन भावे ॥ कह गिरधरगणेश वेद सुरती यों गावे । शील सजे सिणगार संत मुक्ती पद पावे ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया संतोष का ॥

संतोष सालग राम है जहां व्याधी रहो न कोय । सब इच्छा पूरण भई रह्या समाधी सोय ॥ २ ॥ प्रेम सुख लेवत साधू । तृष्णा तपती मिटी शेष में वोहीज माधू ॥ कह गिरधरगणेश जगतका जहां नहीं जादू । माया ने बश करी बजै अनभव का नादू ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया धर्मदया का ॥

धर्म दया आरजवा धीरज बिवेक विश्नू होय । तो नीवरतो निर्वाण में सांसा रवै न कोय ॥ २ ॥ फतह कर दीन्हा डंका । परबरती परपंच भगाया साधू बङ्का ॥ कह गिरधरगणेश नहीं दुनियां का शंका । चढिया नाम निशान छिनक में लूटो लङ्का ॥ ५ ॥

सत सङ्गत पैरी मंडन १५ नग ७५ कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया सत संगत का ॥

सत संगत सरवर्या कियां लाभ पिछाणे हाथा । पाप पुण्य सुभ असुभ है जिनकी पड़ती जाया ॥ जिनकी पड़ती जाया जगत में लीन अलीना । सत संगत परताप त्यागता तुरत मलीना ॥ कह गिरधरगणेश पकड़ता वस्तु भलीना । वा संगत परवाण नहीं कलेश कलीना ॥१॥

२ कुण्डलिया सत संगत का ॥

सत संगत सब कहत है सुण संगत का सार । परनिन्दा परईर्षा तजिये झूंठ बिचार ॥ २ ॥ धर्म नीती ले गाड़ी । मैं तैं बड़ी बलाय पकड़ दुनियां में छाडी ॥ कह गिरधरगणेश ज्ञान टाटी दे आडी । सा संगत परवाण पकर पर वरतो काडी ॥ २ ॥

३ कुंडलिया सत संगत का ॥

सत संगत सरवर भरया आनंद अमृत नीर । कोई बिरला नर परसिया जिनकी मिट गई पीर ॥ २ ॥ हीर हाथन सूं परखे । वे जंवरी हैं संत देख जिज्ञासू हरखे ॥ कह गिरधरगणेश काल की छाती दर के । जिसने संगत करी हुया दुनियां के खरके ॥ ३ ॥

४ कुण्डलिया सत संगत का ॥

सत संगत कूं सोधतां मिले संत निष्फंद । बैराग त्याग तीक्ष्ण अती रहत सदा निरबंध ॥२॥ द्वन्द शिष्य को वे हरता । महावाक उपदेश दया कर शिष्य कूं करता ॥ कह गिरधरगणेश समझ हिरदे में धरता । ये जिज्ञासू का धर्म नहीं विषयन में पड़ता ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया सत संगत का ॥

सूरबीर सत सङ्ग में ज्ञान धनुष ले हात । पांच तीन गुण पे लि-

या पचीस घाली घात ॥ २ ॥ घुरै अनुभव का बाजा । और असुर दल मार हुया काया का राजा ॥ कह गिरधरगणेश क्रिया सत सङ्गत काजा । निष्कण्टक भया राज, नहीं कुल जग की लाजा ॥ ५ ॥

संत लक्षण मंडन पैरी १६ नग ८० कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुंडलियां ज्ञानी संत का ॥

संत संग जब कीजिये इतने लक्षण होय । उदासीन जगमांय ने प्रथम नहीं है मोय ॥ परथम नहीं है मोह सो नहीं जाचण जावे । अनइच्छा सूं आवे पदारथ भोजन पावे ॥ कह गिरधरगणेश गरम ठंडा नहीं चावे । सबही स्वाद है एक देख जिम्या यों खावे ॥ १ ॥

२ कुंडलिया ज्ञानी संत का ॥

निराकार निर्द्वन्द है असंग जन्मे नांय । अचल अगोचर गम नहीं पुराण वेद के मांय ॥ २ ॥ सब ही में पूरण पूरा । तिण ब्रह्मा सूं आद चमकता दम दम नूरा ॥ कह गिरधरगणेश सोई नर पण्डित सूरा । अखण्ड है निरभाण दृश का देवत मूरा ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया ज्ञानी सन्त का ॥

वे साधू अदृश्य हैं अमल अमोलक सन्त । नित सत चित आनन्द हैं वे अलख खलक का कन्त ॥ २ ॥ निरंतर अंतरजामी । दिष्टा दरशन दृश्य तीन का कहिये स्वामी ॥ कह गिरधरगणेश कामना नहीं है कामी । विषय भोग परपंच शेष में नहीं है नामी ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया ज्ञानी सन्त का ॥

हूं तू शब्द से होत है दृश दुविद्या जोय । जाती वर्णाश्रम जग में सब जीवन कूं होय ॥ २ ॥ स्थूल सूक्ष्म का कहना । कारण को-

टड़ी मांय सबी जीवन का रहना ॥ कह गिरधरगणेश थके तुरिया में बैना । आतम अपणा आप जहां नहीं लेणा न देना ॥ ४ ॥

५ कुण्डलिया ज्ञानी सन्त का ॥

ऐसे सन्त की सङ्गती जिज्ञासू कूं श्वेत । नीर खीर दृष्टान्त ज्यूं मिले जोत में जोत ॥ २ ॥ शिष्य सुद चातक होई । तो शब्द बूंद फुंवार बचन हिरदे में पोई ॥ कह गिरधरगणेश मुमुक्षू है निज वोई । ऐसो सङ्गत करे रोग व्यापत नहीं कोई ॥ ५ ॥

शिष्य पैरी मंडन १७ नग ८५ कुंडलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया शिष्य सुधभाव का ॥

संसारी सुद्ध भाव सूं मिलिये सन्त सुजान । पैंड पैंड अश्वमेध यज्ञ चाहे कोट गऊ दे दान ॥ कोट गऊ दे दान ज्ञान हिरदें परकाशे । मैं तैं उठै दोय आप कूं आप ही भासै ॥ कह गिरधरगणेश समझ सन्तन की आसे । तो पौ बारा पच्चीस चले चौपड़ के पासे ॥१॥

२ कुण्डलिया शिष्य भाव का ॥

साधू सागे जोय के गुरु शब्द ले कान । पारस लोह कंचन करै गुरु कर ले आप समान ॥ २ ॥ शिष्य शुभ लच्चण होई । तो ज्ञान गुटकिया पाय रोग राखे नहीं कोई ॥ कह गिरधरगणेश मुमुक्षू है निज वोई । गुरु वैद का बचन धारता हिरदे सोई ॥ २ ॥

३ कुण्डलिया शिष्य भेट का ॥

तन मन धन जो हाथ में सरणा भेट गुरु देव । परकम्मा डंडोत है करूं चरण की सेव ॥ २ ॥ शिष्य साधू सूं कहता । हूं कां सूं आया कौन कहो रे गुरु वेद के वेता ॥ कह गिरधरगणेश ब्रह्म तूं त्याग अनीता । ये महावाक उपदेश कृष्ण गाई यों गीता ॥ ३ ॥

४ कुंडलिया शिष्य प्रश्न का ॥

अनीत सत जाणू नहीं कहत गुरु निज भेद । जाग्रत स्वप्न दोय अवस्था जिन में पावै खेद ॥ २ ॥ शिषोपती में नहीं कोई । तुरिया है निरबंध शिष्य तेरा स्वरूप सोई ॥ कह गिरधरगणेश समझ अनुभव सूं होई । तू परो ब्रह्म परवाण और भासे नहीं कोई ॥ ४ ॥

५ कुंडलिया शिष्य बिचार का ॥

वचन सुणत गुरु देव का, शिष्य समझो सब नेक । आसण मार अनुभव करी लिवी अवस्था देक ॥ २ ॥ दोय में दृश्य जमाया । शि-षोपती के मांय जगत का बीज गमाया ॥ कह गिरधरगणेश तन्त तुरिया में पाया । शिष्य स्वरूप कूं समझ गुरु ने सीस निवाया ॥ ५ ॥

गुरु उपदेश पैरी मंडन १८ नग १० कुण्डलिया तिफूली ॥

१ कुंडलिया शिष्य बीन्ती का ॥

शिष्य बीनती करत हैं गुरु मुझ कूं भेद बताय । चार अवस्था अर्थ कूं भिन भिन देओ जताय ॥ भिन भिन देओ जताय मेरे हिरदे के मांही । है मिथ्या अज्ञान भणूं गुरु जिस के तांईं ॥ कह गिरधरगणेश शान्ती है नहीं कांईं । आप मिले गुरुदेव ज्ञान समझा दो सांईं ॥१॥

२ कुण्डलिया गुरू उपदेश का ॥

शिष्य जाग्रत अवस्था जगत में सूनी करत भकार । दिष्टा दरशन रूप होय भोगत विषय विकार ॥ २ ॥ बासना रही है बाकी । सूक्ष्म होत शरीर अवस्था सुपने जाकी ॥ कह गिरधरगणेश दृश्य की दोनूं नाकी । जिण मांय भरमत जीव शिष्य सुण तन मन भाकी ॥२